ह रसालंकारबोधि... ...टीका
... स्वरूपदासजीने संवत् १९ ... में चै-
... शुक्ल ११ के दिन रचिके तयार करी फिर यह ग्रंथ संव-
त् १९०९ सन् १८५२ के सालमें इंदोर छापखानेमें छापागा
या अब संवत् १९३७ मार्गशीर्ष शुक्ल ९ भृगुवारके दि
न कवि रमणविहारीने भागीरथात्मज हरिप्रसाद गौड़
ब्राह्मणकी प्रार्थनासे इसपर छंद रसालंकार प्रकाशि... ...
नाम टीका रचिके तयार करी है.

अथ रसालंकारबोधिनी पांडवयशेंदु-चंद्रिका प्रारंभः

श्रीगणेशायनमः ॥ श्लोक ॥ गुणालंकारिणौवीरौ धनुस्तो-त्रविधारिणौ ॥ भूभारहारिणौ वंदे नर नारायणावुभौ ॥ १ ॥ ॥दोहा॥ ॥ ध्यान कीरतन बंदना त्रिविधमंगलाचर्न ॥ प्रथमअ-नुष्टुपबीचसोई भयेत्रिधासुभकर्न ॥२॥ नमोअनंतब्रह्मांडके सुरभूपनके भूप ॥ पांडवयशेंदुचंद्रिका बरनत दासस्वरूप ॥ ३॥

ग्रंथकर्ता ग्रंथके निर्विघ्नताके वास्ते ग्रंथादि देवताके ध्यान कीर्तन श्री वं-दनरूप मंगलाचरण करते हैं: गुणालंकारिणौ इस श्लोक करिके गुण जो ध-नुषकीपणच श्री अलंकारकरिके युक्त अथवा गुणोंकोभी अलंकृत करने वाले श्री धनुष तथा तोत्रको धारण करेहुये जैसेकि धनुषको अर्जुन श्री तोत्र कहते हैं घोडाके हांकनेका कोडा यानें चाबुक उसको श्रीकृष्ण धारण किये हैं. श्री भूभार यानें पृथिवीके भारके हरनेवाले ऐसे श्रीकृष्ण श्री अर्जुनरूप नरना-रायणकी मै वंदना करता हों ॥१॥ ध्यान कीर्तन श्री वंदना तीन प्रकारका मंगला चरण है सो प्रथमके अनुष्टुप् छंदमें तीनो प्रकार कहे जैसेकी रूपवर्णनसें ध्यान श्री पृथ्वीके भारहरणमें कीर्तन श्री वंदे ऐसा कहनेमें वंदना ॥२॥ अब परमा-त्माको फिर प्रणाम करिके ग्रंथका नाम प्रगट करते हैं कि अनेक ब्रह्मांडके नायकोंके नायक उनको नमस्कार करिके में स्वरूपदास पांडवयशेंदु चंद्रिका नाम ग्रंथ व-र्णन करताहों. तहां पांडवनकी विजयरूप जो यश सो तो चंद्र भयो श्री चं-द्रिका यानें प्रकाश इसमें यह है कि स्वामीने सेवकको बडाई दी स्वामी श्रीकृ-ष्ण श्री सेवक अर्जुन सो अर्जुनका सारथीपना करिके उनकी जीत कराई यही प्रकाश है ॥ ३॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

स्वामीकेपीछेरहैं आदिहोयउच्चार ॥ नरनारायणशब्दकूं दास स्वरूप विचार ॥ ४ ॥ ॥घनाक्षरी॥ ॥ गरलतें भीमकेसुज्वालाहूते पांचहूके द्रौपदीकेसभाओ बिराटबनतीनचार ॥ किरीटिके अच्छरके श्रापतें युधिष्ठिरकूं मारबेकूं मरिबेको उदे भये असिधार ॥ दुरवासा श्रापवेकूं आयो ताकूं आदेदके श्रूपदास केते कहे एक छंदमें प्रकार ॥ तेई मेरे ग्रंथ आदि मंगलउदय करो एते ठां अमंगलकूं मंगल करनहार ॥ ५ ॥ ॥कवित्त॥ ॥ पोढे परिजंक परके सब किरीटीजूकी जंघा परहैके पांय द्रौपदीकी गोदमें ॥ त्यूंही पद अर्जुनके सत्यभाम रुक्मिणीके अंकबीच धरेतीनू पलोटे विनोदमें ॥ अंतहपुरचारिनके देखत निमग्नभये राजसूमैनैनसीनं आनंदकेहौदमें ॥ ज्यों निरंतराईदास स्वामीकी स्वरूपदासत्यूंहोप्यासमेरी चारो पाय ध्यानमोदमें ॥ ६ ॥ गुणिगुण १ अंशीअंश २ विकारी विकारभाव ३ कारण अरुकाज ४ जातिव्यक्ति ५ वषाणेहैं ॥ सेवक औ सेव्य ६ उपचार ७ स्तुति ८ साहशता ९ उपमापरायण ऐतीनपद आनेहैं ॥ नोविकल्पता कोजीवईसमें अद्वैतवादी करेंहैं अभाव तत्ववेता लोक जानेहैं ॥ वासुदेव अर्जुनमें घटेहैं रु घटे नांहि ऐसो ज्ञान भक्तिलीयेश्रूपदास मानेहैं ॥ ७ ॥ ॥ दंपतिपरिहास मंगलाचर्न ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ विष्णु कहै रमा तेरे पिताकी त्रिया जो गंगा शिवने छिनायलीनी ताको बैर काल्यो ॥ रमा कहै जारत त्रिलोक जैसो दीनो बिख आपतें छिप्यो हैका विख्यात विश्वमें भयो ॥

स्वरूपदासजी इस पांचमे कवितमें यह प्रार्थना करते हैं कि जैसे भीमको विते औ अग्निते पांचोंको इत्यादिक ठौर रक्षा करिके मंगल करते भये तेई भगवान् मेरे या ग्रंथके आदिमें मंगल प्रकास करौ ॥ ५ ॥

आपकोजरायो पुत्र कामसौंअनंगनामताकोंचिह्नहाथली येपूजतनयोनयो ॥ ऐसोपरिहास कियोदंपतिस्वरूपदासमं गलकीरासिध्यानहदैंचित्रव्हैगयो ॥८॥ ॥दोहा॥ ॥हरि- हरसततमगुणमई चहियेगोररुस्याम ॥ अन्योंअन्यकेध्यान तें भयेविलोमनमाम॥९॥ ॥कवित्त॥ ॥धनंजय १ विजय २ श्वेतवाहन ३ किरीटी ४ जिष्णु ५ अर्जुन ६ बि भत्सु ७ सव्यसाची ८ नामगाहिये ॥ फालगुन ९ कृष्णा १० कृष्णसखा ११ नर १२ गुडाकेश १३ वासवी १४ संगीतवे- त्ता १५ विश्वजेत्ता १६ कहिये ॥ कौंतेय १७ गांडीवधारी १८ कपिध्वज १९ अभैकारी और कालखंजारी २० उच्चारकियाच हिये ॥ छत्रीकों जरूर और कोऊको स्वरूपदासबीसनामजपे तेत्रिवर्गसद्यलहिये ॥१०॥

विष्णु सत्वगुणमय गौरवर्ण चाहिये औ शिव तमोगुणमय श्याम चाहिये. परंतु परस्पर ध्यान करिके विष्णु श्याम औ शिव गोरे होते भये उनको मैं नमस्कार करताहौं ॥९॥ ये २० नाम अर्जुनको तौ अ- भ्यासमये स्मरणसे फलजरूरही देइंगे परंतु हर केई वक्तेभी अ- र्थ धर्म कामके देनेवाले हैं ॥१०॥
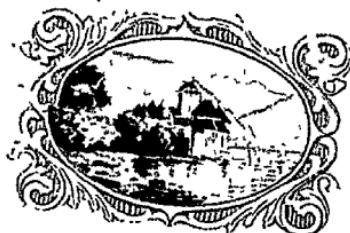
कीर्ति १ लज्जा २ शांति ३ बुद्धि ४ प्रज्ञा ५ धृती ६ आस्ति
कता ७ समता ८ अरुदमता ९ तैंतमता विनाशी है ॥ सुध
राई १० गिरा ११ क्षमा १२ धीरता १३ उदारताई १४ विद्या
१५ उपकारताई १६ विश्वमें विकासी है ॥ व्यासमुखप्राची दि
सासज्जनकुमुदवृंदरूपदास बुद्धिसोचकोरनी हुलासी है ॥
भीमानुजनकुलअजतासमें उदै इंदु षोडसकलाकीताकी चंद्रि
काप्रकासी है ॥ ११ ॥ मंगलाचर्नकिमर्थ ॥ आदि १ सभा २ आ
रन्य ३ विराट ४ औ उद्योग ५ पर्व भीस्म ६ औ द्रोण ७ क
र्ण ८ शल्य ९ पर्व कहिये ॥ सुषोप्तिक १० त्रिया ११ शांति
१२ अनुशिष्या १३ अश्वमेध १४ व्यासाश्रम १५ मुसल
१६ विचार करि गहियें ॥ महाप्रस्थ १७ लेके स्वर्गआरोह-
ण १८ आदि दैके अनुक्रमहीतें पर्व अष्टादश लहियें ॥
तिनकों संक्षेपचहै वरन्यो स्वरूपदास किरीटी के सारथी स
हायनें कर हियें ॥ १२ ॥ ॥ किंप्रयोजनं ॥ सवेय्या ॥
॥ पांवछतें करिगो नहरी दिस फेरऐ पांव चलें न चलें ॥ जीभछ
तेगुनियें हरिकोजस फेरयें जीभहलें न हलें ॥ नैंनछते लखिरूप
विराटको फेरयेनैंन खिलें न खिलें ॥ औ तछतें हरिकीरतिकूं
सुनि फेरयें आन मिलें न मिलें ॥ १३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
लाभजीवकारुजसको पुनि परमारथ सांच ॥ विघ्रसांत-

इस ग्रंथका नाम पांडवयशेंदुचंद्रिका धर्यो तहां पांडवके यशको चं-
द्ररूप कह्यो तामें सोरह कला चाहिये तहां ये कीर्ति लज्जा आदिक
सोरह कला वर्णन करीं ॥ ११ ॥ मंगलाचरण किसवास्ते करते हैं सो क
हते हैं कि आदिपर्व इत्यादि अठारह पर्व भारतकी इसग्रंथमें संक्षेपतासे
वर्णन करने चाहता हों तहां जैसे अर्जुनके सारथी होके उनकी सहाय करी
थी वैसेही मेरी हू करीं ॥ १२ ॥

परलोककी सिद्ध प्रयोजन पांच ॥१४॥ मेरे पांच हुंहै मेरी जी
वका हरि हरिदास कीर्तन ग्रंथ किये जस भी है पढेगे जिनको
बुद्धि सुकर्म प्राप्ति प्रमार्थ ग्रंथविषे विघ्नसांति परलोकसिद्धि है
हो श्रीहरिको हरिदासनकों मिश्रित यस साकलो नसरकंजनि
साचंद्रन्यायेन ॥१५॥ ॥अष्टादसपर्वशुचिपत्र प्रथम-
आदिपर्वशुचि॥ ॥कवित्त॥ ॥जन्मेजयसर्पसत्रययाती
भरत जन्मअंसाअवतर्नसरुप्र सिक्षाअनुमानिये ॥ लाखाग्र
हे बहुत्योंहिडंब ओबकासुरको द्रौपदीस्वयंवर ओराधाबेध
जानिये ॥राज्यअर्धलाभ यौनास वर्षद्वादसको अर्जुनकूं सुभद्रा
दितियालाभगानिये ॥खांडुदहिकंबुअखैतून धनुस भाला भ
आदिपर्वशुचिपत्रनीकेके पिछानिये ॥१६॥ ॥दोहा॥ ॥मुं
निअयेन द्रग बामगति अंकलिखहु अध्याय ॥ वेदं वसु ग्रह
फिर वसु श्लोक अनुष्टुप न्याय ॥१७॥ ॥सभाशुचि॥ ॥
कवित्त॥ ॥नारदनें देवनकीसभा बहुधासी कही पांडुकों सं
देस मुनिराजसूयकरिवो ॥चारोदिगविजैचारोंभ्रातननें माग
धकोंभीमतें विनाश शिसुपालहुकोमरिवो ॥सभाबीचव्हैवो अ
पमानत्यूंसुयोधनकोमच्छरतालिये पिता मातुलतेंलरिवो ॥र-
च्योद्यूतखिच्योचीर ससुरनेंदीनोवर फेर द्यूततेराअब्द बनकोवि
चरिवो ॥१८॥ ॥दोहा॥ ॥वसु मुंनि अध्यायहे सभाप-
र्वमेंजान ॥चंद्र मही सर अयेन लखि श्लोक प्रमान हिमा
न ॥१९॥ ॥वनशुचि॥ ॥कवित्त॥ ॥भास्कर तें

१ इहां अष्टादशपर्वकी शूचनिका लिखते हैं तहां आदिपर्वमें २२७ अध्याय औ ८९८४ श्लोक हैं.

२ सभापर्वमें ७८ अध्याय औ २५११ श्लोक हैं.

अरैपात्र प्रापत प्रथम भयो कृष्णाको मिलापइतिहास नृपनलकौ ॥ जिष्णुतपअरुलाभकपद निखादजुधनाकगौमरंभाश्रापनासदैत्यदलकौ ॥ घोषयात्रामोरवबंधुद्रौपदीहरनतामेंजन्मअष्टकैयोदुष्टजेद्रथविकलकौ ॥ रामकथातीर्थाटन कर्णजन्मअरनीतेचारुबंधुमृत्युयक्षजोगपानजलकौ ॥२०॥ ॥ दोहा॥ ॥ रत्नउर्मी द्रंग वन परब कही व्यास अध्याय ॥ वेदराग रितु विधु मही संख्या श्लोक जिताय ॥२१॥ ॥ विराटरुचि ॥ ॥कवित्त॥ ॥ कंकभटबल्लभजी ब्रहन्नटा ग्रंथकार तंत्रीपाल सैरंध्री आकृती छिपाइवो ॥ द्विजके मोहोत्सवमेंहतनजीमूतमल्लद्रौपदीकेकाजबंसकीचकखपायवो ॥ दक्षणगोग्रहण अर्द्ध मुंडन सुसर्माको दूजे गोग्रहणकुरुसेन्यमुरछायवो ॥ पार्तेको प्रहार भूप मच्छतें युधिष्ठिरकु उत्तरातें सौभद्रव्याहकोरचाइवो ॥२२॥ ॥दोहा॥ ॥ वारराग वैराटमें कहे अध्याय बरवानी ॥ व्योमांबर शेर कर सहित श्लोकसमूह पिछानी ॥२३॥ ॥ उद्योगसुचि ॥ ॥कवित्त॥ ॥ आदि मंत्रनागपुरगौनभोपुरोहितकोदूजोगौनसंजयकोनीतीहैविदुरकी ॥ तीजेभोश्रीकृष्णगौनसुनिइतिहासकथाधारनविराटरूपदेखिसभाधरकी ॥ दसहूदिसाकेभूपआगमनिमंत्रणतेंसातग्याराक्षोहणीमिलीहैघरघरकी ॥ आगमउलूकदोनूसेन्यागौनकुरुक्षेत्ररथीसंख्याअंबाकथानारीभयेनरकी ॥२३॥ ॥दोहा॥ ॥ रागसिद्धिअरुचंद्रमा पर्वअध्यायउद्योग ॥ वसु

+ १ वनपर्वमें २६९ अध्याय औ ११६६४ श्लोक हैं.

+ २ विराटपर्वमें ६७ अध्याय औ २५०० श्लोक हैं.

+ ३ उद्योगपर्वमें १९६ अध्याय औ ६६१८ श्लोक हैं.

रत्न[1]उर्मी रितू श्लोकनकोसहजोग ॥२४॥ ॥भीष्मरूचि ॥कबित्त॥ ॥खंडनिरमानउत्पातकोप्रमान हानिभीष्मअभिसेचनप्रणेतासेन्यसारीको ॥अर्जुनविषादगीताअष्टादसध्याय जानितीनवरदानधर्मपुत्रधर्मचारीको ॥इरावानउतरऔसंखहैविरादपुत्रसतरासुयोधनकेबंधुआपकारीको ॥भयोपरलोकबाणसज्यागंगापुत्रपोढेबाणगंगादीनोजसअखेतूनधारीको॥२५॥ ॥दोहा॥ ॥बार इंदु गनपति रदन भीस्मपर्वअध्याय ॥वेदवसुसिद्धिवानलो श्लोकहिदीये जिताय॥२६॥ ॥द्रोणसुचि॥ ॥कबित्त॥ ॥द्रोणकीप्रतिज्ञाजुधसंससकअर्जुनकोचक्रव्यूहवेदवध्यसुभद्राकेनंदको ॥नरकीप्रतिज्ञाजुद्धविनारथबधभयोभूरिश्रवाजेद्रथऔविंदअनुविंदको ॥रात्रिजुद्धवासवीअमोघसक्तिहीतेंभयोपातहैडंबेयगनशत्रुनिहकंदको ॥पैतालीसभ्राता दुर्योधनकेद्रोणपातद्रोणीअस्त्रनारायनप्रेर्योपूजफंदको ॥२७॥ ॥दोहा॥ ॥व्योम दीप अरु चंद्रमा द्रोणपर्व[2]अध्याय ॥यहअंबर निधि सिद्धिजुत गिनतीश्लोक गिनाई ॥२८॥ ॥कर्नसुचि॥ ॥कबित्त॥ ॥कर्नअभिषेचनऔहुंदुयुद्धएकधौसरात्रिसमैमंत्रसल्यसारथीविचार्योहै॥ दूजेदिनसारथीमहारथीविवादतामेंमरुदेससेनानीकोमाजनौविगार्योहै॥ औन्च्योचीरतेईभुजऐंचदोऊसैन्यबीचपीयोश्रोनभीमसैनदुसासनमार्योहै॥ युधिष्ठिरअर्जुनकीस्वतेंमृत्युगारीकृष्णपुत्रवृषसेनजूंकूंकर्नमारिडार्योहै ॥२९॥ ॥

१ भीष्मपर्वमें ११७ अध्याय औ ५८८४ श्लोक हैं.

२ द्रोणपर्वमें १७० अध्याय औ ८९०९ श्लोक हैं.

॥ ॥दोहा॥ ॥रत्न रितू अध्याय हैं कर्नपर्वमें सोध॥ वेदरांग निधि वर्क विधि गिन्यो श्लोककोबोध॥३०॥ ॥सल्यसुचि॥ ॥कबित्त॥ ॥सल्यस्थान स्कस मडिलूक सकुनीकोबध धर्मपुत्रहीतेंन्याससल्य अर्धदिनमें॥सुयोधननीरसज्यादूतनतेंसोधपाय धर्मकटुबादतेंजगायोएकछिनमें॥कृष्णाग्रजतीर्थपाशकुरुक्षेत्रसरस्वतीदोनूकीप्रशंसापांचोश्रोनकुंडतिनमें॥द्रौपदीकूंसभाबीचदिखाईजोवामजंघातातेंसोईतोरिभीमभारिलियोरनेमें॥३१॥ ॥दोहा॥ ॥रत्नबाणअध्यायहैं सल्यगदाजतपर्व॥ व्योंम नेंनें कर अग्निगनि श्लोकभयेमिलिसर्व॥३२॥ ॥सुषोसिकसुचि॥ ॥कबित्त॥ ॥द्रोणीअभिषेचनउलूक उपदेशनिसारवडगहीते द्रौपदीकेभ्राता पुत्रमारेहैं॥अठारोहजारसस्त्र अस्त्रतें बिनासकियो पांचूबंधुसेनाबाह्यकेशवडबारेहैं॥द्रौपदीविलापसुनिप्रातनरकीनोंनेमसत्रुकोरुआपकोहूब्रह्मअस्त्रटारेहैं॥ बांधिल्यायेशिरवाछेदि विप्रजानिछांडिदियो उत्तराकोगर्भराख्यो कृष्णकामसारेहैं॥३३॥

॥ ॥दोहा॥ ॥सर्व पुरान अध्याय हैं पर्वसुषोसिकमानि॥ व्योंम बानरवस्क श्लोकहैं यहेंअनुक्रमजानि॥३४॥ ॥ ॥स्त्रीपर्वसुचि॥ ॥कबित्त॥ ॥संजययुयुत्सुलेके आयेराजलोकनकों गंधारीकोपजुक्तव्यासतेंसिरायवों॥तोहुकोपतिज्वालानेत्रपाटीबंधीअधोभागकरतप्रनामधर्मनरवकोंजरायवो ॥मरेनकेनामलैलैकहतजुधि

+१ कर्णपर्वमें ६९ अध्याय औ ४९६४ श्लोक हैं.

+२ शल्यपर्वमें ५९ अध्याय औ ३२२० श्लोक हैं.

+३ सुषुप्तिपर्वमें १८ अध्याय औ ८७० श्लोक हैं.

ष्ठिरसूंकूयोधनमाताकौविलापतापगायवो॥ लोहमेंबनाय
वोमिलायवोअन्धसुतेंसोचुरनदिरवायवोरुभीमकोबचायवो
॥३५॥ ॥दोहा॥ ॥दीपनेनस्त्रीपर्वमें गिनिअध्याय
अनूप॥ बाणबार मुनिश्लोकहैं कहेव्यासकविभूप॥३६॥
॥ ॥सांतिअनुसासनशुचि॥ ॥कवित्त॥ ॥राज
धर्मदानधर्मआपतिकह्योहै धर्ममोक्षकोजोधर्मसरसज्याके
सयनमें॥ औरहुअनेकइतिहासदोनपर्वनमेंपांचरत्नगीता
विनभीष्ममोक्षइनमे ॥युधिष्ठिरभ्रातापुत्रपितामहगुरुविप्रई
नकोविनासदेखितापधोरतनमें॥कृष्णउपदेसतेंनाव्यासउपदेस
तेंनाभीष्मउपदेसहीतेंसीतलभौमनमें॥३७॥ ॥दोहा॥ रत्न
कालसंध्यासहित सांतिपर्वअध्याय॥दीपव्योमपुनिवेदविधु
श्लोकअनुक्रमगाय॥३८॥ रागवेदविधुअध्यायहै अनुशास
नमेंजोय॥ नभअंबरवसुदीपजुत श्लोकअनुक्रमहोइ॥३९
॥ ॥अश्वमेधसुचि॥ ॥कवित्त॥ ॥मरुजज्ञकथाऔ
रचामिकरकोशलाभपरीक्षतजन्मअस्त्रतेजतेंबचायोसो॥
अश्वमोक्षरक्षाजुक्तदीक्षात्यूंयुधिष्ठिरकोसुदर्शनकथाधर्मवै
ष्णवबतायोसो॥ चित्रांगदापुत्रबभ्रूवाहनकोअर्जुनसोविक्र
मसुनतलोगविस्मयउपजायोसो॥ मषकीसमास भयेदक्षणा
अनेकद्रव्यपायोमनवांछितजोजाचवेकोआयोसो॥४०॥ ॥
दोहा॥ ॥हरचरवसंध्याचंद्रमा अश्वमेधअध्याय॥ व्योम

१ स्त्रीपर्वमें २७ अध्याय औ ७७५ श्लोक हैं.
२ शांतिपर्वमें ३३९ अध्याय औ १४७०७ श्लोकहैं.
३ अनुशासनपर्वमें १४६ अध्याय औ ७८०० श्लोक हैं.
४ अश्वमेधपर्वमें १३३ अध्याय औ ३३२० श्लोक हैं.

अयन पुष्कर अगनि दीन्है श्लोक गिनाय॥४१॥ ॥व्यासा श्रमरुचि॥ ॥कबित्त॥ ॥भयो निरवेद भूप अचक्षु विप नगोन प्रथा सासु सुसराज्यो सेवा काजे कियो साथ॥ युधिष्ठिर पिता भक्ति पूर्व अद भूत कीन्ही तीजै अब्द भेद हि वेकूं गयो लीयेरा- जकाथ॥ इत्ता परलोक व्यास कृपा सवे क्षो हनी के मारे वीर मिले जाते सारे ही भये सनाथ॥ दोले प्रथा युक्त विना संजय सुन्यो है दा ह नारद तें पूछ्यो है विलाप के के जोरी हाथ॥४२॥ ॥दोहा॥ अयन बेद अध्याय है व्यासाश्रम में देखि॥ राग व्योम सर चंद्रमा गिनती श्लोक विसेषि॥४३॥ ॥मुसलशुचि॥ ॥सवै या॥ ॥भूसुर श्राप के व्याज तें कृष्ण कियो जदु वंस को नास विचारकें॥ सीरवली कृष्ण की वीर धनंजय कीनो प्रयान यदु त्रि यलारकें॥ लूटि गई त्रीय आप मरयो चहै व्यास की सीरव ते प्रान कूं धारिकें॥ भ्रात ये जाई स्कनाई विराग भो वृव छत्तीस को राज बिसारिकें॥४४॥ ॥दोहा॥ ॥वसु अध्याय मुसल परब गि नत श्लोक पुनि धारी॥ व्योम अयन संध्या सहित लिखि विपरी ति बिचारी॥४५॥ ॥महाप्रस्थानरुचि॥ ॥दोहा॥ ॥ वज्रनाभि को मधुपुरी अभिमन सुत पुर नाग॥ दै कोटिन निधि द्विजन कूं चले तुहिन वन भाग॥४६॥ सर्व लीन अध्याय है पर्व महाप्रस्थान॥ श्लोक तीन सत वीस है जाहर कहे ऊं सुजान॥४७॥ ॥ ॥सुर्गारोहणसुचिपत्र॥ ॥कबित्त॥ ॥चारौं भ्रात- द्रौपदी को यान में पतन भयो युधिष्ठिर व्योम गंगा न्हाय तन त्या

---

१ व्यासाश्रमपर्वमें ४२ अध्याय और १५०६ श्लोक हैं.

२ मुसलपर्वमें ८ अध्याय और ३२० श्लोक हैं.

३ महाप्रस्थानपर्वमें ३ अध्याय और ३२० श्लोक हैं.

ग्योहै ॥ श्वानकथा सुयोधन आदिदेकै नाकधि मैंदेव दूत गैल बंधु देखवे कूं राग्यो है ॥ अर्जुन कूं आदिदेकै नरक निवास देखेक रतविलापसुनि अद्भुत सौं लाग्यो है ॥ बिचारयों तहां निवास इन्द्रादिकु आयपास बतायौ विलास नृपसौं बतसोजाग्यो है ॥ ४८ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पूरीपांच अध्याय है स्वर्गारोहण मांहि ॥ श्लोकदोयसत २०० हैं सबै घटती बढती नांहि ॥ ४९ ॥ सर्वाध्याय सर्वश्लोकसंख्या ॥ कालराग गृह चंद्रमा सर्वपर्व अध्याय ॥ छंदकरसरधरबाणवसु बिनहरिवंसगिनाय ॥ ५० ॥ अष्टादस अक्षोहिणी अष्टादसहिपर्व ॥ अष्टादसदिनमें कटे द्वादशविधुनरसर्व ॥ ५१ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ द्रुपद्विराटराजमागधेशसहदेव धृष्टकेतु चेद्यपतिनीकें निरधारियें ॥ युयुधान यदुवंसी पांड्यकोशलाधिपती ऐकऐक अक्षोहनी स्वामी ऐविचारियें ॥ कुंतीभोज केकयके पांचो भ्रात भासी पुत्र इनकी युधिष्ठिर कीएककेसंभारियें ॥ सातहीअक्षोहनी ऐपांडवकी महासैन्य अष्टवीरविनाकटि युद्धमें बिचारियें ॥ ५२ ॥ ॥ छंद घनाक्षरी ॥ ॥ ॥ भगदत्तदैत्यबंस भूरिश्रवा कुरुवंसी सत्यमद्र धति विंद-अनुविंद जूदेजानि ॥ सिंधुपती वहीनेऊ जेद्रथसु योधनकोसुदक्षणकांबोजी यवनकीसेन्य मानी ॥ अक्षोहिनीएककृतवर्मकियें आठभईतीन घरहीकी छोटेमोटे भूपतो वखानि ॥ ग्यारह प्रकार नदीगांजिवकी धारवीचडूबगई च्यारवीरविनासच-

१ स्वर्गारोहणमे ५ अध्याय औ २०० श्लोक हैं.

२ अब सर्व अध्याय औ सर्व श्लोकोंकी संख्या कहते हैं सर्व श्रीमन्महाभारतमे १९६३ अध्याय औ ८५१५२ श्लोक हैं एक लक्षमें जो श्लोक बाकी रहे उसमे हरिवंश कियो.

हीकी हानि ॥ ५३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नभनिधि ग्रहअरुका लवसु रितुविधुकुरूतुरंग ॥ व्योमकालरितुमहिमुनी नभविधु पांडवसंग ॥ ५४ ॥ व्योमवेदवसुरितुमुनीदीपनयनकुरुवीर ॥ नभवसुनभमुनिरितुमुनिविधुपांडवरनधीर ॥ ५५ ॥ नभद्रग ग्रहसंध्याचरणबाणवेददोऊसेन ॥ सारथीआदिकवीरसब मरणहारगनिऐन ॥ ५६ ॥ नभमुनिसरनभवर्ण द्रगगजकुरुवंसनकेर ॥ नभग्रहव्योमरुकालसर चंद्र पांडु गजहेरि ॥ ५७ ॥ व्योमांबर द्रग काल ग्रह राग मुनि मिलि होइ ॥ वीर अश्व गज जोडि करि दोनू दलके जोय ॥ ५८ ॥ त्रयोदशी कार्तिककी पांडुराप्रभातसमै प्रारंभ भयोहै महादुस्तरसंग्रामकौ ॥ सोही मासकृष्णपक्षसप्तमीदिनास्तसमै बाणसज्यासोवनभोगंगापुत्रनामकौ ॥ द्वादशीअसुरसंध्या द्रोनकौपतनभयोचतुर्दशीकर्णपंथलीनोनिजधामकौ ॥ अमावस्यासल्यऔसुयोधनविनासभयेरात्रिसमैनीचकामद्रोपपुत्रबामकौ ॥ ५९ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कवितामैं सुधीकरी प्रकटअर्थकेकाज ॥ मंडनपद अनुप्रासविन छिमाकरहु कविराज ॥ ६० ॥ मोहोराविगरनदीनपै अरथनविगरनदीन ॥ तातेंपद अनुप्रासबिन छमिजहुदोषप्रवीन ॥ ६१ ॥ संस्कृतजे विगरेसबव

कौरवनके घोडे १६ ९३ ९९० औ पांडवनके १० ७१ ६३० घोडे थे कौरवनके शूरवीर २७ ७६ ८४० औ पांडवनके शूरवीर १७ ६७ ०८० थे ऐसे सब दोनो तरफके मिलायके ४५ ४३ ९२० भये २ कौरवनके हाथी २४० ५७० औ पांडवनके १५ ३० ९० दोनो सेनोंके ७६ ९३ २०० घोडा हाथी औ शूर वीर सब मिलके भये.

ताकी भाषा होत ॥ मम कृत पद अष्टहि निरखि छमहु सुकवि बुधिपोत ॥ ६२ ॥ नामस्वरूपही दासको स्वरूपदासज्यूं होई ॥ पार्थ पाथ सब्द हि सबद भाषा के मत्त सोई ॥ ६३ ॥ वाल्मीकरवि व्याससमि माघादिकउडुजोत ॥ भाषाकविजिंगुनकहूं कहुंक कुंकरत उद्योत ॥ ६४ ॥ विधिबुधविधुबुधिबंधुबध बाधबेधज्यूं बोध ॥ मात्रविगिरि विगरै अरथ रूपदास पढि सोधि ॥ ६५ ॥ कारज पखुरि ऐक विन वारिजसो होइ जाय ॥ बुधिजन लेखक दोषको सोधहु चित्त लगाय ॥ ६६ ॥ लगे पटांबर पखुरिया होत फटांबर सोई ॥ मात्र बरन बिपरीत तें अर्थ विपर्जय होइ ॥ ६७ ॥ द्रगग्रहवसुअरु चंद्रमा संमत अंकगति बाम ॥ शुक्ल चैत्र एकादशि ग्रंथ जन्म सुरवधाम ॥ ६८ ॥ ॥ इतिश्री पांडवयशेंदुचंद्रिकायां स्वरूपदासकृत मंगलाचरन अष्टादशपर्वसूचिपत्र प्रथममयूखः ॥ १ ॥

॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नांगायोजगभीतकूं साहितजुतसांगीत ॥ रूपदास जिनकेनहे पूंछरुशृंगपुनीत ॥ १ ॥ छंद अलंकृत रसनकी करूं सूचिनिकापत्र ॥ वकुव्यापक सामान्यपष आदिहि वरनन अत्र ॥ २ ॥ ॥ प्रथम छंद सूचि ॥ ॥ एकवरनकूं आदले छाईसवर्णप्रजंत ॥ षट्विसवृत्तभेदके प्रथमहि नाम कहंत ॥ ३ ॥ ॥ छंद पद्धरी ॥ ॥ उक्ता १ अत्युक्ता २ यह प्रमान ॥ मध्या ३ रु प्रतिष्ठा ४ कहि सुजान ॥ सुप्रतिष्ठा ५ रु गायत्रि ६ कीन ॥ उष्णिक रु ७ अनुष्टुप् ८ कह प्रवीन ॥ बृहती ९ अरु पंक्ती १० मान लेहु ॥ त्रिष्टुप ११ जगती १२ अतिजगति १३ नेहु ॥ सक्करी १४ अतिसक्करी १५ होत ॥ अष्टी १६ अत्यष्टी १७ धृति १८ उद्योत ॥ अतिधृती १९ कृती २० प्रकृती २१ अरह ॥ आकृति २२ अरु विकृति २३ जानियेह ॥ सत्कृति २४ अतिकृती २५ चवतसेष ॥ उत्कृति २६ विंस-

अट्ठ्नामलेरच ॥ २७ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ छंदवरणप्रस्तारके तेरहकोटिकनीस ॥ ब्यालीसलखसतरहसहससातसत अठाईस ॥ वरणछंदकलछंदमें भेदकछूनलखाय ॥ तातें वरणहिकेकरम आठौंकहौंबनाइ ॥ ६ ॥ ॥ अथवर्णाष्टिक क्रम ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ संख्या १ अरुप्रस्तार २ हैशुचि ३ उद्दिष्ट ४ अरुनष्ट ५ ॥ मेरु ६ पताका ७ मर्कटी ८ येई क्रम हैं अष्ट ॥ ७ ॥ कोई पूंछे एते वर्णके रूप केते संख्या करै ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ प्रथमवरणपरदोइको मेलहु अंकविचारि ॥ संख्यादुगुनहितेदुगुन प्रस्तारहिलौंधारि ॥ ८ ॥ ॥

१	२	१०	१०२४	१९	५२४२८८
२	४	११	२०४८	२०	१०४८५७६
३	८	१२	४०९६	२१	२०९७१५२
४	१६	१३	८१९२	२२	४१९४३०४
५	३२	१४	१६३८४	२३	८३८८६०८
६	६४	१५	३२७६८	२४	१६७७७२१६
७	१२८	१६	६५५३६	२५	३३५५४४३२
८	२५६	१७	१३१०७२	२६	६७१०८८६४
९	५१२	१८	२६२१४४	२७	१३४२१७७२८

अब वर्णाष्टिकक्रम कहे हैं संख्या १ प्रस्तार २ शुचि ३ उद्दिष्ट ४ नष्ट ५ मेरु ६ पताका ७ मर्कटी ८ येआठ ॥ ७ ॥ कोई पूंछे एते वर्णके रूप केते जैसे कि तीन वर्णके छंदके रूप केतने हैं संख्याकरिके कहै जैसे कि एकवर्णके छंदके दोरूप दोयवर्णवालेके चार तीनवालेके आठ ऐसेही छाईस वरणके प्रस्तारलौं उत्तरोत्तर दूनी होती जायगी इसरीतसे तीनवर्णवाले छंदके ८ रूप भये संख्या कोष्टक ऊपर लिखाहैं ॥ ८ ॥ ॥

॥ पूछे रूप केते प्रस्तार करै ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ लघुकी सूधीरेख कर गुरुकी वांकी रेख ॥ आदि गुरु सब लघु तलक यूं प्रस्तार हि लेख ॥ ८ ॥ आदि गुरूतर धरि लघू अग्र सु आगे टेल ॥ घटे वरन प्रस्तारते गुरु करि पाछे मेल ॥ ९ ॥ ॥

लघुकी सूधीरेख जैसे। जैसे गुरुकी वांकी जैसे ऽ प्रस्तारके आदि-में सब गुरु लिखिके फिरि प्रथम गुरुके नीचे लघु लिखिके अगाडीके वर्णोंके नीचे जैसे हों वैसेही लिखे औ जो आदि गुरुके लिखनेसे पीछे रहें ऊन सब लघुनके नीचे गुरुही लिखा ॥ अथ प्रस्तार स्वरूप इसी माफक कसब करै ॥ ९ ॥ ॥

अथ चारि वरणके प्रस्तारका स्वरूप.

ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
।	ऽ	ऽ	ऽ
ऽ	।	ऽ	ऽ
।	।	ऽ	ऽ
ऽ	ऽ	।	ऽ
।	ऽ	।	ऽ
ऽ	।	।	ऽ
।	।	।	ऽ
ऽ	ऽ	ऽ	।
।	ऽ	ऽ	।
ऽ	।	ऽ	।
।	।	ऽ	।
ऽ	ऽ	।	।
।	ऽ	।	।
ऽ	।	।	।
।	।	।	।

॥ मूल ॥ ॥ पूछें गुरु आदिक कितने औ लघु आदिकरूप कितने तथा गुरु लघ्वाद्यंत कितने औ गुर्वाद्यंत कितने तब शुचि करै ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ संख्याके पूर्णांकते प्रथम अंक जो म्वंत ॥ ते गुरु आदिरु अंत है ते लघु आदिरु अंत ॥ १० ॥ पूर्ण अंक ते तीसरे होवे अंक जितेक ॥ गुरु आद्यंत तिते कहै लघु आद्यंत तितेक ॥ ११ ॥ ॥

कोईने पूछा कि अतरे अक्षरके छंदमें गुरु आदिक लघु आदिक गुरु आद्यंत औ लघु आद्यंत कितने कितने हैं उदाहरण जैसे कि चारि वर्णके छंदमें पूछा कि इसमेसे जिनके गुरुवर्ण आदिमे हैं वे कितने औ जिनके आदिमें लघु है वे कितने औ जिनके गुरुवर्ण आदि औ अंतमे है वे कितने औ जिनके लघु आद्यंतमे है वे कितने तो शुचि करिके कहै शुचि याने संख्याके पूर्णांकको देखै जितने अंक होयें उनमेंसे आधे करे आधे छंदमें दोंमे गुरु आदिक औ आधे लघु आदिक होंयगे ऐसेही जो पूर्णांक है उससे तीसरा अंक जितनेका होयगा वत नहीं आदि अंतमे गुरुवाले औवत नही लघुवाले होते है. उदाहरण जैसे कि चारि वर्णके छंदमे सोरह पूर्णांक है उनमेसे आठ गुरु आदिक औ आठ लघु आदिक होते हैं. औ सोरह से तीसरा याने सोरहसे दूसरा आठ औ तीसरा चार भये तो चारिके आदि अंतमें गुरु औ चारि हीके लघु होते हैं गुरु आदि जैसे ऽऽऽऽ १ ऽ।ऽऽ २ ऽऽ।ऽ ३ ऽ।।ऽ ४ ऽऽऽ। ५ ऽ।ऽ। ६ ऽऽ।। ७ ऽ।।। ८ लघु आदिक जैसे ।ऽऽऽ १ ।।ऽऽ २ ।ऽ।ऽ ३ ।।।ऽ ४ लघ्वाद्यंतजैसे ।ऽऽ। १ ।।ऽ। २ ।ऽ।। ३ ।।।। ४ इसी[illegible] ॥ ११ ॥

॥ ॥ रूप लिखि पूंछैं ये रूप कितरमी है तब उद्दिष्ट करै ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वरनन पर अंक आदिते यक तें दुगुन धरिष्ट॥ लघुऊपरके अंकमे यक धरि दिख उदिष्ट ॥ १२॥ ॥ ॥ पूछै अतरमो रूप किसो छे नष्ट कीजे॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बेकि व्है तो लघु लिखौ एकी गुरु लखि लेहु ॥ एकीमे येकमेलिये बहुरि अरध करि देहु ॥ १३ ॥ यूंही सम अरु विषमको लघु गुरु लिखते जाहु ॥ प्रस्तार हिके वरण लौ अरध करत ठहराहु ॥ १४ ॥ ॥ ॥ ॥

कोई मस्तारका रूप लिखिके कहे कि यह रूपके तरवों है तब उस छंदके वरनौपर अंक ऐसे लिखे कि एक लिखिके फिरि एकसे एकप र दूने लिखतो जाय फिरि लघु वरनौंपरके अंक जोरिके एक मिलावे जितने होय वतरवों रूप जाएनो उदाहरण जैसें आठ वर्णके छंदका रूप यह लिखते हैं ¹ˢ ²। ⁴ˢ ⁸। ¹⁶ˢ ³²ˢ ⁶⁴। ¹²⁸ˢ इसमें लघु वर्णों के अंक ७४ भये इनमें एक मिलायो तो ७५ भये यासो यह पच हत्तरवों रूपह ऐसो कहनो ॥ १२ ॥

जैसे कोईने पूँछा कि आठ वरणके छंदमे पचहत्तरमों रूप - कैसो है तब ७५ यह एकी है इसका गुरु ऽ फिरी इसमे १ मिलायो. ७६ इसके आधे ३८ यह बेकी इसका लघु । इसका आधा १९ इस-का गुरु ऽ १ मि॰ २० आधे १० बेकी लघु । आधे ५ एकी गुरु ऽ १ मि॰ ६ बेकी ल॰ । आधे ३ एकी गुरु ऽ १ मि॰ ४ आधे २ बेकी लघु । २ को आधा १ गुरु ऐसे ऽ । ऽ । ऽ ऽ । ऽ रूप ये भयो ॥ १३॥ १४॥

॥ ॥ पूंछे अतरा गुरुका कतरा अतरा लघुका रूप कतरा तब मेरु कीजे॥ ॥चौपाई॥ ॥आदि होय त्रय चतुर पंच थिर ॥ चरण संख्य कोठा क्रमते कर ॥ मेरु प्रमाण यूं कोठा कीजे ॥ आद्यंत एकको अंक भरीजे ॥ ऊपर के द्वै आंक मिलावो ॥ दोय कोष्टन तर कोष्ट भरावो ॥ वर्ण मेरु-ऐसे भरभाई ॥ जो तै पिंगलकी मति पाई॥ १५॥ ॥

उदाहरन जैसे कि कोईने पूछा कि आठ वरनके प्रस्तारमें २५६ भेद है-इनमे केतने एक लघुके रूप हैं औ केतने दो लघुके औ केतने चार लघुके केतने पांच लघुके केतने छके केतने सतके औ केतने आठके ऐसे ही गुरुसंख्याके रूप पूछे तो मेरु करिके कहे- मेरुकी रीति प्रथम एक कोष्ट करि उसमे १ का अंक लिखै फिरि उसके नीचे दो कोठोमें एकएकका अंक भरे यह एकाक्षर छंदका मेरु इसमें एक लघु एकदीर्घ फिरि दोके नीचे तीन कोष्टक तिनमे बाजूके कोठोमें एकएकका लिखै औ उपरके दोनों का जोड देके बीचकोष्टकमें २ का अंक लिखै इसमें दो गुरुका एक दो लघुका एक औ दो एक एक गुरुके है यह दो वर्णका मेरु फिरि तीनिके नीचे चार कोष्टक जिनके बाजूके कोठोमें एक एक औ उपरके एक औ दोजोडीके ३ औ दो एकको जोडीके ३ लिखै इसमें एक तीन गुरु एक तीनो लघुका औ तीन दो लघुके तीन दो गुरुके यह तीन वर्णका मेरु ऐसे ही सत्ताइस पर्यंत करना परंतु इहां यह मेरु आठ वर्ण पर्यंतका लिखा है औ बुद्धिसे समुझना॥१५॥
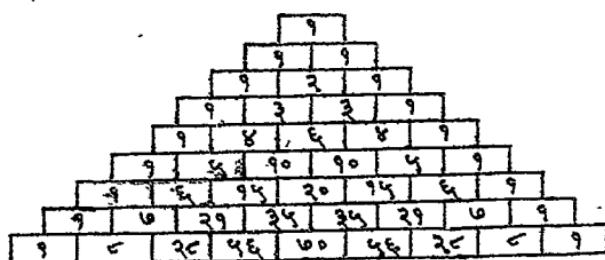
॥ ॥ पूंछे कतरमा कतरमा रूपोंमा कतरमा कतरमा गुरुछें तौ पताका कीजे ॥ ॥चौपाई॥ ॥ वरनन्नते येक अधिक कोष्टकरि ॥ यकतें दुगुने प्रथमता हि भरि ॥ आदि अंतके अंक देहुतर ॥ पंकति छोडि और उलटी भर ॥ पूर्ण अंकते पिछिले अंक ॥ घटत बचैं सो भरहु निसंक ॥ लिखिगयो अंक फेरि मति लेखहु ॥ ऐसे वरण पताका देखहु ॥ १६॥ ॥

जैसे किसीने पूंछा कि छ वर्णके प्रस्तरमे ६४ भेद हैं उनमें कौन कोंनसे भेदमे केतने केतने गुरु हैं तब पताका करे सो जैसे कि जितने वर्णके छंदकी पताका करनी होय उसकी संख्याके कोष्टकोसे एक अधिक कोष्टक करे जैसे छ वरनके प्रस्तारमें सात कोष्टक जैसे इस पताकामें लिखे हैं इसी तरहसे एकसे एक दुगन जैसे एक दो चार आठ इत्यादिक लिखिके फिरि उसके अंक भरना सो पंकति छोडिके उलटा भरना सो पूर्ण अंक ते पिछिले अंकनमें घटायके बचें सो भरना औ अंक लिखेगए होय उनको फिरि न लिखना एसे वरन पताका करना ॥ १६॥

																			ऽऽऽऽऽऽ	१
														ऽऽऽऽऽ	३३	१७	९	५	३	२
					ऽऽऽऽ	४९	४१	३७	३५	३४	२५	२१	१९	१८	१३	११	१०	७	६	४
ऽऽऽ	५७	५३	५१	५०	४५	४३	४२	३९	३८	३६	२९	२७	२६	२३	२२	२०	१५	१६	१२	८
					ऽऽ	६१	५९	५८	५५	५४	५२	४७	४६	४४	४०	३१	३०	२८	२४	१६
														ऽ	६३	६२	६०	५६	४८	३२
																				६४

॥ ॥ पूंछेंअतरमीप्रत्ययके भेदमात्रावरणलघुदीर्घकित नेहैंतब मर्कटीकीजे॥ ॥चौपाई॥ ॥ वृत्तभेदमात्राअरुवरणा॥ गुरुलघुऊभाकोठाभरना॥ फिरप्रस्तारवरणके-माफक॥ आडेकोठेकरहुषटहितक॥ प्रथमहिवृत्तपंक्तिकोभरिये॥ अेकतेअंकक्रमहितेधरिये॥ दूजीपंक्तिभेदसंख्याधरि॥ दोनूंगुनिचौथीपंगतिभरि॥ चौथीपंगतिअरधअरधकरि॥ पंगतिलघुगुरुपंचछठीभरी॥ चौथीपंचमिअंकमिलावो॥ तीजीमात्रापंक्तिभरावो॥१७॥ ॥इतिवर्णाष्टकसंपूर्णभया॥ ॥अथछंदजातिभेदलिख्यते॥ ॥दोहा॥ ॥पुरुषत्रियाअरुषंडहैं तीनजातिकेछंद॥ वर्ण१ मात्र२ मात्रावरण३ क्रमतेगिनहुकविंद॥१८॥ ॥प्रथमपुरुषछंदसुनि॥ ॥भगनजगनअरुसगनके आदिमध्यगुरुअंति॥ यगनरगनपुनितगनकेक्रमतेंलघुहिकहंत॥१९॥ मगननगनकेतीनाहिगुरुलघुकरिजानि॥ गनतेंसुछिमछंदगति कहतस्वरूपबखानि॥२०॥ गैलल

वृत्त	१	२	३	४	५	६
भेद	२	४	८	१६	३२	६४
मात्रा	३	१२	३६	९६	२४०	५७६
वर्ण	२	८	२४	६४	१६०	३८४
लघु	१	४	१२	३२	८०	१९२
गुरु	१	४	१२	३२	८०	१९२

१ पुरुष स्त्री नपुंसक ये तीन प्रकारके छंद हैं जैसे कि वर्णछंद पुरुष मात्रा छंद स्त्री मिश्रित नपुंसक सो क्रमसे कहते हैं तहां प्रथम पुरुष छंद कहते हैं.

२ गण स्वरूप भ० ऽ॥ ज० ।ऽ। स० ॥ऽ य० ।ऽऽ र० ऽ।ऽ त० ऽऽ। म० ऽऽऽ नगन ॥।

गेकूं करत गुरु निज लघु रहत निदान ॥ चरणसंजोगी देत है आपव डाईआन ॥ २१ ॥ सुषमुखोच्चारणार्थं गुरुरेवलघुत्वमाप्नोति ॥ ॥ एकमगनतेंनारीछंद ॥ गोपीसं ॥ जेईसं ॥ श्रीसेसं ॥ विश्वेसं ॥ एक नगतेंकमलछंद ॥ निरत ॥ करत ॥ सरित ॥ फिरत ॥ एकभगनतेंमं दराछंद ॥ माधव ॥ जादव ॥ मारत ॥ तारत ॥ एकयगनतेंससिछंद ॥ सुघोषंअदोषं ॥ निवासी ॥ विलासी ॥ एकसगनतेंरमनछंद ॥ जमुनं गमनं ॥ नच्चवो ॥ रच्चवो ॥ एकतगनतेंपंचालिकाछंद ॥ राधेस ॥ जोगेस ॥ आराधि ॥ गोसाधि ॥ एकजगनतेंगजेंद्रछंद ॥ अरूप ॥ अनूप ॥ अ नाथ ॥ अमाय ॥ एकरगनतेंप्रियाछंद ॥ स्यामते ॥ रामते ॥ एकहै ॥ नाम है ॥ दोयमगनतेंसेखाछंद ॥ राधेजीगावेहै ॥ प्यारेकूंभावेहै ॥ वंसीमेंबो लेहै ॥ तानूंकूंतोलेहै ॥ दोयनगनतेंमदनकछंद ॥ मदनबदन ॥ दनुजक दन ॥ रुचिररदन ॥ सुद्युतसदन ॥ दोयभगनतेंअमंदछंद ॥ श्रीधर पावन ॥ घोषबचावन ॥ कौरवघातन ॥ कंसनिपातन ॥ दोययगन तेंसंखनारीछंद ॥ विधाताफनीसं ॥ धरेपावसीसं ॥ रचेंलोकतीनं ॥ सुगोपीअधीनं ॥ दोयसगनतेंतिलकाछंद ॥ जननीजमना ॥ अघ कीसमना ॥ हरिप्रीतिप्रदा ॥ सुखरूपसदा ॥ दोयतगनतेंमंथानाछं द ॥ एकापतीजोत ॥ वंसीरवेंहोत ॥ चालीसवेंबाम ॥ सोहेंजितेंस्याम ॥ दोयजगनतेंमालतीछंद ॥ त्रिलोकनरेंद ॥ गुपालगोविंद ॥ निकंदन कंस ॥ विभाकरवंस ॥ दोयरगनतेंविजोहाछंद ॥ दासधीदायकं ॥ रा धिकानायकं ॥ गोपगोपालनं ॥ दासभोटालनं ॥ चारमगनतेंमोद-

१ संजोंगी याने जिसमे दूसरे अक्षरको मिलाप होय सो संयो- गी आपके गेलके चरणको दीर्घ करता है परंतु आप लघुही र- हता है.

२ इहांसे अगाडी अबकुछ थोडे छंद स्वरूप देखाते हैं.

कछंद ॥ गोपालांकी साथे खेल्यो ॥ राधा प्यारो जाकूं गावो मेटो साधो ह्मारो थारो ॥ गीताजीमे भाख्यो सोही नीकी तत्वं ॥ भक्तीजो गंग्याना नंदं मुक्ती मत्वं ॥ चार नगनतें रतल नयन छंद ॥ हरि विन सब अघट रतन ॥ बरतन मिलकर नरतन ॥ भजि तजि भ्रमक्रम सुनि मन ॥ दिलसुध सुखप्रद दिन दिन ॥ चार भगनतें मोदक छंद ॥ केसव जादव माधव श्रीधर ॥ गोकलमें नच नारचनाकर ॥ जे दुखहा सुखदा अरिघातक ॥ नाम रटे कटिहें सब पातक ॥ चार यगनतें भुजंगी छंद ॥ भजो भक्तिदाता मुकुंद मुरारी ॥ जरासंध कंसादिके नासकारी ॥ अभेदान दाता नहीं कोय ऐसो ॥ जगन्नाथस्वामी चिदानंद जैसो ॥ चार सगनतें तोटक छंद ॥ जगदीस हरी मन तूं जजरे ॥ त्रिसना सुखमें वसिना तजरे ॥ जब दास स्वरूप मिले हरिजी ॥ हम साच कहो फिरजो मरजी ॥ २२ ॥ चार तगणतें अद्रष्टी छंद ॥ रामा रमानाथ राजा त्रिहूं लोक ॥ संसारकी त्रास हंताजु तं सोक ॥ मायापती मोक्षदाता सदानंद ॥ धातापिता राम आनंदके कंद ॥ चार जगनतें छंद मोतीदाम ॥ अकाम अबाध्य अनादि अनूप ॥ सर्वे जगव्यापक एकस्वरूप ॥ अभैपददायक देव उदार ॥ विभू अनखंड विनास विकार ॥ चार रगणतें छंद स्वरगवेणी ॥ देहदं प्राणदं सत्वदं मुक्तिदं ॥ मानदं बोधदं लोकयं मुक्तिदं ॥ सेवकं पोषदा कंद आनंदके ॥ चंद्राकाजथानंद हैनंदके ॥ २३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अष्ट मगन अरु नगनतें छंदन पावत रूप ॥ तातें वरनन ना किया समझि लेहु कविभूप ॥ २४ ॥ आठ भगनतें किरीटी छंद ॥-

---

१ हरीका पूजन कर जजका संस्कृत यज होता है.

आज प्रभानटनागरकी वृषभानसुताटक एक निहारत ॥ मोरपखाके चमेंचके कीरतकुंडलकेढिगनैनन्नदारत ॥ गुंजनकी वहमालगरे पटपीतकों ध्याननर्नेकबिसारत ॥ चातुरता मति आतुरताजुत बालसंजोगउद्योगविचारत ॥ आठयगणतें माधूर्यछंद ॥ जदूनाथगोविंदविश्वेसधाता चिदानंदरूपी सदानंदकारी ॥ कर्थोनासकंसादिकोवंसहंसं वि भूश्यामवृंदावनंभूविहारी ॥ तजेकामक्रोधंभजेलाइबोधंहरेतापतीनूंकरे आयजेसो ॥ कहेंभूपदासंकटेकालपास तिहूंलोकवासीनकोंपूज्यतेसो ॥ २६ ॥ ॥ अष्टसगनतें दुर्मिलाछंद ॥ ॥ सवैय्या ॥ ॥ मनकोमिलवोजब हीतेंभयो भयोतीक्षकटाक्षनकोघलवो ॥ रूपसागरजानिसनेहकियोनटनागरआगिविनाजलवो ॥ तनकोमिलवोसुरह्योंअतिदूररह्योकुलमारगकोंचलवो ॥ रह्योवेननकोमिलवोनवनैनवनैंअबनैननकोमिलवो ॥ २७ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ॥ ॥ अंतरंग सखितें कह्यो जाय सुनावो गाय ॥ नीकेराग मलारमें प्रावृटकाल लखाय ॥ २८ ॥ ॥ या सवैयाकी टीका परलोकसाधनोपदेशक ॥ षट्शास्त्र ॥ सांख्य १ न्याय २ पातांजल ३ वैषेसिक ४ मीमांसा ५ वेदांत ६ इहलोकसाधक ॥ षट् उपशास्त्र ॥ व्याकरन १ कोस २ तर्क ३ साहित्य ४ संगीत ५ नाटक ६ जिनमेंतें साहित्य है या सवैय्या विषे साहित्यके षट् अंग ॥ प्रथम छंद ॥ वृत्तमें मैंईसधा ॥ द्वितीय नायका चत्तुर्धा ॥ त्रितीय अ

---

१ केश. २ श्यामता. ३ छाईसप्रकारके. ४ चतुर्धा चारिप्रकारके.

लंकार ॥ एकसोआठ धा ॥ चतुर्थ रस द्वादशाधा ॥ पंचमरी तिचतुर्धा ॥ छठीध्वन्यादि ॥ त्रिधा ॥ एषट्हीअंगयासवैय्याविषेजाहरकीयाजाइगा ॥ वाणीदोय ॥ देववाणी ॥ संस्कृत ॥ लोकवाणी ॥ भाषासंस्कृतविषेसातविभक्तिजाहरहोतहै ॥ समासांतभीहोय ॥ भाषामेंविभक्तिसमासतेहोय ॥ संस्कृतविषेएकवचनद्विवचनबहुवचनहै ॥ छैसो १ छैते २ छैजे ३ प्रथमा ॥ तिने १ त्याने २ तिनूने ३ द्वितीया ॥ तीकर १ त्यांकर २ तिनूकर ३ त्रतीया तीकेअर्थ १ त्याकेअर्थ २ तिनूकेअर्थ ३ चतुर्थी तिनते १ त्यांते २ तिनूतें ३ पंचमी तीकूं १ त्याकूं २ तिनूंकूं ३ षष्ठी तिनविषें १ त्याविषें २ तिनूविषे ३ सप्तमी ॥ भाषामें एकवचन बहुवचनहै ॥ द्विवचननहीं ॥ संस्कृतविषें स्त्रीलिंग पुल्लिंग नपुंसकलिंगहै ॥ भाषाविषे स्त्रीलिंग पुल्लिंग है नपुंसकलिंग नहीं ॥ भूत भविष्य वर्तमान परोक्ष प्रत्यक्ष संस्कृत भाषा दोनोविषेंहोय संस्कृतविषे ५ अनुप्रासहोय अंत्यानुप्रास होय नहीं ॥ भाषामेंहोयजाकोतुकांत मोहरो भेदिकहतहै ॥ फारसीमें काफ़ियाकहतहै. संस्कृतविषेलघुकोंगुरु तीनठोर होइ संजोगीकी आदिको विसर्गादितुकांतः ॥ भाषामेंसंजोगादिगुरु होइ विसर्गतुकारांततें नहीं. संस्कृतविषें संधीकरतें विसर्गतें ह्रस्वतें अनुस्वारतें भाषाकीसंधि भावकोभो ॥ जबकोजो ॥ विभवकोविभो ॥ भयकोभै ॥ लयकोलै ॥ विजयकोविजै ॥ ऐसो होय सर्व शब्दकूं सब सर्व सरव भीहोय ॥ ऐसे पार्थको पाथ पारथ होय ॥ संस्कृत विषे ऋकार ॥ ष्कार ॥ यकारकों भाषामें छकार नकार जकार है ॥ संस्कृत विषे दंती तालवी मूर्धी

---

१ एकसोआठ प्रकारके. २ बाराह प्रकारके ऐसेही जहां गणतीके अंतमें धा आवे उहां वत्त नहीं प्रकार समुझना.

सष होय ॥ भाषामें सकार दंती होय यकारकोजकार भी होय॥ सं० लघुदीर्घ पुलत ह्रस्व चार भेद. भाषामें लघु दीर्घ होय जामे भाषाको छंद छंद दो प्रकारके मात्रा वर्ण जामें उक्तादि वरण छंदकी छाईस वृत्ति जामे चोवीस वर्णकी संस्कृती वृत्ति-जामे प्रस्तारके प्रमाणतें एकक्रोड सडसटलाख सत्योत्तर हजार होयसें सोला छंद होय तामे इकोतरलाख असीहजार दोयसें छतीसमा स्थानको रूप अष्ट सगणतें दुर्मिला छंद है ॥ कहूंक लघुकीठा हर गुरु होइ उच्चारमें लघु बोले तो दोष नही ॥ सुखमुखोच्चार. रस १२ जामें ७ गोन ५ अचल आलंबन विभावविषे रोद्र १ करुणा २ विभत्स ३ वीर ४ हास्य ५ भयानक ६ अद्भुत ७ इन सातनमें अंतर विकार स्थाई संचारी आदि आंगविकार सांतिक अनुभावादिक स्थिरी भूत नाहीं शृंगार १ सांति २ व्रात्सल्य ३ दास्य ४ सखत्व ५ इन पांचनमें मनविकार संचारी ३३ स्वनिमित्तेन परनिमित्तेन द्विगुणे ६६ प्रकार भये सब्द स्पर्श रूप रस गंधेभ्यः पंचगुनित तीनसेतीस ३३० भये ऐसे ही तिनविकार सांतिक दसधा गुणे किये सतदा भये सांतिक आदि और अनेक भावसो तो स्थिर होतही नाहीं परंतु अंतर विकार स्थाई रीति निर्वेद १ ममत्व २ विनय ३ रहस्य ४ ए स्थाई और बाह्यविकार द्विधा विभाव आलंबन ओर उदीपन इन पांच हूमें जाहर स्थिरी भूत दरसे है इन पांच मुख्य रसनमें शृंगार रस है या दुरमिलाविषे रतिस्थाई तो है ई विभाव आलंबन तो नाय

१ रस १२ लिखते हैं औ बहुधा नव हैं तहां कारण है कि इहां वात्सल्य सख्यत्व औदास्य ये जादा है और कवियोने इनको उनन व रस-मे अंतर्गत माने हैं.

क नायका उदीपन पंचधा शब्द स्पर्श रूप रस गंध जिनमें रू पतिषें काढाछ स्मरण अंतरंग सखी आदि विवरण सात्विक सोई अनुभव है आगविना जलचो या शब्दतें जान्यों जात है ब चन भी अनुभव है चिंता दैन्यादिक संचारी है ही इन पांच भा वतें रस पुष्ट हैं शृंगार द्विधा संजोग रुचिजोग जामै वियोग २ स टधा प्रथम प्रवास द्विधा भूत भविष्यता दुजोमन चतुर्धा लघु १ मध्य २ गुरु ३ प्रणय ४ तीजो करुणा त्रिधा दोहिक दैविक भूतक. चोथे पूरवानुराग त्रिधा लोक मृजादा वेद मृजादा कुल मृजादा. पांचमों स्त्रियांजन्य द्विद्धा देव मनुष्य छटो प्रयोजन्य द्रव त्रिधा दे स १ काल २ वस्तु ३ ऐसे सर्व वियोग ससद सधा भये जिनमे पूर्वानु राग है संजोगमें १० होय कोई कवि १ कहत है वियोगमें १० दासा भिलाषा १ चिंता २ गुनकथन ३ स्मरण ४ उद्वेग ५ प्रलय ६ जड ता ७ उन्माद ८ व्याधि ९ मरण १० जिनमें उद्वेग सुखद वस्तु दुखद होय ध्वनिले अभिलाषा भी है अंतरंगसखीकूं नायकाने कह्यो म लारमें गाइके सुनाइयो अलंकार द्वे प्रकारके सामान्य जाके तौ अ नेकधा. भेद विसिष्ट सो एकसो आठ धा वसिष्टके अंगविषे विष माध्याघात शब्दालंकार विषै षट् अनुप्रास वृत्या १ छेका २ लाटा ३ जमका ४ श्रुति ५ अंत्या ६ जिनमें छेका लाटा अंत्यानुप्रास है. नाइका च्यार प्रकारकी प्रथम अंगभेद चतुर्धा दूजी प्रकृति भेद त्रि धा तीजी वही क्रमभेद षटधा चोथी कालभेद पंचदस धा जी. प्र० प्रकृति भेद त्रिधा स्वकिया १ परकीया २ सामान्या ३ जिसमें

---

१ यह नायका भेद बहुत विस्तृत है सो संस्कृतमें रसमं- जरी औ भाषामें कविप्रिया रसराज इत्यादिक ग्रंथोमें विस्ता र है.

परकिया छे प्रकारकी १ विदग्धा द्विधा २ लखिता १ प्रकार ३ अनुसमानाचतुर्धा गुप्तात्रिधा ५ मुदिता एक प्रकारकी ६ कुलटा येक जिनमें सुधपरकीया तथा लखिता दरसणचतुर्धा श्रवण १ स्वप्न २ चित्र ३ सारव्यात ४ जिनमें सारव्यात प्रकृति त्रिधा सातकी १ राजसी २ तामसी ३ जि॰ राजसी पांचहू कोष बिषै अभिव्यापकव्है कै वचन निकस्यो है १ अन्नमय २ प्राणमय ३ मनोमय ४ विज्ञानमय ५ आनंदमय ६ ध्वनितें काकोक्ति अलंकार काक ध्वनिभी होतहै मेघकी भार्या मल्लाररागनीमें गवे हैं संपूर्ण याकी जात है. अरोही अवरोही बिषै से १ रि २ गं ३ म ४ पं ५ धै ६ नी ७ सातही सुर बोले जाते. ताल जलद ते तालो मल्लार रागनी ते काल ध्वनीतें बरषा रितु जिताई बरषाकी सामग्री सो भी सुखदाई है. परंतु दुखदाई॰ है कै बिरह अत्यंत बढावे है. मयूर विद्यूत चातकादि इतना प्रसन्वोतर साहित्यके कवित छंद श्लोक दोहा सर्वविषे विचारवो कोइ साहि कुसल होय जाको पूछना कोइ पूछे जाको उत्तर करना सोई कवी है आगूके कवितनमें ऐसो ही विचार. वोजू एक कणतें सर्व अन्नकी पक्कता जाणिये॥२७॥ आठ तगनतें करेड छंद ॥बाधाहरो नाथ राधापती दासकी स्याम कामारिके इष्ट आधार॥ एकाग्रता मोरतो पावके ध्यानकारारिवयें देवदेवाधि दातार॥ बोलें सवें वेद पावे नहीं भेद तो और का जीव जाने महाराज॥ गावें काहा पीव पावे कहा तो गती आप कीजो रमाया मिल्यो आज॥ २८॥ आठ जगन

---

१ षर्ज्ज १ रिषभ २ गंधार ३ मध्यम ४ पंचम ५ धैवत ६ निषाद ७ ये सात स्वर है.

तैंजीवक छंद ॥ अपार अज्ञान मिल्यो इह जीव करी सुदया तब पावत पार ॥ अनाथ कुजीव सनाथ करो इल धारन पालन देव उदार ॥ कृपानिधि कानके तुम कारन वेदउधारन पापविदार ॥ सदा करजोर पुकारत श्रीवर बोध मिलेजुत भक्ति विचार ॥ २९ ॥ ॥ आठ रगनतें बोधक छं ॥ ॥ रामराजीवनाभी धर्यो इंड कूष्यंड वैराटसारे ॥ रचे एकदा ब्रह्म कूं दे प्रजाधीस ऐसो पद सेससाई रहे आपन्यारे ॥ सदा अंस कुंडारकें विश्वको धारिकें दुष्टकूं मारिकें टारि ताप हरी ॥ दासकूं तारिकें कीर्ति विस्तारिकें पारिकीने भ्रतग्राहितेज्यूंकरी २९ मात्रा छंद ३० तीस मात्रा एक दलकी १८ अठरापर विश्राम चौपइया छंद मात्रा २६ छावीस चौदापर विश्राम वेताल छंद इत्यादिक क्रिया छंद जानीये जामें गुरु लघु वर्णको प्रमाण नाहीं ॥ ॥

॥ अथ नपुंसक छंद ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तेरह ग्यारह मात्र फिर तेरह ग्यारह जोय ॥ सो दोहा विपरीत तें होइ सोरठा सोई ॥ मोहरापर जगणके तगण होय विन मोहरा कौतुकांत नगन रगन सगनतें होय ताते संढ ॥ सोले मात्रा अंत जगन सोपाधरी सोले मात्रा अंताक्षर गुरु मनहर छंद जाकूं पिंगलमें कवित्व कहत है पदविषे ३२ बत्तीस अक्षर होई सोला अरु सोलापर विश्राम होय अंत्य अक्षर लघु होई सो घनाक्षरी रू० छंदयनमें गुरु लघु वर्णको नेम होय अरु नहीं है जातें नपुंसक कहिये ऐसेहि थोडे कहेवो होत समज लेनो ॥ इतिश्री पांडवयशेंदुचंद्रिकाद्वितीयमयूखः ॥ २ ॥ ॥ अथ अलंकार सूचि ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ वसू अयन विधु सर्वहै भेद गिने बहु होय ॥

अतिव्याधीकेदोषतें च्यौराशीसुखजोय॥१॥जानेजात
जुशब्दतें कामपरैबहुठोर॥अलंकारमुखिकहतहो ग्रंथबढे
विधऔर॥२॥ अथउपमासुचिनका॥ धर्मऔरउपमेयहे उ
पमावाचकआन॥कोमलहरिपदकंजसे क्रमतें उपमाजानि
॥३॥अष्टलुप्तोपमा॥चंद्रेवदनसीतलसदा लखबहुमीन
सेनेन॥राधाजीकेपदकमल स्क्षिमहरिकटिऐन॥ ४ ॥
रमासदृसलावण्यहे पिकसीमीठीवानी॥हेहरिदाडिमसे
दसन हंसगमनिकरिजानी॥५॥पदआदिकउपमेयहै कं
जादिकउपमान॥ द्विविधधर्मसामान्यअरु कहतविसे
षबखान॥६॥सीसेसौंज्यूंलूंइवे समतुल्यसदृससमान
॥मनोआदिवाचिकजहां औंतौउपमाजानि॥७॥ भँवर
धनुषअरुबाणभ्रुव वर्णकितगुणमानि॥ धर्मस्कतीनप्र
कारये समुझहुसबेंस्फुजान॥८॥सित१मेचक२पीरे३
हरित४धूसर५अभ्राकार६॥लोहित७मिश्रित८
आदियें धर्मवर्णकरिधार॥९॥लघु१दीरघ२सुछिम३
पुसट४वक्र५अवक्र६परवांन॥संपूरनआवर्त८ पुनि
सुव्रत९त्रिकोण१०स्फुजान॥१०॥गुरु११तीक्ष्ण१२मं

१ जिस उपमा अलंकारमे उपमा उपमेय वाचक औ धर्म ये चारी प्र
सिद्ध दीषें उसको पूर्ण उपमा अलंकार कहते हैं जैसे कि कोमल ह
रिपद कंजसे इहां कोमल धर्म हरिपद उपमेय कंज उपमासे वा-
चक यह पूरण उपमालंकार है औ जहां इनमेसे एकौनदीखे य-
ह लुप्त उपमासो आठप्रकारका है उसको नीचे खुला लिखते हैं.

२ वाचकलुप्त ३ धर्मलुप्त ४ धर्मऔ वाचकलुप्त ऐसेही औ
रभी जानना.

डलसहित आकृतधर्मसुआहि ॥ कोइ कोइ गुन आकृतदहुं अरथनवीचसराहि ॥ ११ ॥ मृदु १ कठोर २ चंचल ३ अचल ४ सुखद ५ दुखद ६ गतिमंद ७ ॥ अबल ८ बली ९ सत्य १० असत्य ११ मति १२ अगति १३ सदागति १४ कंद १५ ॥ हरिवो १६ भारि १७ क्रूरस्वर १८ सुस्वर १९ मधुर २० दंत २१ रूप २२ ॥ सीत २३ तपत २४ जुकहत है गुण सधर्मकविभूप १० ॥ उदाहरन इन सबनकों कीनों केसवदास ॥ कछुयकमेंहू करतहूं समझहु बुद्धिनिवास ॥ ११ ॥ ॥ वर्णधर्मोदाहरण ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ श्वेत कृष्ण अरु अरुण जुत पीत हरि रंग विचारि ॥ चारहुकी अब करत हों उदाहरन उच्चार ॥ १२ ॥ श्वेतोदाहरनं ॥ ॥ घनाक्षरी छंद ॥ ॥ वलबकहीराकुंद पुंडरीककांस भस्मकांचु आहि खांड हाडकरि काकपास गनि, चंदनचवर हंस सत्यजुग दूधसंख उडगन फटिकसी पचूनो ससिसेस भानि ॥ गंगोदकशक्र क्रस्कधाशारदा सरदसिंधुसतो गुनसंकरसुदर्शन फटिकमनि ॥ सांतीहास्यउच्चीश्रवानारदअरुपारदतें उजरे अधिकमन ऐसे हरिदास धनि ॥ कृष्णोदाहरन ॥ कलीकाककोकिलकचकीचकाचककी क्रोध करीकाली कत्याकोलकज्जलकलंक मानि ॥ कृष्णकामकलहकुसंगकालकूट करा कुजसकरबालतमपापपुंजलौं बखानि ॥ बध्याचलतालप्र-

---

१ केशवदासजीने कविप्रिया औ रसिकप्रिया दोनो ग्रंथोमे इनके उदाहरन अच्छीतरह किये हैं जिसको विशेष देषना समुझना होय सो उन ग्रंथोमे देखना. स्वरूपदासजी कहते हैं कि थोडेसे मैंभी कहताहों सो बुद्धिमानलोग समुझलेना. २ प्रथम कहा कि धर्म तीन प्रकारका है. एक वर्ण दूसरा आकृति तीसरा गुणधर्म तीनमे प्रथम वर्णधर्मको देखाते हैं.

छ्व्यासवनव्यालवोमद्रौपदीजलदजांबूजमनाअनंतवानि ॥ सुस्कशृंगाररसनिरयनीलतेलहुतैकारेअधिकहरिविसुखनकेहृदैजानि ॥१४॥ ॥ रक्तोदाहरन ॥ ॥ रसनाअधरपलकिदुरीप्रकीद्रगंततक्षकसिंदूरऔरहिंगरूबरवानहे ॥ दाडमपलासकासमीरओजसूलफूलसारसरुकुरकुटकेसीस अनुमानिहै ॥ मानकुषघोतइंद्रगोपकुजपावकहैकिसलैमजीठरक्तचंदनपिछानहे ॥ रोद्ररसमहावरगेरूरुधिरसंध्यारजोगुनीविषयनकोऐसोमनजानिहे ॥१५॥ ॥ पीतोदाहरन ॥ ॥ वैनतेयवानरविधाताऔरवासवजेहरदहरतालरंगहाटिकसूहायोसो ॥ चक्रवाकचंपकहैचपलाचमेलीसोनगोरोचनगायमूत्रह्लादुरवतायोसो ॥ पीतरपरागमेरुगंधककमलकोसकेसरकोरंगसोकवीसूरनगायोसो ॥ वासुदेवपीतवासकंसकाजकटिकस्यो इनतेंविसेषसून्योवीररसछायोसो ॥ ॥१६॥ ॥ इतिवर्णोदाहरन ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥ त्रियकेनीदरकोपअहार ॥ द्रगपुतरीअणुलघुउच्चार ॥ वामनदंडमेरूदातामन ॥ आतमचितद्रष्टीदीरघगन ॥ त्रियचीताकेहरकटिकेस ॥ सूछिममायाब्रह्मविसेस ॥ त्रियनितंबकुचकरिकुंभस्थल ॥ पुष्टकीयेवरनतजेकविभल ॥१७॥ भूहकटाक्षअलकधनुअहिगति ॥ कोलदातवक्रकुटिलनकीमति ॥ तोमरबाणदीपस्थिरनासा ॥ सरलमतीजेहरिकेदासा ॥ आननअंबुजप्रेमप्रकास ॥ संपूरणआदरसअकास ॥ चकरीचक्रआलातचक्रगनि ॥ फिरआवर्तकुलालचक्रभनि ॥ कुचकिंदुकचीलादिकइंडा ॥ सुव्रतऔरकहियेब्रह्मांडा ॥ महित्रिकोणअ

१ इहांसें आकृति धर्मके रूप देखावते है.

रुवज्रसिंधारै ॥ पांचतत्वलज्जागुरुधारे ॥ नैनबाननरवतोम
रतीछन ॥ मंडलमुद्रिकाकुंडलकंकन ॥ १८ ॥ ॥ इतिआकृ
तिः ॥ ॥ किसलयकुसमहरिजनकोमन ॥ वालककविबा-
नीमृदुतागनि ॥ उपलअस्तिकूरमकीपीठ ॥ वज्रकठिनपुनि
दुरजनदीठ ॥ मीनमधुपमरकटमनमाया ॥ छलसुपनोजो
बनघनछाया ॥ विद्युतमारुतचलदलकेदल ॥ ध्वजपटतिय
चषआदिकचंचल ॥ अचलमेरुध्रुवसंतनकोचित ॥ सुथल
सपूतसतीयसुरवदमत ॥ कुव्रतकुबामकुबुधिकुस्वामी
॥ वृषाप्रवासादिकदुरवगामी ॥ कुलत्रियहासमदहस त्रिय
गत ॥ अबलपंगुअरुगुंगरोगजुत ॥ अंधछुधातुरत्रियअ
रुबालक ॥ बधिरअनाथतिनहिहरिपालक ॥ बलीभीमहनु
पवनकालजम ॥ सत्यब्रह्मसबजगतझूठभ्रम ॥ जीवहिंव
गिराविधिकीमति ॥ क्रवनभयावरसबहिअनगति ॥
जलप्रवाहमनमरुतसदागति ॥ फूलतूलतृनफेरफरेअति
॥ हाटकपारदसीसोपरबत ॥ इनकूंकविभारीकरबरनत
॥ काकउलूककोलमहिषीरवर ॥ शिवाकरभआहिआदि
क्रूरस्वर ॥ कोकिलशिरवीवीणसुकसारो ॥ सुस्वरमिष्टउषा
दिकधारो ॥ गोरिगनेसगिरीसगिराको ॥ रविदोऊरामदान
कहिताको ॥ नलदमयंतीसीताराम ॥ रूपअश्विसुतरतिअ
रुकाम ॥ चंदनचंदकपूरसाधुसंग ॥ तुहिनपवनकोहैसीत
लअंग ॥ दिनमणिचित्रभानुपरोग ॥ औरतपतप्रियतम-
कोसोग ॥ १८ ॥ ॥ इतिगुन ॥ ॥ आक्रतोदारन ॥

१ इहांसे गुण धर्मके रूप दरसाते हैं.

॥ ॥सवैया॥ ॥लघुक्रोधअणूमनदीरघमेरुहरीकटिकुं भकरीकुचहैतन ॥जुगभ्रूहधनूंस्थिरदीपकनासिकाकंचमुखी चकरीहरिकोमन ॥कुचकंचनकिंदुकलालस्यंधारैमहागुरु लागहैवाणसेलोयन॥करकंकणमुद्रिकाकुंडलराधेकेमंडलओ पमाआकृतएगनि ॥१९॥ ॥गुणोदाहरण॥ ॥पंकेजसेप दहीरकनीरदमीनसेनैनहैसंतनसोचित ॥ पीवपतिव्रतआधिन व्याधिनहंसगतीअबलानमेंभूषित ॥ कालरूपेबलब्रह्ममनोव्र तमायाकोफेलविरंचहुपैमति ॥ व्यामेविनागतिस्त्रष्टसदागति फूलतेंफोरीहैभारीगिरीगति ॥२०॥ काकसीनासुरकोकिल सोस्करदाखसीबानिमहेश्वरसोदत,गोरिसोंरूपहैसीततुही नसोतापदिनेससोराधिकाराजत जाक्रमदोहनबांधईताक्रम बीचसवैय्यानसोधिमहामति दासस्वरूपविचारकेदेखियेआ कृतओरसुभावहुकीगति ॥२१॥उपमेयकूंउपमानहींहोयत हांअनन्वयअलंकार॥ ॥दोहा॥ ॥काउपमादेंआपकूं भोक श्यपसुतभान ॥उपमालगेसुआपकी आपसद्रसकोआन ॥ ॥२२॥दोषकूंगुनमानलेनोसोअनुज्ञाअलंकार॥ एकभावकूं दबावतदूजोभावप्रगटेसोभावसात्यकहियेदोऊकोउदाहरन ॥दोहा॥ ॥मीचदुखदजानोमति महागुरूहैमीच॥अूपद्धा

---

१ इस सवैयामे आकृति धर्मके उदाहरन हैं जैसे कि राधेका क्रोध अ णूसरीखा लघु है औ मन मेरुसरीखा बडा है इहां अणु औ मेरु ये आ कृत हैं. २ गुणके उदाहरण देखाते हैं तहां पंकजसे पद इस वाक्यमे धर्म लुसोपमलंकार सिद्ध होता है इसमे कोमलता धर्म है पंकजसे कोमल पद. ३ जहांउपमेयको उपमेयहीकी उपमा दीजाय उसको अनन्व यअलंकार कहते हैं जैसे आपसे आपही हो.

सुसासमरतां नरहरिसकमरैंनीच॥२३॥ एकठोरएकवस्तुमेंगुनश्रौगुनमानेसोलेखश्रलंकार हरषविषादविरुद्धभावकीसंधिदोउकोउदाहरन॥ ॥दोहा॥ ॥छिनछिनउमरघटतलखि भयोहरषश्ररुसोक॥ धुनितबकताश्रवस्थालखिहैंबुधजनलोक॥२४॥ ॥श्राकृतवरननजातिश्रलंकार चेष्टावरननस्वभावोक्तिश्रादिकोपदश्रादिश्रंतकोश्रंतयथाजोग्यउदाहरन॥ तैंतथासंख्यश्रलंकारविषादभावोदयःचारहुकोएकत्रउदाहरन॥ ॥दोहा॥ ॥क्यूंसिंधारसोंधौंपहरिकियतियरागउच्चार॥ श्रंधरोपीसनजुतबधिर हैंपियपरषणहार॥२५॥ निंद्यामेंस्तुतिसोव्याजस्तुति श्रलंकार चिंताभावसांति॥ ॥दोहा॥ ॥हैंरिकठोरदासनिकरत निरधनश्ररुनिहकाम॥ दासश्रूपबकसतदुयनि धर्म्यनदुरलभधाम॥२६॥ ॥स्तुतिमेंनिंदाहोइसोव्याजनिंदाश्रलंकार॥ ॥गेहपधारौंसासकह श्रहोबहूजीश्राप॥ह्वारदेहरीक्यूंखरी ऐरीसुकुलश्रपाप॥२७॥ याकौंविपरीतलछनाभी कहतहैंबहुवाची॥ श्रतिस्वारथकारणकेलियेपदफेरफेरग्रहण होइसोएकावलीश्रलंकार॥ पदपदनूतननूतन तरू तरुतरुकोकिलखंड॥ षंडषंडप्रतिमधुरस्वर स्वरस्वरमदनप्रचंड॥२८॥ यामेंपदमुक्तग्रहण मुक्तग्रहणहोइ पदफेरफेरग्रहणतोवीपसामेंपणहोतहैं कारणमालामेंभीहोय॥ ॥दोहा॥ ॥

१ इहां जो कहा कि हरि श्रपने भक्तको निर्द्धन श्रौ निहकाम करते हैं श्रौर धर्म धाम ये दो पदार्थ नही देते है इसते कठोर हैं इसमें निंदामें स्तुति है श्रर्थात् सर्व श्रेष्ठ मुक्ति देते है कोमल हैं. २ इस जगह सकल कहनेमें स्तुतिमें निंदा है श्रर्थात् दुष्कुल.

आदरऔरविषादमें दैन्यक्रोधविन्चमानि ॥ एकहिपदकैभ्र
यबरवत यहैवीपसाजानि ॥२९॥ धन्यधन्यतुमधन्यतुम रघु
वरदसरथनंद ॥ तिष्ठतिष्ठनिसचरसमर कहिसबकियेनिकं-
द ॥३०॥ करतासाधकऔरभोक्तासिद्ध औरततेसुसिधअ
लंकार ॥ रागवागत्रियपदअतरषट्रसनवरससोय ॥ कर-
तासाधेकष्टकरि भोक्ताऔरहिहोइ ॥३१॥ गुणदोषको
करताएकभोक्ता अनेकसो प्रसिद्धाअलंकार ॥सत्तहरिचंद
राजानकेपुरकियस्वर्गप्रयान ॥ तसकरतारावनकरीगयेकुटुंब
केप्रान ॥३२॥ ॥अर्थापत्तिअलंकार॥ ॥बहेजातगज
राजजित कितचीटीकूंथाह ॥ दरसैअघहरगंगजल परसैअ-
द्भुतराह ॥३३॥ ॥मिथ्याधिवसत्तीअलंकार॥ ॥निरज
लथलबोएअरक अंबचढैजोहाथ ॥ ज्ञानभक्तिवैरागबिन त
बहरिमिलैसुथान ॥३४॥ ॥जापदार्थकेजतनकूं ढूंढतेसो-
ईपदार्थमिलै तीसरोप्रहर्षणालंकार ॥ ॥दोहा॥ ॥ढूंढतजा
कारनगुरू पायेहरिमहराज ॥ चारपदारथआदिहै भयेसक
लसिधकाज ॥३५॥ ॥प्रश्नउत्तर होइतेप्रश्नोत्तरअलंकार॥
॥ हेगुरुकबपावैस्र हरिदासनकूंकलिकाल ॥ भक्तिसदय
वैरागमन ज्ञाननिरापरबचाल ॥३६॥ ॥विरुद्धकारणतें
कारजकीप्रकटत्तापंचमीविभावनाअलंकार॥ ॥नईलगन
लखिजोरखषगईअंगुष्ठबताय ॥ मुद्राजोनटवेमई भईवयाने
भाष ॥३७॥ ॥सांटेमेंथोरोदेकेबहुतलेसोपरव्रत्तअलंकार
॥देकटाछहरितनकसीलीनेमनधनप्रान ॥ बुधविचारसरव

---

१ हे गुरु कब पावै हरि यह प्रश्न भक्ति इत्यादिक पद उत्तर भये यासे प्रश्नोत्तरअलंकार भया.

देंचुकी सबकुलमानसयान ॥ ३८ ॥ निजगुनतजिगुनसंगको गहैसुतद् गुनजानि ॥ संगतितैंगुननालगै ताहिअतद्गुनमानि ॥ ३९ ॥ दुष्टसाधव्हैसाधकी संगतिकरिपलआध ॥ दुष्टसंगकरिसदयदिल होतनसाधअसाध ॥ ४० ॥ ॥ संगततैंपूर्वगुन वृद्धिपावैसोअनुगुनाअलंकार ॥ ॥ आगैंहिहनूअगाधबल पायरामसिरदार ॥ छिनमैंकुलनिसचारकोक्यूंनकरैसंहार ॥ ४१ ॥ उत्प्रेच्छामनुजनुसबद बस्तुहेतुफलहोइ ॥ औरैऔरैसबदजहँ भेदकातिहैसोय ॥ ४२ ॥ हरिपदमानोकंजहै सियमुखवैजनुचंद ॥ कविमुखकीबानीनकूं औरेपटतअनंद ॥ ४३ ॥ यहनहियहसोअप्रुती दूज्यूरूपकजानि ॥ किधौंशब्दकिंसब्दतहां संसयकहतबखानि ॥ ४४ ॥ बदरानहियें कामके तनेवितानाविसाल ॥ बालकिधूंहाटकलता किधूंकेतकीमाल ॥ ४५ ॥ हैउल्लेखसोई एककूं बहुसमझै बहुभाय ॥ त्रियनिकामहरिसंतहित कंसहिकाललखाई ॥ ४६ ॥ ॥ काहुकोगुनदोषकाहुपैपरैसो विधकरणोक्ति तामैअंतरभूत प्रथमकोअसंगति कारण कारजकहूद्रष्टांततीनूंका एकत्रउदाहरन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दूतपणोलोयनकरै मनपावत हैताव ॥ षोडभईपदउंटकै दीजैरवरकैडाव ॥ ४६ ॥ एकक्रियापदकूंतथादेहरीदीपवतपदकूंबहुबेरअर्थकरताग्रहणाकरैसोएकानेकोअलंकार ॥ ॥ हरिस्रुदयानाहिंबिसरही अदयात्रीयासदैव ॥ साधुजगतपतिस्यामको जीवकाही

१ इहां साधुके संगसे दुष्ट हू साधु होता है इसमे यह आयाकी साधुके गुण ग्रहण किया इसतें तद्गुन भया औ दुष्टके संगतसे साधुअसाधु न भया यह अतद्गुन भया.

कौजीव ॥ ४७ ॥ ककारतैंनास्ति, ककारनकारतैंआस्ती अर्थ धुनितैंआवेतो काकोक्ति अलंकार ॥ ॥ अग्निकीतृपती काष्ठ तें सिंधुकीसरितापाय ॥ कालकी भक्षण भूतके नरतें त्रियनअघाय ॥ ४८ ॥ एकभागग्रहैंतेंसेषभागजाएयोंजायसोसेषभाग ज्ञापकालंकार ॥ एकभावकेग्रहणतैंअन्यभावक्रैत्याग ॥ होय कीग्रहयोत्यागतें एकग्रहैबहुभाग ॥ ४९ ॥ यापरिषदमें एक-हीयहै विदुषकरिजानि ॥ वापरिषदकेंबीचमें मोहिअज्ञतुमा नि ॥ ५० ॥ सुरतरुआदिकवनस्पति वागसुनंदनमांहि ॥ बिनय आदिसुभगुणसकल होयअधममेंनाहि ॥ ५१ ॥ एकोन्येकशेषभागज्ञापक येदोनूअलंकार नवीनहै ऐसेहीनवीनभूतभ-विष्यवर्तमानपरोक्षप्रतक्षउत्तममध्यमकनिष्ठकारणकारजआधारआधेयलोमविलोम भेदतेंबोहोत भेदहोतहैबहुनाकिं ॥ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ द्रव्य९ औरगुण२४ कर्महैं ५ पुनिसामान्य विसेस ॥ हैसमवाय१ अभावलौं सप्तपदार्थअसेस ॥ ५ ॥ भू१ आप२ तेज३ वाय४ मन५ दिसा६ काल७ अकास८ आत्मादि९ नवद्रव्यहै गुणकोआश्रयभास ॥ ५२ ॥ कवि० ॥ रूप१ रस२ गंध३ स्पर्श४ संख्या५ परिमाण६ आदपृथक७ संजोग८ औविभाग९ गुनगाइये ॥ परत्व१० अपर्त्व११ बुद्धि१२ सुख१३ दुख१४ इच्छा१५ द्वेष१६ प्रयत्न१७ गुरुत्व१८ औद्रवत्वकरिमानिये ॥ सनेहत्व२० संस्कार२१ धर्म २२ अधर्म२३ श

१ इहां यह अर्थ है कि अग्निकी तृप्ति क्या काष्ठसे होती है अर्थात् नही होती है सिंधु जो समुद्र सो सरिता याने नदी पायके क्या तृप्त होता है अर्थात् नही इसको काकोक्ति कहते है. २ आपजल. ३ अग्नि. ४ कालसमय.

व्य २४ चतुर्विंशसंख्यामतन्यायतेंवरवानिये पांचकर्म है सा
मान्यविशेषअनंतविध चारहैअभावताहिटीकाते पिछानिये
॥५४॥ वार्ता उत्क्षेपण अपक्षेपण आकुंचन प्रसारण गमन
एतानि पंचकर्माणि सत्तारूपं परसामान्यं जातिरूपंअपरसा-
मान्यंप्रागभाव प्रध्वंसाभाव अन्योअन्याभाव अत्यंताभाव
सप्तपदार्थनविषेद्रव्य गुणकर्मकेसमवायएकताभयेजातीभ
यीसामान्यत्वतेंनामेविक्तिभई विसेसत्वजातीगोतजानेनाम
रूपजान्योजाय शृंगपुछकंबलई हैरूपगायंनाम विक्तिविसेसज्ञा
नकालीपीलीधोलीखांडीबांडी भीडी इत्यादिसर्वपरजातीनाम
रूपलग्योहै. तानेशब्दप्रतिपहचानियेआप्तवाक्यंशब्दंआप्तजा
थार्थवक्ताकोवचनवाक्यपदनकोसमूहयथागामानयशुक्लादंडे
नेतिशक्तंपदंअस्मात पदादयमर्थोबोधव्यंइतिईश्वरशक्तिः घ
टकहेते घटजान्योजाय पटनहींजान्योजायडहैईश्वरशक्तिः ४९
आकांक्षा योग्यतासंनिधिश्च वाक्यार्थज्ञानहेतुः पदस्य पदांतर
व्यतिरेकप्रयुक्तान्वयाननुभावकत्वमाकांक्षा अर्थाबाधोयो-
ग्यतापदानामविलंबनोच्चरणंसन्निधिआकांक्षादिरहितवा
क्यंनप्रमाणंयथागौरस्वपुरुषोअस्तीतिनप्रमाणंआकांक्षावि
रहात् अग्निनासिंचेदितिनप्रमाणंयोग्यताविरहात् प्रहारे २ स
होच्चारितानिगामानयेत्यादिपदानिनप्रमाणंसान्निध्याभावात
म्॥५६॥ ॥दोहा॥ निर्कांक्षारुअयोग्यता असान्निध्यतात्या-

---

१ ये प्रकरण न्यायशास्त्रका है जहांसे सप्त पदार्थ निर्णय किये हैं उ-
हांहीसे सो प्रथमती इसका इहां बडा प्रयोजन नहीं परंतु ग्रंथकर्ताने
आपकी नैयायकता देखानेके वास्ते लिखाहै जो व्याख्या करैं तो विस्ता
र ग्रंथसे दुना होयगा इसवास्ते नहीं किया.

गि ॥ होवेसबदसमूहते आसवाक्यसुनित्यागि ॥ ५७ ॥ अव्या सिअनिव्यासिपुनि दोषअसंभवहोय ॥ इनतिनहूंकूंसमझिकरस ब्दव्रतिकोजोय ॥ ५८ ॥ गो १ हय २ सींचहुअग्निकरि ३ प्रहरांत रउचार ४ गोकपिलागोसृंगते ५ गोइकरखुरतैंधारि ॥ ५९ ॥ पद १ पदांस २ वाक्यार्थ ३ जेरस ४ दूषनविधिपंच ॥ इनकेअंतरभू तहै समझहुबहुरकनिरंच ॥ ६० ॥ वार्ता इनदोषनरहित शब्दप्र तकूंविचार वोसब्दव्रती ३ रूढियोगरूढीयोग्यकरूढ्याप्र छकोटूटजाकूंदिष्टकहिये अर्थरहितवाहिटूटेमेंवरतेंसोरू- ढीपंकजकमलपयोदमेघपंकसूंप्रकटहोय ॥ औरइतेंपंकज नहिंकहाय जलकेदेनहार औरतेंपयोदनहींकहाय विनामेघ सोजोगरूढजलज कमलकूंभीकहिये इंदुमुक्तादिककूंभीक हीये औरनाविषेंहूअर्थवरतेंजातेंयोग्यकमुख्यार्थछोडे तथा मुख्यार्थलग्योरहै उपरतेंहुआवेसो लछना गंगायांघोष. गं गाशब्दः अभिधानविसे अर्थछोडतीरकोअर्थग्रहणकरेसो लछना. तटकेविषेसीतलतापावनताआदिध्वनि अथचतुर्वि धिरीतिसब्दालंकार॥ ॥दोहा॥ ॥ध्वनीआत्माकाव्यकौ क हतभरतमतग्रंथ ॥ कहतआत्मारीतकौ वामनमतकोपंथ ॥ ६१ ॥ काव्यकोआत्मारसहै इतिसिद्धांत ॥ गोडीकेविचवोजगुन लाटीगु नपरसाद ॥ वैदर्भीपांचालिविच गुनमाधूर्यसवाद ॥ ६२ ॥ ॥ अथगोडी ॥ ॥ वर्णसंजोगिटवर्गमय रचनाबंधनछंद ॥ अर्थ जुबहुतसमासतें गोडीकहतकविंद ॥ ६३ ॥ समासलछन ॥ सोतें १ नें २ करि ३ औंअरथ ४ तें ५ कौ ६ मैं ७ नसमात ॥ वाह

---

१ जिस छंदमे टवर्ग याने ट ठ ड ढ ण ये वर्ण बहुत संयोगी होय औ अर्थ बहुत समासते होय उसको गोडी कहते हैं.

रिसातविभक्तिको अर्थसमासलिखात ॥ ६४ ॥ भाषामेंइकब हुवचन नहिंद्विवचनकहाई ॥ हैस्त्रिलिंगपुलिंगहैं नपुंसकनाहीं लखाय ॥ ६५ ॥ ॥ गोडीकोउदाहरन ॥ ॥ तेडीऐंठतभू हटिग दिलहीअमैठतदीठ ॥ डूबगइ छबिमोइद्रग करताढिठा ईढीठ ॥ ६६ ॥ ॥ अथवैदर्भी ॥ ॥ विनसमासकिसमा सकम सानुस्वारबहुवर्न ॥ नहींटवर्गसंजोगनहि वैदर्भीउ च्चर्न ॥ ६७ ॥ ॥ उदाहरन ॥ ॥ फंदगयंदनिकंदकर जग तबंदव्रजचंद ॥ मंदमंदमुसकतमधुर नंदनंदसुखकंद ॥ ६८ ॥ गोडीवैदर्भीमिलैं पांचालीसोजानि ॥ वर्नसजुगअनु सारजुत सदमतकरनबखान ॥ ६९ ॥ चिंतमिंतअंतरलग्यो वृंदवृंदव्रजबाल ॥ मंजनअटतनविसरत गंजनकंसगुपाल ॥ ७० ॥ ॥ अथलाटि ॥ ॥ जामेकोमलपदभरे लगतस वादपढंत ॥ लाटीरीतिसुकहतहैं विदुषमहागुनवंत ॥ ७१ ॥ ॥ उदाहरन ॥ ॥ गिरिगिरितरुतरुसुधरहरि वजतमधुरसुर वैन ॥ ललतलाललोयनलखत ललचतललकतनैन ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ अथसष्टानुप्रास एकवरणकी किंवा बहुतवरनकीब हुवेरसमताहोई सोवृत्यानुप्रासः ॥ बहुवरनकीबहुवेरसमता ॥ दोहा ॥ ॥ कंजनमदगंजनकरें अंजनमंजनऐन ॥ खजन शिवभंजनखतम नितहरिरंजननैन ॥ ७३ ॥ ॥ एकवरनकी बहुवेरसमता ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गुनगनअरपनकरिदिये तन मनधनअरुप्रान ॥ जनसुखघनप्रदरामजी सुनिमुनिभयेस यान ॥ ७४ ॥ अथसहितपदपलटैंभावमेंभिन्नहोइसोलाटानु

---

१ जहां समास न होय अथवा समास थोडे होय औ जहां अनुस्वारयु-क्त वर्ण बहुत होय औ टवर्ग संयोगी भन होय उसको वैदर्भी कहते हैं.

प्रास॥ ॥दोहा॥ ॥तीरथव्रतसाधनकहा जोनिसदिनहरिगान ॥तीरथव्रतसाधनकहा बिननिसदिनहरिगान॥७५॥ ॥ अनेकवरनकीएकएकवेरसमताहोयसो छेकानुप्रास॥ ॥राग वागरचनारुचिर पूर्णचंदसुखकंद॥ वामकामप्रदहैंविभो एह मेचहतअनंद॥७६॥ ॥सबदएकहीवारवारआवे अर्थऔर होयतेजमकानुप्रास॥ ॥सोरठा॥ ॥अच्छरपदविचहोय नाहिताकोअव्ययेतगन॥सव्ययेतेहैसोय अच्छरतेंपदभिन्नता ॥७७॥पूर्वार्द्ध॥ ॥अव्ययेतेंउत्तरार्द्धसव्ययेतेंउदाहरन॥ ॥ दोहा॥ ॥समरिसमरिदनुकुलतपन गायगायद्विजपाल॥ ताकेपाइउपाइतजि करतसकअकरतचाल॥७८॥ अत्यानु प्रासतुकांतकुंकहे सबछंदमेंहोतहै श्रुतिअनुप्रासएकवर्गकेव रनछंदचरनमेंवहोतसधेंजाकोसाधारनलछनकुकहतहै॥ ॥ दोहा॥ ॥भानुभीमभगवतभवा भारथिपुत्रभवेस॥भगत कालत्रयत्रयभवन बकसहुमंगलवेस॥८०॥ ॥अथरसन कीसुचिनका॥ ॥अथसत्रुमित्रस्थाईस्वामीरंग॥ ॥दोहा ॥ ॥सत्रुविभत्ससंगारको करुणासत्रुविचार॥भयरुसांति हुसत्रुहै हासिसुमंत्रनिहार॥८१॥मित्रविभत्ससहासिको भ यरससत्रुसमान॥मित्ररौद्रहैकरुणको हासिमहारिपुजानि॥ ॥८२॥भयरसहैरिपुरौद्रको वीरमंत्रकरिजानि॥सांतिकरुन रिपुवीरके अदभुतमंत्रवखानि॥८३॥ उदैहोतुनिर्वेदजल दस रसथाईलोन॥ तातेंरिपुसबरसनको सांतमुख्यसवगोन॥

---

१ इहां रसोंकी शत्रु मित्रता जो कहि है इसका प्रियोजन यह है किमि त्रपरे शत्रु रसन आना चाहिये इनके भेद रसतरंगिणीमेंहै जो इहां लिखें तो ग्रंथ बढेगा इसवास्ते नहिं लिखते हैं.

॥८४॥ एकादसरसदासकीस्थाईबिगरैसोई॥ भक्तिजुक्तनि र्वेदविषें ज्ञाननिर्वेदविषें विनयहुकौनासहै वेदांतमततें ॥ ॥८५॥ ॥अहंब्रह्मास्मीति॥ ॥दोहा॥ ॥रतितेंपुष्ट सिंगारहै हांसीहास्यविचार॥करुणापुष्टहैसोकतें रौद्रक्रोध तेंधारि॥८६॥वीरपुष्टउच्छाहतें भीतितेंभयजानि॥निंधा सहतविभत्सहै विसमेअद्भुतमान॥८७॥सांतिपुष्टिनिर्वेद-तें दासस्वरूपअनूप॥ रसननस्थाईभावविन भनतसवैकवि भूप॥८८॥दास और सख्यत्वहै वात्सल्यरसकरजोय॥ वि नपरहास्यममत्वहै स्थाईद्वादसहोई॥८९॥स्यामसिंगार रूकामपति वामनपतिसितहास॥करुणाधूसरजमयती रौद्रलालसिवदास॥९०॥ वीरहेमरंगइंद्रपति भयकालोप-तिकाल॥हर्योविभत्समहाकालपति सांतिस्वेतहरिपाल॥ ९१॥अदभुतपीतरुवीर्यपति नवरसस्वरूप॥चारषानिवि चिस्रनिलिखे कहेप्रगटकविभूप॥९२॥सबदसपरसरूपर स गंधपंचविषयानि॥सांतिकथाईऔररस इनविचप्रग टतआनि॥९३॥ हैविभावअनुभावजे सांतिकसंचारीन ॥स्थाईआदिकसमझियो रसनचीन्हपरवीन॥९४॥ ॥अथ सात्विका०॥ अश्रु१ प्रलय२ वैवरनता३ स्थंभ४ कंप५सु रभंग६॥ स्वेद७ पुलिक८ ज्रंभा९ गिनो१ तंद्रित१०जुत

---

१ अहंब्रह्मास्मि इसवाक्यको अर्थ यहहैकि मैंब्रह्मात्मक हौंअर्थात् ब्रह्म मे-रा अंतर्यामि है मैउसका शरीरभूत हौं जैसे प्रकृति मेराशरीरहै तैसे मैंब्र ह्मकाशरीरहौं शरीरवाची शब्दोंका अंत शरीरीहीमे होताहै जैसे यहमनुष्य प्रथम देव भयाथा पुण्य क्षीण होनेसें मनुष्य भयातौ देव आत्मासे था कुछ इसीशरीरसे तथापरंतु अंगुलीइसी शरीरकेसामनेकरी ऐसेही इहांभीजानो.

दस अंग ॥ ९५ ॥ ॥ अथ संचारि छप्पै ॥ ॥ है निर्वेद १ रु ग्लानि २ संका ३ ग्रब ४ चिंता ५ कहिये ॥ मोह ६ विषाद ७ रु दैन्य ८ असूया ९ आलस १० लहिये ॥ संद ११ सम्भ्रती १२ उनमाद १३ हरष १४ श्रम १५ लाज १६ चपल १७ धृति १८ ॥ जडता १९ भय २० आवेस २१ सुप्न २२ निद्रा २३ औत्सुक्य २४ मति २५ ॥ अवहित्था २६ बोध २७ अरु उग्रता २८ व्याधी २९ विषाद ३० वितर्क ३१ मृत्यु ॥ ३२ है अपस्मार ३३ कूं आदि दे संचारी तेतीस हितु ॥ ९६ ॥ ॥ नवरसानुभाव ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मन अरु वदन प्रसन्नता मंदहास्य मधुवेन ॥ ऐ शृंगार अनुभाव है मोदजुक्त चलि नैन ॥ ९७ ॥ आदि रूप तजि और होय वचन रु अंग विकार ॥ स्वर भंगादिक प्रगट व्है रस हास्य प्रकार ॥ ९८ ॥ दीर्घ निसास रु रुदन तें मूर्छा दैन्य विलाप ॥ करुना के अनुभाव है भूमिपतन संताप ॥ ९९ ॥ कर तें पूंछे कोमलन अधर डसन अरु कंप ॥ शस्त्र तोल वी रौद्र तें मुख च्चख वरन विलूप ॥ १०० ॥ सौर्य धैर्य प्रगलभ वचन सात्विक रामांचादि ॥ वरन प्रसन तें वीर कौ प्रगट कहत कवि आदि ॥ १०१ ॥ कंप्च रन कर अंग सिर चष चकित थिर काय ॥ स्रुस्क अधर कंठ तालु भय रस यह जान्यो जाय ॥ १०२ ॥ नाना आनन संकुरित चष मुख छादन होय ॥ वार वार थूकल रहै विभछ प्रगटता जोय ॥ १०३ ॥ वाह वाह हाहा तथा गदगद वचन प्रभाव ॥ अहो चरनन को फूलवो अद्भुत रस अनुभाव ॥ १०४ ॥ अधो द्रष्ट उनमत वा जगतें व्रत उदास ॥ निज मुख निंदा आपकी

१ अब इहां नवो रसों के अनुभाव कहते हैं अनुभाव उसको कहते हैं जिसमें रसका रूप दिखने लगै अर्थात् रूपका अनुभव होने लगै.

हैरससांतप्रकास ॥५॥ शब्दतेंश्रृंगाररस ॥ ॥तीनकान्ह केगानकी परीकानमेंश्राय ॥जबहीतेंवृषभानजा भईचित्र केभाय॥६॥ ॥सपरसतेंश्रृंगाररस॥ ॥दोहा॥ दुलहनिको पहेरायदी मोहनतोमर माल॥स्वेदकंपस्थंभनपुलक लख्यो ताहिछिनलाल॥१०७॥ ॥रूपतेंश्रृंगाररस॥ ॥जबदेखिवृ षभानजा हियविचउठीहूक॥ वंसीश्रोठनपेरही फेरलगीनहिं फरुक॥८॥ ॥रसतेंश्रृंगाररस॥ ॥वाप्यारीकेहोटको पानकीयोर सपीव॥कहेसुनेनहलैडगे जबकोउऊक्योजीव॥९॥ ॥गंधतें श्रृंगाररस॥ ॥प्यारीकेश्रंगरागकी गंधलपटभोज्ञान ॥ध्या नलगेलोयनटपे कबकेठाकेकान्ह॥११०॥ऐसेहीपंचोंदीपन सवर समेंजानिये नवरसएकत्र ॥छप्पै॥ गिरजाश्रंकसिंगार कीर्तिमु खकाजकरुणमय ॥विभत्सरुंडकीमाल भूतश्राभरनउरग भय ॥श्रसंभावश्रदभूतज्वलनचखपंचसीसजल ॥रौद्रदक्ष- क्रतुनास भूततनसांतिरूपभल॥गनवीरभद्रजुतवीरमयहास नगनतन विमलजस ॥उरस्वरूपदासधर ध्यानश्रबराजतशि वतननवहिरस ॥१११॥ ॥अथश्रंगहीनथाई॥ ॥कबि त॥ ॥भीलनीमेंप्रीतिद्विजकेंदसिंहपे उछाहमोतीमीतगयेपा येंविस्मयनमानतूं॥ पीकलीकश्रंगनाकेश्रंगपेंगिलाननाहिं सारिहुंजितेकस्यालक्रोधनावखानतूं॥भिक्षाकाजेगावतवय रागनिरवेदनाहिकदलीमरोरेगजकरुनानजानतूं॥ याहिविधिस्व रूपदासश्रौरेरसजितेश्राहिश्रंगहीनगिनलेंस्थाईजोसथान

---

१ गानकी तान यही शब्द इसीमें श्रृंगार देखायाहै. २ माला पहिरा ते सें छातीपे हाथलगा जिससे कंपादिकभये यह श्रृंगाररस. ३ इहां श्री- शंकरजीके श्रगमें नवोरस एकठेकाने देखाते हैं.

नृ ॥ ११३ ॥ ॥ अथ रसाभास ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जुद्धपि नानें पूतकौ अनुचित सो रसभास ॥ रमण अगम्या नारितें गुरु जनसें तीहास ॥ ११४ ॥ ॥ इति श्री पांडवयशेंदुचंद्रिकातृतीयमयूखः ॥ ३ ॥ ॥ छ ॥ छ ॥
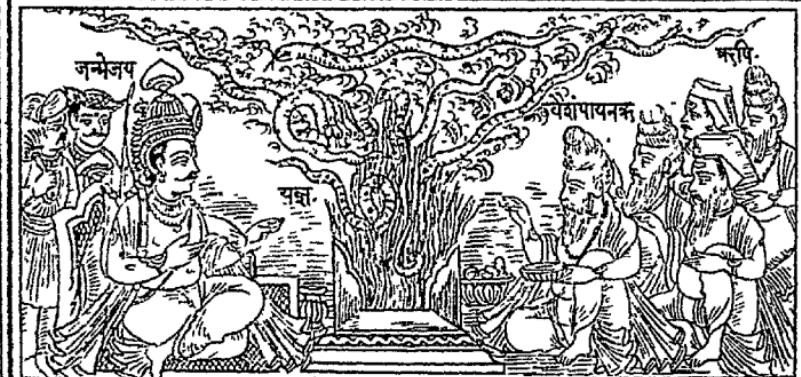
श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ अथवैचित्रवीर्यवंसकारकभारथग्रंथ कारकश्रीवेदव्यासोत्पत्तिः ॥ ॥छंदपद्धरि॥ ॥भोमद्रकेतगं धर्वराज ॥अद्रिकाप्रियसोभासमाज ॥निक्षिरिषसरापऊषजोनपा य॥उद्धारअ्रषहिदीनौबताय॥ कोउमनुजवीर्यभजिपुत्रिहोय ॥दंपतिनिजगतितुमलहहुदोय ॥वसुनामकवरआरवेटक क॥पितुवचनलागिगोजुतसमाज॥तिहवामनामगिरकासुता हि॥रतवतिपठयेशुककवरपाहि॥ धरिनलकावीरजसुकहिदी न ॥जमुनापरनिकस्योसोप्रवीन॥ सिंचानऊपटमारिसकता- हि ॥ बहुवीर्यगिर्योरवितनयमांहि॥सोमीनानिगलजानहि सुभाव॥गर्भस्थितभोताहीप्रभाव॥सोजालपरीकहुंकर्मजोग ॥चिधयाहिआपकोंभोवियोग॥विदारणउदरइकपुत्रिपाय॥सो करिकीरसेवासुभाय॥पुनभयोअंगयोवनप्रवेस॥ विधविधहि वढतसोभाविसेस॥मछगंधाइकदिनसरततीर॥एकाकीभइ अंतरअधीर॥द्विजपरासर्यकहतातकाल॥ मोहिपारकरहु मतिनटहुबाल॥भयजुक्तिनावप्रेरीसुभाम॥कन्यालखिरिष भोविवसकाम॥रचिजाचीतापहरिषअधीर॥रसमन्मथछेद्यो जिहसरीर॥कन्यानबविनतीकरीताहि॥इकदिवसबहुरिकन्य लआहि॥ धूम्रतेंकरयोरिरविअंधकार॥पुनिकह्यौमोहिभ जिसहतप्यार॥जोनटैआपदेहुंजरूर॥ कन्यानननदीरिरिविल रिवकरूर॥रिवणमात्रनावविचसंगवाय॥व्रतभंगभयोरिरवव रलजाय॥कहकन्यादूषणलग्योमोहि॥ताकोमयत्नअबजुक्त तोहि॥वीर्यतिहउपजिजदवेदव्यास॥अवतारअंससबजगतु जास॥ ॥दोहा॥ ॥अष्टादसजिनउक्तितें पूरनरचेपुरान॥ एकलक्षभारतकियौ वेदहुकियव्यारव्यान॥ २॥ ॥

॥कबित्त॥ ॥ब्रह्म १०००० पद्म ५५००० विष्णु २३०००

शिव २४००० श्रीमत १८००० भविष्योत्तर १४५०० नारद २५०००
वराह २४००० लिंग ११००० ब्रह्मवैवर्त १८००० जानियै ॥ कूर
म १७००० मच्छ १४००० वामन १०००० स्कंद ८११०० मार्के
ड ९००० कहि गरुड १९००० ब्रह्मांड १२००० अग्नि १५४००
विधसूं पिछानियें ॥ सामवेद २५००० ऋग्वेद २५००० जजु
वेंद २५००० अथर्वणवेद २५००० च्यारहु के सूत्र वेद अंत
कूंवखानियें ॥ भारत निर्माण कीनो संहिता अनेक छायास्व
रूप दास ताहिकूं विचारै गति मानियें ॥ ३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
जन्मेजय नृप करतहीं सरपसत्र तिहिं काल ॥ वेदव्याससंब सि
खन जुत आये मुनिवर चाल ॥ ४ ॥ पूछे नृप रिखराज प्रत नि
ज पुरुषनकी वात ॥ कैसे बंधु विरोध भो कैसे जुध भो तात ॥ ५ ॥
वैशंपायन शिष्यको दी आज्ञा रिषिराय ॥ कुरुकुलकी पूरब क-
था सबै कहत समुझाय ॥ ६ ॥ क॰ ब्रह्म १ अत्री २ चंद ३ बुध ४ और
है पुरूरवा ५ त्यूं आयु ६ पुनि नहुष ७ ययाती ८ पुरू ९ जानियें ॥
रोधाश्व १० रुचेपु ११ अनावृष्टि १२ मतिनार १३ तन्सु १४ ईल
न १५ दुकंत १६ भर्त १७ भ्रमन्यु १८ वखानियें ॥ भौ सुहोत्र १९ ह
स्ती २० अजमीढ २१ ऋक्ष २२ संबरण २३ कुरु २४ जन्मेजय २५ धृ
तराष्ट्र गुनग्यानियें ॥ ताकै भो प्रतीप जाके तीन पुत्र देवापी १ रु
शांतनूं २ त्यूं बाल्हिक ऐ चंद्रवंस मानियें ॥ ७ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
देवापी तन कुष्टतें वनसेवन तप कीन ॥ कथनापुर दे सांतनु हि वा
ल्हिक दीन ॥ ८ ॥ देवव्रत सांतनु सुवन गंगातें रनधीर ॥ विचि
त्रवीर्य चित्रांगद सु मच्छगंधातें वीर ॥ ९ ॥ मरयो जुद्ध गांधर्वतें
विन वयं अग्रज भ्रात ॥ भो तब बीर्ज विचित्र नृप हस्तनापुर विख्या

१ जनमेजयकी परंपरा.

त ॥ १० ॥ कासीराजकीकन्यका भीष्महरनकियेतीन ॥ येक सिखंडीकूंचरभोहेलघुभ्रातहिदीन ॥ ११ ॥ षेंनरोगतेंबंधुसों ईमरयोनभोसंतान ॥ जाचेमातापुत्रमिली वेदव्यासभगवान ॥ १२ ॥ नष्टतंतुकुरुवंसलखि सुनिनिजजननिपुकार ॥ तीनपुत्रउतपतकिये विश्वविख्यातउदार ॥ १३ ॥ पंडुपुत्रअंबालिका अंबिकासुतधृतराष्ट्र ॥ धर्मअंसदासीतनय विदुरमहामतिशिष्ट ॥ १४ ॥ ज्येष्टभ्रातअंगहीनकों नहिंभयोछत्रअधिकार ॥ पंडुतप्योसबभूमिपर गुरुजनकोंसिरधार ॥ १५ ॥ सबभूपनपरपंडुकी आज्ञारहीअखंड ॥ तापेंअग्रजअग्रजपें बाल्हिकभीस्मप्रचंड ॥ १६ ॥ मृगस्वरूपरिखिश्रापतें पंडुजुक्तवैराग ॥ उभयत्रियाजुतवनचरयो रागभोगकियेत्याग ॥ १७ ॥ नारायणवसुदेवयह पंडुगेहनररूप ॥ भूमिभारकेनासहित भयेअवतारअनूप ॥ १८ ॥ सुरअसनतेंओरभये जादवपांडवजानि ॥ असुरअंसप्रजगजपुरी प्रकटेसकलप्रधान ॥ १९ ॥ बाल्हिककेसुतसोमदत्त ताकेत्रयसुतजान ॥ भयेज्येष्ठभूरिश्रवा भूरिशलदोउआन ॥ २० ॥ गंधारीकेपुत्रसत सुतादुसीलाएक ॥ सिंधुनृपतजयद्रथहीकूं दीनीसहितविवेक ॥ २१ ॥ वैसीसुतधृतराष्ट्रतें भयोयुयुत्सुफेर ॥ महारथीसुतधर्मतें मिल्योजुद्धकीवेर ॥ २२ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ वसुभीष्मजीवद्रोणकलूतें सुयोधनकोओरबंधुदैत्यनकेअंसतेंबतायेहें ॥ धर्मधर्म भीमवात इंद्रनर कर्नरवी अश्विनीकुवारदोऊमाद्रीपुत्रगाएहें ॥ जातवेदधृष्टद्युम्नसोभद्रेयचंद्रअंस ऐसेंहीअनुक्रमतेंओरहूजितायेहें ॥ नीतितेजदेखिदेवअसनमेंदैत्यअसएक

---

१ हस्तिनापुरमें.

तारुचेनते विरोधतेंअघायेहैं।२३॥ ॥दोहा॥ ॥कोऊका
रनतेंस्खलितभो भरद्वाजमुनिरेत॥ धस्योदोनविचपुत्रभो
द्रोननामतिहहेत॥२४॥प्रसतनृपतिपांचालको भरद्वाजति
हग्राम॥वसतअभयसुतद्रोनजुत सकलगुननकेधाम॥२५
॥स्रुतकनिष्ठनृपप्रसतको जज्ञसेनगुनआस॥सखाचार
करद्रोनतें रहतरिषिनकेपास॥२६॥उभयवेदसिष्योकरे उ
भयधनुषआचार॥कह्योकरेंद्विजद्रोनतें जज्ञसेनजुतप्यार
॥२७॥मेंकदाचिन्नृपहोउंतो देहुअर्द्धतुहिराज॥गंगातेंदछि
नदिसा मेंउत्तरदिसभाज॥२८॥कालपाइअग्रजमस्यो मस्यो
प्रसतफिरबाप॥जज्ञसेनपांचालको भयोनृपतितबआप॥
२९॥गोमतसिषकेस्रुकतें कृपरुकृपीइकसाथ॥ भयेप्रगटबि
चमुंजके सांतनुकीयेसनाथ॥३०॥कृपकोतोकुलगुरुकि
यो कृपीद्रोनकूंदीन॥तिनतेंस्रुतद्रोनीभयो वेदधनुषपरवी
न॥३१॥जथाअयोनी मातुपितु तथापुत्रदुतिराश॥दुग्धपि
वतलरिवाशिस्नकुं हठतमातुपितुपास॥३२॥द्रव्यहीनद्विज
द्रोनतें जग्नसेनपेंजाइ॥दुग्धपानहितपुत्रके जाचीएकहि
गाय॥३३॥कियोसखामनप्रगटसब सिस्रुताकोविरतंत॥ नृ
भिक्षकमेंछत्रधर कीनोहांसकुमंत॥३४॥तांदुलधोयरुस्वेतजल
गुडविचदेहुमिलाइ॥स्रुतपावहुपयसमुझिहे मेंनहीदेऊंगाय॥
३५॥सभांवीचअपमानलखि भोद्विजकूंनिर्वेद॥ कस्योत्याग
जलपानविन ताकोदेससखेद॥३६॥आयनागपुर[1] भीष्मतें क
ह्योपूर्वविवहार॥सूप्योभीसमद्रोनकूं राजभारकरिप्यार॥३७॥
सोंपेंस्पूंहीद्रोनकूं सबकुरुवंसकुमार॥सस्त्रअस्त्रविधिलेनकूं

---

१ हस्तिनापुर.

आदिक्षत्रआचार ॥ ३८ ॥ सेसवतेसुतपंडुरत विद्याविसनवि
सेस ॥ पंचबंधुक्रीडारहित विनयधर्मउपदेस ॥ ३९ ॥ विद्यारं
भकुंकसतिलक अक्षतजुतद्युतिकुंज ॥ अर्जुनगुनअनुरागबि
च सबगुनआश्रतपुंज ॥ ४० ॥ ॥ छप्पै ॥ ॥ कर्नकह्योहि-
जद्रोनदेहुब्रह्मास्त्रमोहिअब ॥ द्रोनकह्योबिनक्षत्रिविप्रबिनु-
मिलैनुमहिकब ॥ कर्नगयोकरिक्रोधजहांद्विजरामतपतय ॥ क
ह्योविप्रहुनाथदेहुमोहिअस्त्रब्रह्मजय ॥ इकदिवसताहिधरिगो
दसिरजामदग्निसोवतभयेउ ॥ इकदैत्यआपजुतकीटतनकर्न
जंघछेदनगयेउ ॥ ४१ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गुरुनिद्रागतिजानि
के करननसरक्यौरंच ॥ जागिउठेशिष्यप्रतिकह्यो इहधूक
वनप्रपंच ॥ ४२ ॥ करनकह्योयेहरुधिरमम कीटजंघपलमा-
हि ॥ मैंसमझैगुरुजागिये तातेसरक्योनाहि ॥ ४३ ॥ द्विज
कोइहधीरजनहीं तूंकोउक्षत्रीआहि ॥ अस्त्रजुलीनेकरिक
पट सफलगिनहुजिनताहि ॥ ४४ ॥ जज्ञधेनुरिषकीकोउ
सरलगिमरीअज्ञात ॥ दुतीयआपताकोंभयो होहितोहि
अरिघात ॥ ४५ ॥ तेरेरथकेचक्रकों भूमिनिगलिहैजब ॥ क
रतसपरधाजाहिनें सोइअरिमारहितब ॥ ४६ ॥ सबिद्याहैआ
पले करनाहिंआयेगेह ॥ इतनेसबशिष्यद्रोनके पढिगयेनि
रसंदेह ॥ ४७ ॥ सस्त्रअस्त्रअजुनसिखनकी दईपररवइकद्यो
स ॥ नरकीविद्यासकजसलखि भयोसुयोधनरोस ॥ ४८ ॥
॥ ॥ कबित ॥ ॥ अग्निअस्त्रहीतेंव्योमबीचकीनीज्वाल
मालमेघअस्त्रहीतेंताइज्वालकूंबुझाइकें ॥ वायुअस्त्रहीतें मे
घगिरिअस्त्रहीतेंवायुवज्रअस्त्रहीतेंगिरिवृंदकूंमिटायकें ॥
कबीभूमिअंतरिक्षअश्वगजपीठकबीकबीस्थूलसूछमअ
दृष्टतादिखाइकें ॥ धन्यप्रथाकूंषजायोअर्जुनत्रिलोकजेतापां

डुनंदछाळेयूंअनेकसोभापायकें॥ ४९॥ ॥दोहा॥ ॥ कहतकरननरतेंकरत हंद्दयुद्धयहवार॥ स्कनितमग्योधृतरा ष्ट्रकत लयोहृदयतेंधारि॥५०॥ नृपसकलनृपसुततेलरैं यह श्रुतिआगमरीति॥लरेंशूद्रनरतेंसकृप कहैयहैजुअनीत॥ ५१॥कहेंसुयोधनसनहुकृप त्रिधानृपतिताहोत॥निजबलतें पुनसैन्यतें जन्मनृपनकेगोत॥५२॥ बलतेंकर्नअसाध्यहैं अंग देसअबदेत॥ छत्रचमरयुकहिदिये कियअभिसेकसहेत॥ ॥५३॥दे्खिसपरधादुहूनकी भीष्मविसर्जनकीन॥अस्त्रप रिक्षाव्हेचुकी मतिहांकोधअधीन॥५४॥कह्योद्रोनतेंसिख नमिलि दीआग्यागुरुनाथ॥ कर्योतोरअपमाननृप द्रुपदह तहिजुतसाथ॥५५॥तथाअस्तुमुनिद्रोनतें कीनोंसैन्यप्रया न॥कर्योजुद्धनृपद्रुपदकू पकर्योजुतअभधान॥५६॥सिषन कह्योतूंछत्रधर यहभिक्षकद्विजद्रोन॥याभिक्षकविनआप की कहिअबरक्षककोन॥५७॥ ॥दोहा॥ ॥नृपतिसखा पनतोरमम वन्योनहीविनुराज॥तबहीअर्धभूलेनकूं कर्योज तनमेंआज॥५८॥द्रुपद०॥ कृपासखापनराखियो अबहुअ र्धभूलेहु॥ श्रेष्ठहारिवोआपतें मोहिछोरतुमदेऊ॥५९॥ द्विज कोंआधोराज्यदे नृपआयोनिजभौन॥ कोउऐसोममपुत्रव्हैजो मारैद्विजद्रोन॥६०॥नासकरैंकुरुवंसको ऐसोकरतविचार॥ कर्योजज्ञमिलिरिषिनतें वांट्योद्रव्यअपार॥६१॥इकइकद्वि जकोलक्षगो ऐसेदईअनेक॥होनहारकेजोरतें वहांनदीनीए क॥६२॥अग्निकुंडतेंप्रगटभो धृष्टद्युम्नअरिकाल॥ वेदीतें कृष्णाभई सात्तवर्षकीबाल॥६३॥ कहेव्योमवानीवचन सु तकरिहैदुजघात॥सुतातोरकुरुवंसको करिहैभूपनिपात॥ ॥६४॥ ॥सवैया॥ ॥संगसिसूनकेद्रोनीसिसूननलावतऔ

रकेवाछरेचारत ॥ तेमनुहारिकैंयाहिकूंदूधदेयौंपितुमाततें रोयपुकारत ॥ मोहिकोगाइमगाइदोयुंसुनि दोनपांचालको जाचवोधारत ॥ दासस्वरूपनट्यौंनृपहासिकेंभोयहरितअनानतेंभारत ॥ ६५ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ कंवरपदेंमैंनृपअर्द्धराज्यदेंनकह्योराजपायगायनट्योहासिअलिकीनीहै ॥ याहीकाजकोप्योंद्रोनसस्त्रअस्त्रविद्यासवैभार्गवतेंलीनीकुरुवंसनकोदीनी है ॥ कौरवद्रुपदहीकोबांधिराजवाल्यौंतातेंधृष्टद्युम्नद्रोपदीकीउत्पतनधीनीहै ॥ दोनूंस्वसाभ्राततेंभयोहैपातक्षत्रीनकोंऐसेगतिभारतकीअनकेअधीनीहै ॥ ६६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जमुनाजलक्रीडतहुतें मिलिकुरुवंसकुमार ॥ दीयोसुयोधनभीमकूं मोदूककेविचमार ॥ ६७ ॥ बांधिवलिकेतंतुतें डास्योयमुनानीर ॥ लैगयेअहिपातालमें निरविषकियोसरीर ॥ ६८ ॥ अमृतपान करायके हिगुनप्रबलकरिताहि ॥ माताढिगदिनअष्टमें पठयोगजपुरन्याहि ॥ ६९ ॥ भीमवचनसुनिगुपतही कीनोविदुरप्रबोध ॥ अबनहिसमयविरोधको करोंक्रोधकौरोंध ॥ ७० ॥ विदुरादिक मनमेंसमझ कोउतेंप्रगटनकीन ॥ यतनेंपदनृपपांडुको पिताधर्मकोदीन्ह ॥ ७१ ॥ जस्योसुयोधनआगिविन पितुतेंकरतनिरासा ॥ राजयुधिष्ठिरकोंदियो हमकोंनरकनिवास ॥ ७२ ॥ याके पितुकीनोप्रथम अबयेकरिहैराज ॥ याकेपुत्ररुपौत्रतें करिहैराजसुकाज ॥ ७३ ॥ जबहमकोसबजानिहै ग्यातहीनभुवपाल ॥ दुष्टकर्मतेंजीवका करहिपरहिदुखजाल ॥ ७४ ॥ नीचहीसगपनजीवका उभयराजविनुपाय ॥ लुप्तपिंडोदकपित्रसब वसहिनर्कमैंजाइ ॥ ७५ ॥ अंगहीनतेंआपतो लह्योननृपअधिकार ॥ मेरेअवयवहीनना क्यूंनदियोभुवभार ॥ ७६ ॥ धृतराष्ट्र ॥ पांडुसासनामेंरह्यो भयोमोहिसुखराज ॥ यूंअज्ञाआधीनहैं

पांचपांडुसुतआज ॥ ७७ ॥ तिनकोकैसेंत्यागमें करुनकरौविरोध ॥ दुहुधाफटहिप्रधानकोउ बढहिपरस्परक्रोध ॥ ७८ ॥ ॥ सुयोधन ॥ ॥ विदुरविनाभीसमअरु द्रोनादिकपरधान ॥ फोउनफटहितजिमोहिकूं जानहुपितानिदान ॥ ७९ ॥ वारणाख्यपुरपठहुतुम मातसहितसुत धर्म ॥ मैंयतनइतराजका करहुहाथ सबमर्म ॥ ८० ॥ ॥ धृतराष्ट्र ॥ ॥ रुद्रमहोछावहोतहैं वारणाख्यपुर पुत्र ॥ जाहुजुधिष्ठिरबंधुजुत करियोरक्षातत्र ॥ ८१ ॥ विदुरेंगुप्तउपदेसकिया आवतजवनप्रधान ॥ रचाहिपुरोचनलाखगृह मंत्रसुयोधनमान ॥ ८२ ॥ पठवहुगुसमजूरतित राखिहैगुप्तसुरंग ॥ अग्निलगैनिसनिकरियो मातभ्रातलैसंग ॥ ८३ ॥ आनदेसछिपिविचरियो पोररवसमयनआज ॥ कालपायफिरकरहिगो बंधुनजुतनृपराज ॥ ८४ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ नीतिधर्मपुत्रकीतेंउग्रधन्वीअर्जुननैंबलीजानिभीमअंधपुत्रअकुलायके ॥ वारणाख्यपुरीलाखाग्रहकीनोजारिवेकोजवनपुरोचनप्रधानकूंपठायके ॥ जरीएकभीलनीत्यूंभीलनीकेपांचौपुत्रवचेएतोविदुरप्रबोधपंथपायके ॥ दोयकंधदोयगोदएकपीठमाताबंधुलैकेभीमचल्योताहिजवनजरायके ॥ ८५ ॥ बनमेंहिडंबमारीहिडंबाकूंधारिभीमपुत्रउपजायएकचक्रासंपधारेहैं ॥ ब्राह्मणकेभेषभिक्षाअन्नतेंजीवकाहोत विप्रनकेसंगदेसद्रुपदसिधारेहैं ॥ गांधर्वअंगारपर्णजोतिअस्त्रविद्यालीनी भूपपुरीभ्रगुसालाआसनविचारेहैं ॥ व्यासआस्वासदेकेद्रौपदपैंगोनकीनोअर्जुननैंभूपनकेमानमलिडारेहैं ॥ ८६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ चारदिसाकेनृपतसब मिलेद्रुपदपुरआनि ॥ कियोभूपसनमानअति

---

१ विदुरनें पांडवोंको गुप्त उपदेश किया.

सुतास्वयंवरजानि ॥ ८७ ॥ रंगभूमिदिनसोधसम मंचनबैठेभूप ॥ धृष्टद्युम्नसबतेंकहत भगनीसंगअनूप ॥ ८८ ॥ याधनुतेंयहच क्रफष करैबेधततकाल ॥ हरैसोइजसत्नृपनकी ममभगनीव रमाल ॥ ८९ ॥ ॥कबित्त॥ ॥सोडसबरसकी हैंगतीथके हंसकीसीकटी भूपेसिंहकी हैबानीरिरिवबीनकी ॥ इंदिरासीआभाजाकी मृदुताई किसलैकीसीलता भवानीकीसीनेनदुतीमीनकी ॥ सुरभीवसंतकीसीजोजनप्रमानचलै विद्यासरस्वतीकीसीआगमअधीनकी ॥ द्रौपदकीकन्याधन्यारंगभूप्रवेसकीनोंऐसीनाहिअन्यावानीभईलाकतीनकी ॥ ९० ॥ ॥राजलोकपरसपरवचन॥ ॥स्वयंभूकुमारी ओंतस्वयंभूकूं अग्रकीयेअनन्यस्वरूपलियेरंगभूमेंऊतरी ॥ तेजव्यंबहीतेंसबेंभूपचकचौंधेभयेचली मानूमोहनीकूंमोहिबेकीपूतरी ॥ काकेओभतीजेपितापुत्रमामेभागनेयआपसमेंवकेवानीभईजाततूतरी ॥ मेरीकन्यामेरीकन्याभयेनिरलाजबोलेसरस्वतीओरअर्थकीनोअदभूतरी ॥ ९१ ॥ ॥दोहा॥ ॥भयेनिरुद्यमसकलनृपधनुषचढावनकाज ॥ कहांवधवोचक्रफक सोचतद्रुपदसमाज ॥ ९२ ॥ भीमानुजठढोभयो करसमेटिसिरकेस ॥ महादीनद्विजवृंदमें वाढीप्रभाविसेस ॥ ९३ ॥ ॥कबित्त॥ ॥ धनुषपेगौनमहाबली पांडुनंदनकोंमत्तगजराजपेज्यूंके हरलसतुहै ॥ दीनद्विजभेषअग्निभसमावछन्नशोषदेखबालवृद्धयुवाब्राह्मणहसतुहै ॥सुयोधनआदिवडेस्हरदेसदेसनकेभूपनेकेतेजराधाबेधतेनसतुहै ॥ नानाजेपटाबरकी कमररवुलतजातदेखोएफटांबरकीकंबरकसतुहै ॥ ९४ ॥ ॥दोहा॥ ॥दासि

१ द्रुपदी. २ धृष्टद्युम्न. ३ सरस्वतीने यह अद्भुत अर्थ कियाकि सबने अपनी कन्या समक.

नकेजरबसनज्यौं फटेवसनबरनार ॥ त्यौंअंतर नर नृपनमें विबुधउचरितिहिंचार ॥ ९५ ॥ बयतेंकुलतें विभवतें विद्यातेंन हिंहोत ॥ अतिपोरुषअतिबुद्धिबल पूर्वकर्मउद्योत ॥ ९६ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ बोलेतपवृद्ध वयवृद्ध विद्यावृद्ध विप्रऐसेजिन कहोद्विजचिनमापीरासिहै ॥ कहीतुमविप्रनकी हांसीही करायेगोएक्षत्रीनकीइहांकहांनहीभईहासीहै ॥ पानकीनों सिंधुकोअगस्तिगिरिदाविदीनोअर्बुदकोब्रह्मगर्तथाप्योकोन काशीहै ॥ बालहैअवस्थायाकीकृशहैशरीरजाकोजानेजोलक्ष वेधयसकोप्रकाशीहै ॥ ९७ ॥ कौनसस्त्रअस्त्रकीबरोबरीकरैया यातेपारथकीमैयाएकजायोवीरपाथही ॥ सुयोधन धृष्टकेतुज- रासंधभूरिश्रवाऔरहषिसानैनैकछुयेधनुहाथही ॥ गुनकोचढा नपंचबानकोसंधानऐंचिछोरिवोरुबेधवोलख्यौंनहलनाथही ॥ पर्सन धनुकोभूमिदर्सननिसानकुकोदेवपुष्पवर्षनदिखानोएकसाथही ॥ ९८ ॥ नमावत धनूसीसनमादियेभूपनकेमूर्वीचिढी त्यूंचढीतेजीस्वसरीरपै ॥ साधलीइषुभयोसगपनसंधानताहि ऐंचतहीऐंच्योकन्याचेतमहावीरपै ॥ छूटेमूठिछूटिवोरसाकोभा रजान्योगयोवारैमणीदेषबंधुअर्जुनकीधीरपै ॥ मछकागीरा नोगजवगिरानोभयेएकदेभुवालकेमनोरथकीभीरपै ॥ ९९ ॥ जरेतरैआगतापैतेलकोकटाहभरोतापैखड्गपैनीधारपायरी पितरहवो ॥ तालसातऊंचोचक्रभ्रमेतामैमीननताकोव्यंबनेल्प वीचअधोद्रष्टचाहिवो ॥ दुसहकोदंडकोचढानपंचबानतानिउर्ध

१ अर्जुनने धनुषके नमावत ही सब सजोंके मस्तक नमाइ दिये औं धनुषकी पन चके चढतेही अर्जुनके शरीरमे तेज चढता भया.

प्रहारमुख्यौगकोसोगहिवो ॥ बोलैलोकविनावीरवासवीके कैसोबनै ऐसोलक्षवेधकन्याकीरतिकोलहिवो ॥ १०० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मानहुभुवदधिमेखला धरिछलरूपकुमारि ॥ अर्जुनकुंवरकरलयो गरवरमालाडारि ॥ १०१ ॥ द्रुपददुल्हारीक रनतैं धारिनरवरमाल ॥ राजश्रियास्तधर्मकी सबदुष्टनको- काल ॥ १०२ ॥ कहिसहदेवसुजननितैं लायेकछुजुतराग ॥ पृथा कह्योतमपंचहु भक्तहुजुक्तविभाग ॥ ३ ॥ कह्योजुधिष्ठिरव चनसुनि लायेनृपतिकुमारि ॥ एकत्रियाहमपंचपति इहके सोआचार ॥ ४ ॥ गुरुजनआज्ञाआजलों हमनहींत्यागीमात ॥ पृथाकहैजोभवस्यहै ऐसेहिकेहैतात ॥ १०५ ॥ करीद्रुपद सेंप्रगटसब भयोनृपतिकोसोच ॥ करैयुधिष्ठिरअनपयूं इह धूकेसोपोच ॥ ६ ॥ कह्योदिखायौव्यासनें पूरबआपस्वरूप ॥ द्रुपदसीषसुनिव्यासकी कीनोव्याहअनूप ॥ ७ ॥ स्नतसुयो धनआदिनृप पांडवजीवतमान ॥ दुरजनविषसजनअमृत पानकरतगयेथान ॥ ८ ॥ कृष्णद्रुपददोनोंदये गजहयरथअ रुदास ॥ कछुदिनपांडवद्रुपदपुर हरिजुतकियोनिवास ॥ ॥ १०९ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इहस्नतिबातधृतराष्ट्रआप ॥ पांडुसतजीयतबढतोप्रताप ॥ करिहर्षघोषदुंदुभिदिवाय ॥ इहस्नतस्रयोधननिकटआय ॥ करिहरष कियोक्यूसोक- थान ॥ ममसत्रुबढतस्रनिअप्रमान ॥ नृपकह्योविदुरकीसं ककाज ॥ सोकहिछिपायकियहरषआज ॥ कियमंत्रकर नसकुनीबुलाय ॥ अबकरौसत्रुनासकउपाय ॥ कोइपठवे

१ विदुर ऐसी न जानैं कि पांडवनको औ इनको बैर है यातैं नौबत बजवाई.

द्विजअपनेअधीन ॥ दैंविषहिमारडारैंअरीन ॥ अथवानृप द्रोपदकूंफटाय ॥ फिरमारिगेरिहुंविनुसहाय ॥ अथवाकछु छलकैंभीमनास ॥ भीमविनसुलभसबजुक्तत्रास ॥ यूंकहैंस्त्र योधनमत्तअनेक ॥ इतसुनतनमानीकरनएक ॥ एकियेजत नतुमनृपतिआदि ॥ विनुसिद्धभयेतेसकलबादि ॥ दआज्ञा माकहिसैन्यकोस ॥ विनुसैनकोसअरिहैंनिरोस ॥ जोप्रबलहो हितेहतहिमोहि ॥ मैंप्रबलविनाअरिकरिहुतोहि ॥ १० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ निकंदविनापरववालवय मिटेनस्रगमउपाइ ॥ दूर सपक्षकिसोरतन यूंकससकहिमिटाई ॥ ११ ॥ कह्योभीष्मअ रुद्रोणकृप नृपजीयहुजियनीक ॥ तुछबुधिनकेकहनतैं न हिंविरोधयहठीक ॥ १२ ॥ इनकेअनुमततैंविदुर ज्येष्ठबंधुसम झाय ॥ कह्योअरधभूदीजिये सबदूषनमिटिजाय ॥ १३ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ धृतराष्ट्रभूपगुरुवच्चनधारी ॥ सोइनीति- जानकुलवृद्धसारी ॥ विदुरकूंपठयतिनलैनकाज ॥ दीयअर्ध भूमिसबराजसाज ॥ दियइंद्रप्रस्थबैठकविसाल ॥ कियराज युधिष्ठिरकछुककाल ॥ इकदिवसआयनारदरिषीस ॥ इन पूजाकियउन दियअसीस ॥ सुंदोपसुंदआख्यानसुद्ध ॥ समझा यकह्योबंधवविरुद्ध ॥ सोभ्रातृतिलोत्तमत्रियाव्याज ॥ कटपरे सुरनकोभयोकाज ॥ तुमहूंजुतप्रीतिनियमलीन ॥ इकत्रिया- पंचरहियोअधीन ॥ तथास्तुकह्योमिलपंचभ्रात ॥ तुमकह्योनि यमहमकरहिंतात ॥ १४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ द्रुपदसुताढिगयेक पति हुयतहांदुतियनजाय ॥ जांइतुद्वादसवर्षवन जुतब्रह्मच

१ बालकथे औ पासमेंथे औ कोई पक्षवालाभी न था जबतो मारिही न सके औ अबतो वे किसोरहैं तापरभी राजा द्रुपद पक्षपरहैं.

यविहाय॥१५॥ ॥छंदपधरी॥ ॥कोउदिवसगयेइकवि प्रआय॥ परिपंथिलेगयेप्रबलसाथ॥अर्जुनसमीपकिय द्विज पुकार॥तुममहाछत्रिहमनिराधार॥ममवित्तछुडावहुप्रथा नंद॥करियेसबदुष्टनकोनिकंद॥ ॥अर्जुन॥ ॥अंतहपु रमेरेसस्त्रआहि॥तहांभूपत्रयनजुतसमयनाहिं॥कछुजेज करकुलावहुछुडाय॥भयोविप्रसुनतव्याकुलतभाय॥अर्जु नाद्विजआतुरलखिअभीति॥लेसस्त्रसमरकरिसत्रुजीति॥ द्विजकूंबितदेनिजग्रहपठाय॥वियअरजयुधिष्ठिरनिकट- आय॥कीजियेहुकमवनवासकाज॥वहकियोनियमस्कधक रहुआज॥१॥ ॥जुधिष्ठिर॥ ॥मैकरतहुतोनितनियमता त॥कछुदोषनहींतुमअनुजभ्रात॥तेरोविजोगमुहिअसहमान ॥अबहिकछुकरियेपुन्यदान॥नरकरीअरजआधीनहोय॥ छलधर्मनसाधेमहतलोय॥आचरनबडनकोलखिविरुद्ध॥चहु वरनहोइविपरीतबुद्ध॥यहिकहिरुविजयवनगमनकीन॥कोटे कस्वर्णरिषिसंगलीन॥जमुनातटसंध्याकरतवेर॥उलूपीनाग कन्यास्कहेर॥रतिकाजनरहिज्याच्योसुनारि॥ब्रह्मचर्यकह्यो अरजुनविचार॥उलूपीकह्योऐसोनकार॥करिहोतभ्रूणह- त्याउदार॥इकनिसारह्योनरअहनीकेत॥भोइरावानसुततास हेत॥कोउकालप्राचीदिसगमनकीन॥तीर्थटिनदक्षिणपंथलीन ॥विकटपथजानिनरजुतआनंद॥विसरजनकियेसबविप्रवृंद॥ मणिपूरनग्रकीनोप्रवेश॥नरलखीतहांपुत्रीनरेस॥जाचीनृपपै नृपसुताजाय॥नृपकहतनरहिकारनसुनाय॥११६॥ ॥

---

१ इहां परम उत्तम यह धर्म देखाया है कि जहां स्त्री पुरुष दो नों होय तहां जाना अति पाप है.

दोहा॥ ॥शिववरतैंममवंसमहि एकहिसंततहोइ ॥मेरेइ हपुत्रीभई तुमहिसमरपौंसोइ ॥१७॥याकेजोकोउपुत्रव्है देहुराजममकाज॥तथाअस्तुअर्जुनकह्यौ कियोव्याहजुत साज॥१८॥बभ्रुवाहुतोकभयो तीनवर्षगयेबीति॥तजिसुत जुतचित्रांगदा अर्जुनचल्योनचीत॥१९॥अच्छरपंचइंद्रलो ककी रिखीआपकोपाय॥पंचतीर्थीभईग्राहनी नरविचरततहांआय॥१२०॥करिउनकोउद्धारपुनि कियेआनर्तप्रवेस॥ रेवतगिरिउच्छावतहां मिलजदुवंसअसेस॥१२१॥ ॥छंद पधरी॥ ॥कृष्णादिमिलेअतिहेतकीन॥नितहोततहांउछ्छव नवीन॥यकदिवसगिरिहिपरिक्रमतिआय॥लखिनरहिसुभ द्राअतिलुभाई॥परसपरदेखिनरभगिनिप्रीत॥मुसक्यायकह्यौ हरिजगतमीत॥यूंकहांलखतनरत्रियांआर॥चितकह्योनरजु ममलियोचोरि॥श्रीकृष्णकह्योममभगिनिसोय॥हरणकरिजा हुजोप्रीतिहोय॥बलभद्रसहोदरजुतविधान॥दुरयोधनकोकि यचहतदान॥अपनोरथदारुकजुतउदार॥दियकृष्णकियोनर हरननारि॥सुनिकोपेजदुकुलसकलसूर॥तनकसेकवचरन बजेतूर॥इहसुनतबोलिहलधरअहेत॥करिहौंनरकौरवभू निकेत॥१२२॥ ॥श्रीकृष्णवा०॥ ॥दोहा॥ ॥छत्रिनकी कन्याअयन लईहरनकरलाल॥अर्जुनलेगयोआपनी यामें कहाविचार॥२३॥विगरजुद्धजदुवंसके हरनभयोजसरीत ॥जुधतैंलजैहैअजसहै अरजुनजगजीति॥१२४॥ ॥ छंदपधरी॥ ॥अवतोदतकारनदासिदास॥हयगजरथ लेचलियेहुलास॥बलिभद्रकह्योतुमचहतसोय॥करियेविचा रक्यूंविलमहोय॥सबचलेसाजचतुरंगसेन॥दायजोसुभद्राका जदेन॥आभरणवसनहयगजअनेक॥कुरुजदुनपरसप

रदियेकेक ॥ प्रतिरहेकेउकदिनइंद्रप्रस्थ ॥ सीखलेचलेजदु-
वंसस्वस्थ ॥ श्रीकृष्णरहेअर्जुनहिसंग ॥ इकदिवसग्रीष्मरितु
धरिउमंग ॥ खांडवढिगजमुनाजलविहार ॥ तिनकाजभयेन
रहरितयार ॥ लैसींषयुधिष्ठिरउभयवीर ॥ तरुनीनजुत्तरवि
सुतातीर ॥ जुतखानपाननाटकविधान ॥ कोउकालरहेक्री
डासमान ॥ बिहुबैठेपुनिएकांतवीर ॥ समयतिहअग्निधरिद्वि
जसरीर ॥ कहिवचनपांडुवनदगधकाज ॥ ममभयोअजीरण
मिटहिआज ॥ कहिअर्जुनहरिजुतप्रणतकीन ॥ यहवनसुरेंद्रर
क्षाअधीन ॥ ऐसेकुयहवाहनअस्त्रमीत ॥ तबतसकरेंसुरअसु
रजीत ॥ लैदयोब्रह्मरथअग्निपात ॥ गांडीवधनुषदेअक्षयभा
थ ॥ कृष्णाकोसुदर्शनदयोतत्र ॥ जारवेरवांडवनलग्योजत्र ॥ सु
निइंद्रखांडुरक्षकपुकार ॥ त्रिभुवनाधीसकियजुधतियार ॥
इकओरइंद्रअहिदनुअपार ॥ इकओरपृथानंदनउदार ॥ कछु
कालभयोसंग्रामक्रुद्ध ॥ बढिपद्योपितापुत्रहुविरुध ॥ दिये-
आज्ञाउनकूदेवदेव ॥ यतरच्योसरापंजरअजेब ॥ द्वादसघन
अहुटेहीनदर्प ॥ मयदैत्यबच्योपुनिएकसर्प ॥ च्यारखगरिखि
पुत्रनविहीन ॥ वनभोदैतनजुतभस्मलीन ॥ नाहिंभयोमेघदुल
वनबचाव ॥ गोइंद्रस्वर्गसातिकसुभाव ॥ मयकूंचक्रमारतथेमुरा
र ॥ सरनागतअर्जुनलियेउबार ॥ तिनदईसभाविपरीततत्र ॥ ज
लथलहिभ्रांतअधऊर्ध्वजत्र ॥ इकगदाभीमकारनअनूप ॥ सं
षदेवदत्तसुंदरसुरूप ॥ इतनेपदार्थलैग्रेहआय ॥ सबकहेजु-
धिष्ठिरतेंसुनाय ॥ कोउदिवसरहेहरिनृपतभोन ॥ कीयमाग
सीखनिजपुरीगोन ॥ पांचहुपतिनसैंपांचपूत ॥ द्रौपदीप्रगट
कीनेअभूत ॥ प्रतिबंधजुधिष्ठिरसोप्रधान ॥ श्रुतिसोमभीमसेन
हिसमान ॥ श्रुतिकीर्तिदुतयअर्जुनस्वरूप ॥ नाकुलीसतानीक

रूअन्नूप ॥ श्रुतिकीर्तिसहदेवहिसमान ॥ अनुक्रमहिभयेबलम
मान ॥ सुभद्रानंदअभिमन्यसूर ॥ कुरुवंशबीजविधिअंसक्रूर
॥१२५॥ ॥ इतिश्रीपांडवयशोंदुचंद्रिकाआदिपर्वणिचतुर्थो
मयूखः ॥४॥ ॥ श्रीगोपालकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥ ॥

अथाग्रेसभापर्वप्रारंभः

नारदोपदेश· जरासंधप्रति युद्धजाचन· श्रीकृष्णअर्जुन· भीमसेन द्विजरूप·

श्रीगणेशायनमः॥ ॥दोहा॥ ॥मयदानवनृपधर्मको नीकेंआयसपाय॥सभाचतुरदसमासमें रचिकैंदईबताय ॥१॥नारक्षकअंतरिक्षचर राकसअष्टहजार॥दसहजारकर मध्यतें चारोतरफप्रचार॥२॥ ॥छंदपधरी॥ ॥नानात्वज लाशयविटपतत्र॥चहुरवानजीवसाक्षातचित्र॥अनेकरत्न दीरघनिवास॥आभासुमेधचुंबतअकास॥रत्नकेकंजअनेक रंग॥एकतेंएकध्वजद्रुमउतंग॥जलहीयतहांथलसोजनात॥ द्वारकिठोरभीतिहिदिरवात॥जवनिकागोषआदिकबितान॥ अज्ञातपरतविपरीतजान॥इकदिवसआइनारदअचिंत॥अ वलोकिसभाहितजुतअनंत॥तितकह्योपंडुसंदेहताहि॥ उतइंद्रसभाबिचसुखितआहि॥राजसूकरनतुहिकह्योपुत्र ॥तिहसभाविजोगनहोइतत्र॥तथास्तुकह्योनृपधरमताहि॥ चहुदिसाविजयचितहृदयचाहि॥चकुभ्रातपायआयुसनरेस ॥दिसजीतचारनृपदेसदेस॥प्राचीसुभीमअरजुनउदीची॥प्र तीचीनकुलसहदेवईच॥करद्रव्यनृपनतेंग्रहनकीन॥सबइं द्रप्रस्थपठवायदीन॥जिनदयोदंडनहिकियेजुद्ध॥सोपाथप राजयभयेक्रुद्ध॥यूंकीयेविजयचकुभ्रातआय॥लीनेसुयुधि ष्ठिरउरलगाय॥कृष्णकूंनिमंत्रणतिहीकाल॥कीनोसुआयकु रुजुतकृपाल॥३॥ ॥दोहा॥ ॥कह्योजुधिष्ठिरकृष्णतें सबनृपजीतेसूर॥जरासंधगिरिव्रजपती रह्योअजयवहक्रू र॥४॥दोयअयुतअरुआठसत नृपतितेकाराग्रेह॥भोग तलेछटेविगर मरवनासिद्धमभयेह॥५॥ ॥छंदपधरी॥ ॥ कृष्णानरभीमजुतगमनकीन॥लेविप्ररूपजुधजाचलीन॥जु ध्यौनृपभीमतेंद्वंद्वयुद्ध॥क्रीडादिनअष्टावींसक्रूध॥बीतेसु मगधपतिमरयोवीर॥तहांलगेनृपभ्रातिदुरवसिंधुतीर॥सहदे

वमगधस्कतराजपाय ॥ श्रीकृष्णभगतअपनेस्कभाय ॥
देनृपननसीखअपआपभोन ॥ इंद्रप्रस्थकियोकृष्णादिगोन ॥
सबभईक्रतुसंभारसिद्ध ॥ सबदेसपतीआयेसनद्ध ॥ स्कयोध
नआदिकुरुवंसस्रूर ॥ कोउऔरहुसिसपालादिक्रूर ॥ ६ ॥ ॥
छप्पै ॥ ॥ भीमअन्नअधिकारसुहृदसेवानरधरिय ॥ दुरजो
धनहिंभंडारदानअधिकारकरनदिय ॥ नकुलसोजसहदेव
अखिलभूपतनआराधन कृष्णचरणद्विजशौचलियोअ
धिकारमहतगतिनृपस्त्रियास्कश्रूषाद्रुपदजा ॥ करतजग्य
विचअनुक्रमहि ॥ जुजुधानआदिभूरिश्रवाजथाजोग्यअ
धिकारलहि ॥ ७ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भयोसंपूरनजज्ञतब
अवभृतकियोसनान ॥ जथाजोग्यसबनृपतिपुनि परषदबै
ठेआनि ॥ ८ ॥ प्रथमहिपूजाकौनकौ कीजेकरतविचार ॥ पु
जइमिलिसहदेवकहि यहश्रीकृष्णउदार ॥ ९ ॥ करतहिपूजा
कृष्णकी कोप्योनृपसिसुपाल ॥ सबनृपरिखदकोछांडिकै पूज
तप्रथमगुवाल ॥ १० ॥ कहेएकसतकटुवचन प्रेर्योचक्रमुरा
री ॥ छेद्योसिरतादुष्टको जयजयसुरनउचारि ॥ ११ ॥ ॥ छं
दपधरी ॥ ॥ करिपूजासबकोबिदाकीन ॥ उतरहेजितेस
नमंधअधीन ॥ मयसभादुतियदिनभूपआय ॥ रहिभ्रातन
जुतपरिखदरचाय ॥ वहसमयस्कयोधनसभाथान ॥ आयो
सभ्रातमदअप्रमान ॥ जलजानिवसनसंकुरतकीन ॥ थलजा
नअभयछटकायदीन ॥ जलभीजभयोलज्जितअपार ॥ ह
सिपरीसभापुनिसकलनार ॥ निजवसनयुधिष्ठिरताहिकाज
॥ पठयेस्कदेषिकोप्योअकाज ॥ पुनिद्वारजानिप्रविसितनची
त ॥ भालतेंभईभटभैरभीत ॥ १२ ॥ ॥ नकुल० ॥ ॥ दोहा ॥
॥ जहांवज्रमणिहंसहै नीलमनिनकोमोर ॥ गरुत्तमान्मणि

मयलता इहप्रवेसकीठोर ॥ १३ ॥ इहस्रुनिपुनिकाव्योंअधिक लखिदरपनविनप्रान ॥ द्रुपदस्रुताकोंहासिसुनि गयोनागपुर थान ॥ १४ ॥ पितारुमातुलकरनतें कहीमरमकीबात ॥ देखि जुधिष्ठिरकोविभव अतहिचिंतअकुलात ॥ १५ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ क्रव्यादा १ पारदा २ सिवा ३ कास्मीरा ४ बाल्हिका ५ शाका ६ अंबष्ठ ७ कोकरा ८ पांड्या ९ ताम्रलिप्ता १० अंगा ११ जे ॥ सागरा १२ द्रावडा १३ मद्रा १४ कैकया १५ त्रिगर्ता १६ मत्स्या १७ मागधा १८ मालवा १९ स्रुद्रा २० वोडकल्पा २१ वंगा २२ जे ॥ स्यंघला २३ केरला २४ खसा २५ शेशबा २६ हंसका २७ गोपा २८ वस्त्रया २९ पल्हवा ३० ताक्षी ३१ दरदा ३२ कलिंगा ३३ जे ॥ वसांतये ३४ पौंड्रका ३५ स्रुमेरढिगवासी आदिरोकेद्वारधर्मके निहार वलिसंगजे ॥ १६ ॥ सर्वअंग रोमाजे ॥ अरोमातीननेत्रानरश्रृंगवान एकपायुवानकेतेआयेते ॥ भक्ष १ वस्त्र २ सस्त्र ३ वाद्य ४ अलंकार ५ अंगराग ६ यान ७ त्रिया ८ भोगअष्टांगभेदलायेते ॥ मित्राईतें यादवसंबंधतेंद्रुपदराजन्योंतद्रव्यलाऐकर दातानांकहायेते ॥ औरसवेनानारत्नकरके निजर करि अर्जुनकीआज्ञातें प्रवेसनेकपायेते ॥ १७ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नरआज्ञाधूंनृपन परि मेंदेखीमहिपाल ॥ स्रुरभीआदरसिरजथा पुष्पसंकट कमाल ॥ १८ ॥ मेरोव्हैयहविभवसब ऐसोकरहुउपाय ॥ जो करिहोमतिविदुरकी तोमरिहूंविषखाई ॥ १९ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ लोकविषेकीर्तपरलोकविषे धर्मपूंजदेहविषे तेजयहविषेद्रव्यछीजेना ॥ चारकूंवचायइंद्री भोजनकाज पूपनकेसोई पांचोंभ्रातसधैतातें द्वेषकीजेना ॥ नेरहीविभौ अनंतओरकोधरेक्यूं चिंतमिताकहे पूतसेतीऐसेकोपती

जैना ॥ कीजेना कुटुंबद्रोह पीजेना हलाहल कूंलीजेना अ-
तोल भार मोकों दुख दीजेना ॥ २० ॥ द्वारजान करन प्रवेस मो
रो फूटो सीस हसैं नर नारी तासमें तें पछिताऊमें ॥ भीजी गये
वस्त्र मेरे जुधिष्ठिरने भेजे औरऐसे दुख पेट बीच कवलौं पचाउ
में ॥ माद्रीपुत्र दोनों रत्न चित्र के दिखावे द्वार इतव्है प्रवेस क
रों क्यूं न अकुलावूंमें ॥ कैसे धीर लावूं कै तो पाउ मन वांछित
कूं नातो जरिजाऊं विष खाऊं मरिजावूंमें ॥ २१ ॥ ॥ दोहा ॥
॥ ॥ कहि सकुनी अब का करै मरैं ज्येष्ठ मम पूत ॥ पांडुन
की सब राज श्री हरि लै कुर चिद्यूत ॥ २२ ॥ वचनन खंडहि आ
पको धर्मपुत्र जुत भ्रात ॥ इत बुलाइ चोपड रमहु इहै सु नाव
हु बात ॥ २३ ॥ विदुर कहे धृतराष्ट्रतें वसना सकै बीज ॥ बोव
त नृप पछितायहै कहत उठाये धीज ॥ २४ ॥ ॥ छंदपध
री ॥ ॥ विदुरको वचन सुत वचन त्रास ॥ लोप्यो सु भूप
आगम विनास ॥ जुधिष्ठिर निमंत्रण पठय दूत ॥ इत रच्यो-
द्यूत मंदिर अभूत ॥ २५ ॥ जुधिष्ठिर धर्म रक्षक अभंग ॥ गुर
जन अदेस क्यूं करै भंग ॥ द्रुपदा जुत आयो नागथान ॥ मिल
रच्यो कपट तें इन हिमान ॥ दिन दुतीय द्यूत क्रीडा हि काज
॥ धृतराष्ट्र कह्यो राजाधिराज ॥ युधिष्ठिर इतें उत सुबलपुत्र ॥
मिलकर कुहरि अरु जीति मित्र ॥ माया जुत सकुनी कपट कार ॥
सब राज अंग जीते संभारी ॥ सहदेव नकुल नर भीम सूर ॥ करि
अनुक्रम हार्यो कर्म क्रूर ॥ फिर रम्यो भूप आपो लगाय ॥ स
कुनी सु बहुरि जीत्यो सु भाय ॥ कहि सकुनी यक तव रही नारी
॥ सो उलगाइ नृप गयो हारि ॥ ढरि अंशु विदुर गये निकरि द्वार ॥ स
ब कहत जुधिष्ठिर को धिकार ॥ किकरन सुयोधन हुकम कीन
॥ इत ल्याहु द्रुपदजा करि आधीन ॥ २५ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥

द्रुपदसुता ढिग जाय तब कहि प्रतीप जुत हासी ॥ हार्यो तुहि पति चलि सभा होहु सुयोधन दासी ॥ २६ ॥ ॥ द्रौपदी० ॥ ॥ यह प्राकृत नर नाकरैं मोहि हार्यो नृप आज ॥ और राज सब साज पर परीक्ष हा गजगाज ॥ २७ ॥ ॥ प्रतीप ॥ ॥ राज हारि चहु बंधु पुनि आपो हारि भूआल ॥ तुहि हार्यो बन काकरत सीघ्र सभा उठि चाल ॥ २८ ॥ ॥ द्रौपदी ॥ ॥ सभासदन तैं पूंछितूं मेरो न्याय अनूप ॥ प्रथम मोहि हार्यो किउन आपो हार्यो भूप ॥ २९ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ कह सब प्रतीप द्रुपदा कहाव ॥ भयो सुनत सुयोधन कुपित भाव ॥ अनुज कौं दई आज्ञा अधीर ॥ तूं ल्याहु नींच यह डरत वीर ॥ दुसासन कहि चलि सीघ्र दासी ॥ पूंछहु संदेह निज पतिन पासि ॥ द्रौपदी ॥ इक वस्त्र रजस्वला मलिन आज ॥ मोहि सभा प्रवेश न कवन काज ॥ दुष्ट सु निकेस पर हाथ डारि ॥ गई भाजि गंधारी सरन नारि ॥ लै चल्यो जोरत पकरि बांहि ॥ गंधारि कह्यो सो उ सुन्यो नांहि ॥ गज तें ज्यूं कदली विकल अंग ॥ उत सभा वीच ल्यायो उमंग ॥ द्रौपदी प्रसंग पूंछो सु दीन ॥ नहि करें उतर सब भील लीन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कहि विकरन धृतराष्ट्र सुत कोउ तो बोलहु न्याव ॥ नहि बोलत तो मैं कहत जैसी मो हिल ख्वाइ ॥ ३० ॥ नृप के हारे अनुज सब जाय न्याय यह रीत ॥ द्रुपदा हारी एक तें जाइ सु परम अनीत ॥ ३१ ॥ फिर नृप हार्यो आपकूं पीछें द्रुपद कुमारी ॥ कित है पति सामर्थ्यता देषहु नेक विचार ॥ ३२ ॥ कोप जुत सुति हांकरन कहि करतल सकई वात ॥ तो बिन एते वृद्ध सब बोलत कोउ न लखवात ॥ ३३ ॥ सुधरी अग्रज की सबै तू अवदेत विगारि ॥ सर्वसहार्यो धर्मसुत ता मइ द्रुपद कुमारि ॥ ३४ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ बताई सुयोधन जघ वास ॥ इत बैठ द्रुपदजा

संहितकाम ॥ द्रौपदीकह्योयहजंघबीच ॥ बैठिहैभीमकीगदा नीच ॥ अतिकहनकटुवचकरनओर ॥ पतिकरहुनहारैतुहिब होर ॥ कियेसैनवसननृपहरनकाज ॥ सबबंधुपंचताजेदियेसाज ॥ सिरजचावेष्टनविनास्तूर ॥ तजिचर्मओटव्हैहेरहैदूर ॥ द्रौपदी चीरऐंच्योसदुष्ट ॥ करिथंक्योदुसासनअधिककष्ट ॥ लैसकैदुपद जाकोनलाज ॥ बैठेहारितिहांतनिबनिबजाज ॥ ३५ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ गजहोपुरुषप्रहलादहूपुरुषहतोजहांभयेआतुरसोकहा नीकहातहै ॥ याहीकीसुबेरदुर्योधनदुसासनकूंखंडखंडकिये होनेऐसीरिसआतहै ॥ पांचदिक्‌पालजैसेभरतानिबलभयेस्व रूपदासजाकेहोजोविनापक्षपातहै ॥ द्रौपदीकीआपतैंपुकार-क्यूंनलगीनाथसुधिओयेमेरोतोकरेजोफटयोजातहै ॥ ३६ ॥ उरहीमैंबैठेइसउतरउचारकीनाएसीहीवासमैंबीचमोकोंरिस आइहै ॥ सबहीरसांकोभारदूरकरतव्यहतोतातैंछिमायाचक कीपुरीलैपचाईहै ॥ द्रौपदीकेकोपहीकीदारुमईआगितांकोच तुर्दशसंमतकीदाटदैदबाईहै ॥ ताहीछिनमारतोतोचंडालचा करीहीकोबाहीबीचसेतीकेतीक्षोहनीक्षपाईहै ॥ ३७ ॥ खुलेकेस अस्वलासभावीचदुसासनलायोसोपुकाररहीसोरेसभाचारी कौ ॥ आदिमोकोंहार्योकिधौंआदिआपोहार्योंनृपकर्नबि-गारीबातविकरनसुधारीकौं ॥ भीमकहैऐंच्योचीरतेईभुजऐंचे जेहूदिखावैहैजंघासोंदेखेहुतोरडारीकौं ॥ द्रौपददुलारीखुली लटैकरिदेहूसारीएकनृपनारीनाअनेकनृपनारीकौं ॥ ३८ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गंधारीसुत्तसुबनबिच जोएकहुबचिजाय ॥ मोर गदातैंमोहितो होहिनरकगतिन्याय ॥ ३९ ॥ सुनीप्रतिज्ञाभीम की कुरुकुलव्याकुलरूप ॥ गांधारीवहसमयलखी संसुफाव तपतिभूप ॥ ४० ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ मातसुयोधनकीभरताकूं

द्रौपदीकष्टलख्योसमुझावै ॥ क्यूंघरजायेलराइकै छोकरपा
पिणचोथेमेपद्धितपावै ॥ कौंतिकहारिव्है तीजेती हातज्यूं हाय-
क्यूंजीवंतलोकइसावै ॥ याजगन्नांतनीसाचकरीतुमगेहजरै
निजमंगलगावै ॥ ४१ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ गंधारीकहैरीतभ
रतारक्यूंनसोचैमनसुयोधनकरीभीमसेनस्यंधरूपहै ॥ म
रेहुतेंस्यंहकोस्वभाववैरभावनाहींजातय विख्यातंवातउप-
मांअनूपहै ॥ मृत्युगजमांसकीबयारतेंव्हैवायचूकी मृत्युसिं
हतेंलतेंतावायकोंविलूपहै ॥ भूपनकोंभूपहैतूंव्हैहैदीन हूंतें
दीनपूतकोंनिवारेनाहिपस्योमोहकूपहै ॥ ४२ ॥ ॥ दोहा ॥
॥ ॥ कहिधृतराष्ट्रसद्रुपदजा तुममप्राणसमान ॥ पुत्रव
धुनमेंश्रेष्ठहै लेमोपेवरदान ॥ ४३ ॥ ॥ द्रौप० ॥ ॥ मे
रोपांचोपतिनजुत दासभावछुटिजाई ॥ मेरेपतिरथशस्त्रजुत
ममग्रहदेहुपठाई ॥ बहुरिलेहुवरएकवर लाइकतूंनलखाई
॥ कह्योद्रुपदजाएकवर मेरेसतवरपाय ॥ ४४ ॥ छत्रीएकहूंवै
श्यकूं विप्रनकाजअनेक ॥ लैनेदेनेवरससर तातैलेहूएक
॥ ४५ ॥ तथाऽस्तुकहिकियेविदा भूपपांचहुभ्रात ॥ कही
दुसासनसकुनिदोउ सनिसुयोधनबात ॥ ४६ ॥ कारेअहि
पितुतेकही पूंछिचापदियेछोरि ॥ भीमार्जुनदोऊभ्रातमम
वंसकिररवहिबहोरी ॥ ४७ ॥ पिताकहीअबकाकरों सुतक
हियेकउपाय ॥ कोलसुद्वादसवर्षकरि यकफिरख्यालखि
लाइ ॥ ४८ ॥ जोहारैसाइराजतजि द्वादशाब्दवनजाई ॥ गु
प्तरहैइकबरषपुनि कोउतेकदालखाई ॥ ४९ ॥ पुनिभुगतें
द्वादसवर्ष बनीवासदुखयुक्त ॥ भूपबुलायोधर्मसुत सुमी
पुत्रकीउक्ति ॥ ५० ॥ धर्मराजफिरिधर्मजुत उत्तरदियोनजाय
॥ बोहोरिपिताआदेसतें खेल्यौराजलगाय ॥ ५१ ॥ जीत्यौ

सकुनीकपटजुत कियोधर्मवनगोन ॥ पंचभ्रातजुतद्रौपदी रहीमातगुरभोन ॥ ५२ ॥ पांडुपुत्रबनकोगये कछुदीनवीते आय ॥ विदुरप्रबोधतभ्रातत्रिय विधिविधिविपतबढाय ॥ ॥ ५३ ॥ भावीलखिसुनियेप्रथा ब्रथासोकअबमात ॥ करहिं राजसबभूमिको लबसुतसत्रुअजाल ॥ ५४ ॥ ॥ कुंतीकं० ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ स्तुतिबंदीजनकीतेंगानगाइकनकेतेजाग तसोजिन्हेंशिवाजंबुकजगायहें ॥ मिष १ कडू २ तिक्त ३ लौन ४ खाटे ५ औकषाई ६ लारवूंजीमते ७ जिमाइकोचेपाकेफलखा इहे ॥ पहरतजिन्हकेदासनानापटांबरजेकाषांबरवर्मांबरअंग लपटाइहे ॥ क्षुधावानबालसहदेवकूंरववाइहे किनिंद्रासमेंसे रुकूविछाईकोसुबाइहे ॥ ५५ ॥ जिहुंकेमुरवारविंदछत्रछाहर हतेसोआतपअपारहीतेंकुमलानेहोयहे ॥ पांचपांचखंडके अवासहिंगलाडूबीचसोवततेतेकंकरनबीचकेसेसोयहे ॥ कुं तीकहेधन्यपांडुमाद्रीपरलोकवासी मोहिदुरवभोगनीकूंविप दावियोगहे ॥ ताहीमेंवडोहेसोचमेरेजोलडेतोबालसहदेव क्षुधासमेंकाकोमुरवजोडहे ॥ ५६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ केसेस हहेवनविपति द्रुपदसुतासुकुमार ॥ ममदुरवजानतमोरम न किनटिककरौपुकार ॥ ५७ ॥ ॥ इतिपांडवयशेंदुचं- द्रिकासभापर्वणिपंचममयूरवःसमाप्तः ॥ ५ ॥ ॥

श्रीकृष्णार्पणमस्तु.

द्रौ.
युधिष्ठिर.
सूर्यपात्र.
दान
श्रीकृष्ण.
राजा नल प्र.
अर्जुनतपं
अश्वशास्त्र
अर्जुन
स्वर्गगमन
यक्षप्रश्न
चार भ्रात
पाडव.
द्रौपदी
ह.
जयद्र.

श्रीगणेशायनमः ॥जनमेजय॥ दोहा ॥ कैसेवनकोंगमनकिये धर्मराजजुतभ्रात॥ कैसेनिकरेविपतदिन गुपतरहेकसतात ॥१॥ ॥वैसंपायनः॥ ॥पद्धरि॥ ॥कुरुराजाविपनदिसगमनकीन्ह ॥उठचलेगेलपुरजनअधीन॥सबकोंकरिपरमजसमाधान॥ओहोरायदियेकहिविविधज्ञानी॥ रिछरहगलछाडेनसंग॥नृपभयोसचिंतादुखीतअंग॥क्यूंवनेसबनकूंअरनकाज॥रहिबोवनधनविनभ्रष्टराज॥ परोहितधौम्यदियसूर्यमंत्र॥त्रयदिवसभूपसाध्योंस्रुतंत्र॥उरस्थलमानत्रिच्छनीरआप॥इकपायरह्योंठयोंअपाप॥दियेदिनमणिस्थालीअक्षयदेव॥सबहिनक्रियातेंबनाहिसेव॥२॥ ॥दोहा॥ ॥जौलौंद्रुपदकुमारिनाहिभोजनकरैंसुभाय॥तौलौंइकयहपात्रतें लाखनदेहुजमाई॥३ ॥अखेपात्रवरदानलै चल्यौंद्वैतवनभूप॥ दिनदिननूतनहोतहे वासविहारअनूप॥४॥ विन्नुअनुचरअनुचरसद्रस चहुधातरु हरिधाम॥साषाश्रितखगराबसिस परतनृपतउतराम॥५॥ छंदपधरी॥ ॥नृपाश्रमारिषनकेरहतवृन्द॥ अतिहोतकथागाइकअनंद॥चहुभ्रातसकविचरतदिसाचर॥द्विजषोषकाजआखेटकार॥लखिदुष्टजंतुकोंदंडदेत॥ भक्षिजोगिमारिरथडारिलेत॥कियेभीमकेउकराकसबीनास ॥स्नूरहतविपनवासीउदास॥पवित्रआमिषतंडुलअखेपात्र॥रिखिपतिजिमायपंचालिरात्र॥पुनिकरिआपभोजनसुप्रीत॥रहिविपनकछुकदिनयहेरीत॥सुनिकुरुधूतक्रीडासुभाय॥ वहविपनबीचश्रीकृष्णआय॥ विश्वासदेस्नूविपताबढाय॥पुनिचलेधर्मआदेसपाय॥दुरवासाप्रेर्योंआपदेन॥ लखिसमयसुयोधनधर्मलैन॥अठ्यासीसहस्त्ररिषिजुक्तआई॥ भोजनविनजार्योंहैंसभाई॥द्रौपदीकीयेभोजनसुदेस॥वहपात्रधर्योंसाहित्यअसेस॥कि

योसमरनद्रौपदी कृष्णकेर॥ हरिआयेसंकटसमयहेरि॥ इ कसाकपत्रातिहपात्रलीन॥ करिभक्ष्यकृष्णाउडकारकीन॥ तिहु लोकत्रप्तभयेसमयेताहि॥ चकिरहेपरसपर विप्रचाहि॥ ६॥ ॥ ॥दोहा॥ ॥ नकुलबुलावहुविप्रसब कहिहरिभोजन काज॥ नटेविप्रआसीसदे प्रकटकियोसबव्याज॥ ७॥ धर मपुत्रतेरोधरम सदाअखंडस्वरूप॥ खंडनकियेचाहतजु खल ताकोघटिहेभूप॥ ८॥ कहिरिषिपीछोगमनकिय हरिभ येअंतर्धान॥ रह्योभूपनिजरिषिनजुत सुखमयबंधुसमान ॥ ९॥ ॥छंदपधरी॥ ॥षट्वर्षभयेयूंवनवितीत॥ विजय तेंयुधिष्ठिरकहिसप्रीत॥ करकुतपपुत्रअवअस्त्रकाज॥ बि नयुद्धदुष्टनहिंदेहिराज॥ कहितथाअस्तुनरगमनकीन॥ इ कपाइवर्षरहितपअधीन॥ इंद्रादिदेवघरदेनआइ॥ सबतेंजु अस्त्रलीनेसुभाइ॥ इंद्रादिअस्त्रदेगयेथान॥ नररह्योगंध मादनसज्ञान॥ इकदिवसरुद्रधरिसबरस्वरूप॥ भियवृंदजुक्त आयेअनूप॥ शिवकियोएकघाइलवराह॥ चलायोबाणनर निकटचाहि॥ तिहकपटभिल्लुबरज्योसुतंत्र॥ इहिप्रथमग्रास समक्रोडअत्र॥ कह्योनाहगन्योनरसहितक्रुध॥ बटिपर्योप रसपरजुधविरुध॥ स्वयभयेउभयेअक्षयनिषंग॥ असिधारि चल्योसिवपेउमंग॥ तिलतलंहिछेदिहरखडगताहि॥ चकरह्योकि रीटीबदनचाहि॥ जुरपर्योभुजनतेंद्वंद्वजुद्ध॥ कछुच्यंप्योहरउर धरअक्रुद्ध॥ मूर्छितसुगिर्योतबभूमिमांहि॥ नरकर्योसुउद्यम फुर्योनाहिं॥ चितभयेगईमूर्च्छासिचेत॥ हरमूरतिरेतमयकु- रिसहेत॥ चढावेपुष्पनरतोरितोरि॥ वहभिल्लुसीसदरसेबहो रि॥ पहिचानिरुद्रतबपर्योपाय॥ लीनोकपर्दिनिहिउरलगा य॥ पाशुपतिअस्त्रदीनोसप्रीत॥ भयेअक्षयतूनपुनिसत्रु

जीत ॥ पठवायइंद्र नरलेनकाज ॥ मातुलीजुक्तरथहरितबाज ॥
परिक्रमनजुक्तकरिरथप्रवेस ॥ सुरलोकजाइ भेट्यौसुरेस ॥
अर्धासनलेबेठ्योसुइंद्र ॥ मनविसमयभोलोमसमुनींद्र ॥ ॥
॥ इंद्रउवाच ॥ ॥ नरदेहजानिनर अमहुनाहि ॥ ममअंस
विष्णुअवतारमाहि ॥ मृत्तलोकधर्मस्कत येमहंत ॥ विजय-
केकुसलकहियोवृत्तंत ॥ बंधुनजुतचिंतातुरविसेस ॥ अर्जुन
वियोगव्है हैअदेस ॥ कहिइंद्रइतोरिखविदाकीन ॥ उतरह्यो
किरीटीपितुअधीन ॥ निजमुखस्करेसचित्रकेतुनाम ॥ गंधर्व
हिभेस्योसुगुनग्राम ॥ अर्जुनहिसिखाचहुजुतअनंद ॥ विधिगा
ननृत्यजुतवाद्यवृंद ॥ कहितथास्तुरहिविजयपास ॥ हितबढ्यो
सखापनजुहुलास ॥ सीखतजुतअस्त्रविद्यासंगीत ॥ प्रतिदि
वसबढतस्कतपिताप्रीत ॥ इकदिवसदईअज्ञास्कदेस ॥ विच
सिंधुवसतसुररिपुविसेस ॥ विधिवरतेंस्करतेंअजितआहि ॥
तूमनुजरूपकरिनासताहि ॥ मातुलीजुतव्हैममरथारूढ ॥ नि
रसन्नुकरहुसुरलोकगूढ ॥ १० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ लैआज्ञासु
रराजकी चल्यौविजयस्करनाथ ॥ कवचनिबातरुकालरवंज
इकदिनदीयेमिटाय ॥ ११ ॥ कियेनिष्कंटकअमरपुर करताहि
रनपुरनास ॥ नरभुजपूजेंइंद्रत्रिय पुरत्रिहुस्कजसप्रकास
॥ १२ ॥ रतननजडितनिजसीसको दियोकिरीटस्करेस ॥ नामकि
रीटीताहितें भयोविख्यातविसेस ॥ १३ ॥ नरहिअस्त्रबरदा
नजब देनगयोस्करभूप ॥ गंधमादनस्कररमनको नाटिकभ
योअनूप ॥ १४ ॥ देखीथीजबइंद्रनेंअर्जुनकीउतमेख ॥ द्रष्टि
उरबसीरूपमें जानीप्रीतिविसेष ॥ १५ ॥ कियआज्ञाचित्रके-
तुकू अर्जुनकेप्रियकाज ॥ अतिशृंगारजुतउरबसी वापैपठ
वहुआज ॥ १६ ॥ कह्योइंद्रतेंसेहिकियो सबउरबसीशृं

गार ॥ चलीदेखमाहितभई नरकहांसुरपुरनारि ॥ १७ ॥ सु
त्तताहेंआगमउरबसी नरसनसुखनियराय ॥ कह्योंहुकम-
कीजैकछु ममकुंताधिकमाय ॥ १८ ॥ ॥ उरबसी० ॥ ॥
देख्योतूं मेरीतरफ लोभदृष्टगिरप्रष्ट ॥ इंद्रप्रेरीआइइहां देव
भावकरनिष्ट ॥ १९ ॥ नरकोंहमसेवेंकहां दिव्यरूपसुरदेह ॥
किहीकारनमाताकही नटैतोआपहीलेह ॥ २० ॥ ॥ अर्जुन
उ० ॥ रहीपुरूरवाग्रेहतू कियोप्रगटममवंस ॥ फिरपारेचरि
याइंद्रकी करतसुमैंतिहिअंस ॥ २१ ॥ तातेंमैंतुहिलखत
हों औरभावनहिकोंय ॥ इतनेहपैंआपदे सिरधरिलेहूं-
सोय ॥ २२ ॥ ॥ उरबसीवाक्य ॥ ॥ तेजस्वीकोदोषकछु
लगतनसुरपुरबीच ॥ मानभंगकीनोजुतुम होहुनपुंसकनी
च ॥ २३ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ पठाईसुरेंद्रउरबसीकोनरेंद्रपा
सकीनोसत्कारदीनोज्वाबबडीरीतसों ॥ इंद्रत्रितातेंमैंयावं
सकीकरैयामेरेकूंतातेंअधिकबातेंदोनोंकीप्रतीतसौं ॥ जा
केकाजभूपतिपुरूरवाभयोनिलाजवस्त्रत्याजकौनज्ञानदाखौ
गैलप्रीतसों ॥ ताहितेंहस्योनमनअर्जुनकस्योनसंगत्रततनेंट
स्योनत्यूंटस्योनआपभीतसों ॥ २४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ चित्रके
तुकहेइंद्रतें निसबीतीज्योंबात ॥ उरलगायनरकोंकह्यो भ
लीभईयहबात ॥ २५ ॥ वर्षएकजोंलोगुपत भोगहुआपसु-
धीर ॥ तबदुरावयहस्वांगविन वनतोमुसकलवीर ॥ २६ ॥
अग्निधौत्रभूखनवसन दियेकुटुंबकेकाज ॥ पहुंचायोरथ
जुत्तनर जहांधर्मकुरुराज ॥ २७ ॥ पांचदिवसनरसुरनके
रह्योइंद्रआधीन ॥ पांचवरषजोलोधरम सबतीर्थाटनकीन
॥ २८ ॥ देखिअनुजअस्त्रनजुकत्त बहुहरख्योकुरुवीर ॥ भूप
किरीटीतेंकह्यो अस्त्रदिखावहुधीर ॥ २९ ॥ अस्त्रयादकीने

विजय होनलगेउतपात ॥ धराधूजिउलकापरत नभसुनपान दिखान ॥३०॥ नभवानीभईसुरनकी इहमतकरहुउपाव ॥ वनिहै जुधतबदेखहै तूंसवअस्त्रप्रभाव ॥३१॥ कोऊदिनवीते कुबुधिकारि नृपतसुयोधननीच ॥ मंत्रकियोन्व्हुदुष्टमिल चलोविपनकेबीच ॥३२॥ करिमिसजात्राघोसको लैपितुतेंआदेस ॥ चल्योत्रियनजुतकुटिलमति सेन्यालीयविसेस ॥३३॥ पांचअ्रातकूंमारिकें करेनिकंटकराज ॥ नातो देखिदिखाइहैं इहकपटमनसाज ॥३४॥ भेज्योइंद्रसिषाइकें चित्रकेतगंधर्व ॥ करहुक्षेमसकलधर्मके हरहुसुयोधनगर्भ ॥३५॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ घोषजात्राव्याजतेंचंडालचोकरीकेदलआयोहै युधिष्ठिरकूविभवदिखावेको ॥ दावलगोपांचोमारिनिस्कंटकराजकरें नांतो चलोजरेपरलोनसोलगावेको ॥ इंद्रकोपठायोचित्रकेतूतातेंभइभेटकर्नजेसेसूरमत्तोकीनोभागजावेको ॥ भुजापिटिबांधिहैसुयोधनकोलेकेंचल्योभ्राताजानिकिरीटीको इंद्रतेंमिलावेको ॥३६॥ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भगेदूतकुरुसेन्यके कहीजुधिष्ठिरपास ॥ बांधिलियोत्रियजुतसुरन सुतधृतराष्ट्रनिरास ॥३७॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ युधिष्ठिरकहैचारोभ्रातनतें दोरोवेगसुयोधनबंध्योदेखिदेवत्रियहसेंहींगी ॥ चित्रकेतूछोरेताहि विधितें छुरायलावो तुम्हेंदेखिदेवनकीवाहनीत्रसेंहेगी ॥ त्यूंहीकह्योद्रोपदीदुरानीओजिठानी काजजन्हतेंछुरायलायेकुंताइलसेंहींगी ॥ औगुनपेंगुनकूंसुयोधनमानेंतोहुसुकरपांडुनंदनकीकीर्त्तिनानसेंहींगी ॥३८॥ ॥ दोहा ॥ ॥ तथाजुधिष्ठिरकीछिमा तथाविनोलाखेत ॥ ताकूंसबदुखदेतहै सोसबकूंसुखदेत ॥३९॥ ॥ भीम० ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ चहेंभुजबंधमणीजटितअमोलजहांतहांरसरीकेबंधदेखेंहोरनहारको ॥ चढतसुगंधतेलतहांलपटानी

धूरिराजकोंअधारदेखौभयोनिराधारको ॥ कहैभीमसहैक्यूं स्वयोधनअसह्यदुःखगहै कैसेकंजफूलभूधरकेभारको ॥ दुह्द गांधर्वताकेमहानीतवानराजाकीनोवासिऐसीजोग्यनाहींक रतारको॥ ४०॥ ॥दोहा॥ ॥बंधछोरिक्षुटकायदिय आयो करनसमीप ॥कर्नकहैगांधर्वतें जीत्योप्रबलमहीप॥४१॥ ॥ स्वयोधन०॥ ॥जोमोमैंबीतीविपत तुमनहिजानतनात॥ औरकहैत्योंप्राणल्यूं जाणतसनयहवात॥ ४२॥जिनकूंदेखि दिखाइवे आयोविपनविहार॥ तिनहिंछुरायौजीवदे क्यूंस- हिउपगार॥ ४३॥दुसासनकूंराज्यदे गजपुरकरहुनिवास ॥तजिहौंप्रानयूंकहिलियौ अनसनव्रतसन्यास॥ ४४॥दैतन मेल्यौकर्नबिच नरकासुरकोजोर॥ह्वैपरीतसमुझइतिन प्रेर्योग जपुरओर॥ ४५॥ भीमादिकचहुंभ्रातनें जीतिदिसाजुचार ॥ कर्नअकेलेंजीतिसोइ कियोजग्यप्रस्तार॥ ४६॥काविचि त्रसुतअंधके सुभहोयकरनसहाइ॥ फरतअन्यपयलूनतें अर्कफटतरहिजाई॥ ४७॥ पठयेदूतजुनृपनपें करतस्वयो धनजग्य ॥ आवहु छत्रीविप्रसब कहाअग्यकहातग्य॥ ४८॥पठयदुसासनभीमतें दूसकहैसमझाइ॥जग्यकरतकु रुराजजित तुमकोपठयबुलाइ॥ ४९॥ ॥भीम०॥ ॥ कुंडहोइकुरुखेतजब व्हैहैपशुतवभ्रात॥सखाव्हैहैममगदा तबआवैंगेतात॥ ५०॥कियोस्वयोधनजग्यबहु दियेविविध विधदान॥जीतिजुधिष्ठिरतैंअधिक द्वादसाब्दभइजानि॥ ५१ ॥बडेलोकधर्मज्ञतें विरुधभयेसबरीति॥ होनजुधिष्ठिरतेंअ धिक धरीस्वयोधननीत॥ ५२॥ ॥छंदपधरी॥ ॥ भयेबंधुपंचकछुंविपतबीच॥ नृपसिंधुआयतिहसमयनीच॥ द्रौपदीहरनकीनोजुदुष्ट॥ पांचहुवीरसुनिलगेप्रष्ट॥ नरहतअ

स्वरथदूरजात ॥ भजिचलेोपयादोविमदगात ॥ लियपकरिभी मदियप्रसबंध ॥ मार्योनदुसीलाकेसमंध ॥ करिश्र्रर्धसुंडनछुट काइदीन ॥ हरहेतभयोतपउग्रलीन ॥ भवकह्योमागवरदान भूप ॥ जयद्रथजुकहृतकारनश्रनूप ॥ ५३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पांचहिपांडवएकमें जीतूंयहवरदेहु ॥ ॥ शिव० ॥ ॥ श्रर्जुन देवनतैंश्रजयजारिजीतिजसलेहु ॥ ५४ ॥ श्रर्जुनबिनइकदिवस तूं जीतहिगोचहुभ्रात ॥ तथाश्रस्तुकहियहगयो करिऐसोउ-त्सात ॥ ५५ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ एकदिवसजुधिष्ठिरबनबि हार ॥ कोईकरीविप्रश्रातुरपुकार ॥ मृगश्ररनीहरनजुकरयोसो हि ॥ ताकोफिरल्यावनजुक्ततोइ ॥ गइश्रटकिपूजावतश्रृंगबीच ॥ निजभ्रातसहितमृगहनहुनीच ॥ पांचहुबंधुकीनोप्रयान ॥ मृगषोजनपायोश्रमतमान ॥ भयेश्रमितत्रषातुरपंचभ्रात ॥ जलकाजभयेयकएकजात ॥ पीछेनफिरेनृपगयोश्राप ॥ चहुं मृतदेखिउपजोसंताप ॥ यकलरव्योंजक्षठाढोश्रनूप ॥ तिनकह्यो पानजलनकरिभूप ॥ ममप्रसंनउत्तरबिनकरिहिपान ॥ सुनिकेहै चहुंबंधुनसमान ॥ नृपकह्योकरहुकछुप्रश्नश्राप ॥ प्रतिउत्तरकरि हुंगुरुप्रताप ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जक्ष० ॥ ॥ कोनमोदजुतजक्तमें कोश्राचर्जलरवाइ ॥ कोनपंथवार्तासुका कहिपुनिबंधुजि वाय ॥ ५६ ॥ ॥ युधिष्ठिर ॥ ॥ पंचमदिनश्रथवाछटेसा कपचतनिजग्रेह ॥ विनप्रवासविकरजजग मोदजुक्तनरदेह ॥ ५७ ॥ दिनदिनप्रानीमात्रजे जमकेश्रालयजात ॥ थिरता चाहतपाछले फिरकाश्रचरजतात ॥ ५८ ॥ बेदत्रिधाशटधा स्मृती मुनिमतभयेश्रनेक ॥ धर्मतत्वश्रतिगुप्तहै पथसतपुरुष विवेक ॥ ५९ ॥ मोहकटाहरुश्रग्निरवि निसदिनइंधनजानि ॥ का-लपचावतभूतसब येहवारतामानि ॥ ६० ॥ ॥ छंदपधरी ॥

तेदयेउतरसबजुक्ततात ॥ तूंकहैइकसोइजियैभ्रात ॥ युधिष्ठिरकह्यौनकुलहिजिवाय ॥ ज्यौंमाद्रिवंसनहिनिष्टजाय ॥ कहिजक्षभीमअर्जुनविसारी ॥ नकुलकुजिवावतकुमतिधारी ॥ जिनकोप्रभावतिहपुरप्रसिद्ध ॥ जुरिकरिहिपराजयसत्रुजुध ॥ इनदोउनविषेकोजाचिएक ॥ करिहैजुराजहनिसत्रुकेक ॥ ६१ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पृथाबंसमेंहूप्रकट चहियेमाद्रीवंस ॥ धर्मविरोधकवानकूं कहतनमहतप्रसंग ॥ ६२ ॥ जक्षकह्यौ तवपिता धर्मराजमोहिजानि ॥ होयाहिरनअरनीहरी पररवकाजतोहिमानि ॥ ६३ ॥ पुत्रलेहुवरदानअब तूंअतिधर्मसधीर ॥ अरनीलेचहुभ्रातजुत गमनकरहुबरबीर ॥ ६४ ॥ दीजेपितुवरदानमोहि ॥ कठिनबरषयहआहि ॥ प्रगटनव्हैत्रियबंधुजुत तथाअस्तुकहिताहि ॥ ६५ ॥ ॥ इतिश्रीपांडवयशेंदुचंद्रिकावनपर्वणी षष्ठममयूरवः ॥ ६ ॥ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥

॥ अथविराटपर्वआरंभः ॥

चौपट
पासाकाम
उत्तरास्त्व
यंवर
भीमसेन.
भीम
मल्लजीमूत

॥अथविराटइंद्रसेनकृपापात्रतें॥ ॥युधिष्ठिर०॥ ॥दोहा॥
जित्तपूछैतितकहहूतुम गयेथेविपनविहार॥ पांचहुद्रुपदकमारि
तुज बहुरनपाईसार॥१॥ ॥छंदपधरी॥ ॥करविदाइंद्रसे
नादिसाथ॥ चहुभ्रातद्रोपदीजुक्तपाथ॥ धौम्यकोंसोंपिनिजअ
ग्निहोत्र॥ गमनकियेभूपछिपवायगोत्र॥ मच्छदेशआइवैराटती
र॥ द्रुपदाहिनिभावतचलेवीर॥ बिचसमीसबनकेसस्त्रबांधि॥ मृ
तदेहजुक्तधरिरज्जुसांधि॥ भीमबनीसूदभटकंकभूप॥ आपतेवि
जयब्रहनटारूप॥ साल्होत्रिनकुलसहदेवगोप॥ सैरंध्रीद्रौपदीर
हितकोप॥ अनुक्रमहिकियोनृपपैंप्रवेस॥ वितआदरजुतराखेवि
सेस॥ सोपीअर्जुनकोनृत्यसाल॥ बहुदासिनजुतनिजसुताबाल॥
उत्तराहिसिखावतनितसंगीत॥ वादित्रगानजुतनाट्यरीत॥ कछु
दिवसगयेएकविप्रगेह॥ उपवीतमहोत्सवभोअछेह॥ तहँपाठ्य
कारमल्लादिकेक॥ अतिदेसनतेंआयेअनेक॥ सबजीतेयकजी-
मूतमल्ल॥ यतभीमजुर्यौतिनतेंअचल्ल॥ सोइभीमपटकिमार्यौ
सक्रुध॥ जगकूंभोविस्मयदेखिजुध॥२॥ ॥दोहा॥ ॥साल
भद्रनृपमच्छको कीचकमुख्यप्रधान॥ सैरंध्रीकोरूपलखि भो
कामांधअयान॥ रतिज्याचीकैउचारतिहि कह्योद्रौपदीताहि
॥ मैंगरीबविपदासहित करतदुश्तकाहि॥४॥ फिरिमेरेभ
रतारहैं पांचप्रबलगंधर्व॥ गुप्तरहैतेजानिहैं हतहिवंस
तवसर्व॥५॥ ॥कीचक०॥ ॥दसहजारगजबलसहित
तेकहाकरिहैंमोर॥ पूर्वत्रियामेरीसकल करिहोंदासीतोर
॥६॥ कियोअनादरद्रौपदी गयोसुदेष्णागेह॥ भगिनीप्रतअ
तिनीचमति कारनप्रगट्योयेह॥७॥ कोईकारनसैरंध्रिकुं पठ
वहुमेरेपास॥ वाकेबिनप्रापतभये॥ ममतनव्हैहैनीस॥८॥
कहैसुदेष्णाभ्राततें करहुगोठतुमप्रात॥ मदिरालेवेमेलिहूं से

रंध्रीकोतात॥ ९॥तथाअस्तुकहिगोठकी कियोशीघ्रसामा
न॥प्रातभयेसैरंध्रिप्रत राज्ञीकहतबखान॥१०॥ममहितम
दिरालेनकूं जाहुभ्रातममगेह॥ ॥द्रौपदीवाक्य॥ ॥बहु
दासीपठवहुअवर मोहिउपजतसंदेह॥११॥ तोरभ्रातअति
दुष्टमति करहिमोरअपमान॥करतसमझिकुलकोकदन य
हधोकचनसयान॥१२॥ ॥छंदपधरी॥ ॥नहिंकरहि
तोरअपमानभ्रात॥मेंपठईयहकारनविख्यात॥द्रौपदीच
लीलेसुरापात्र॥करिअर्जसुर्जतेंध्यानमात्र॥विभाकरदीयो
राकसपठाय॥रह्योगुप्तद्रौपदीहितसहाय॥कीचकपेंजाची
सुराजाय॥यहकह्योदेखियहबीचआय॥तबकाजरतनवि
धविधतयार॥मोहिदासजानिकरिअंगिकार॥धरिसुरापात्र
फिरिचलीवाम॥कुटिलभोगेलचितविकलकाम॥वस्त्रकोहा
थडार्योउचार॥सोफटयोगिर्योभजिचलीनार॥भटकंकयुक्त
जहांमच्छभूप॥करिरहेअक्षअक्षक्रीडाअनूप॥तिनलखत-
लातकोकरिप्रहार॥चाल्योफिरघरकूंदुराचार॥भीमकूंलख्योप्र
लयाग्निरूप॥अग्रजअंगुष्ठचाप्योअनूप॥अबरहीमासइकअ
वधिओर॥थिररहहुपराक्रमनहिंनठोर॥नृपमच्छतेंद्रुपदाक
हतनेष्ठ॥तबराजबांचतियराजश्रेष्ठ॥बिपतादिनबितबतनिरप
राध॥तुहिंलखतलातमारीअसाध॥ममरक्षकपांचाहिपतीमू
ढ॥गंधर्वरहेक्यूंहोईगूढ॥भटकंककह्योकरअक्षडारि॥
त्रियकरतहेंअंतहपुरपुकारि॥रक्षकनकहतदुखादन्याय॥
करिहैंतवरक्षासमयपाय॥बिनखानपानसोइदिनविहाय॥पु
निऊठिअर्धनिसबखतपाय॥रसोईयानचलिढरतनैन॥दुखक
रनप्रगटढिगभीमसेन॥१३॥ ॥दोहा॥ ॥बीचमहानि
सनींदविन भीमसेनजुतक्रोध॥मनहुगुफालयसिंहकूं सिं

हनकरतप्रबोध ॥१४॥ ॥छंदपधरी॥ ॥कहेंभीमअर्ध
निसकवनकाज ॥आईतूंनिंद्रासमयआज॥कहित्रियाजुधि
ष्ठिरपतियपाय ॥क्यूंरुकभहोइनिरसोच्चकाय॥सबराजतज्यौं
तिहकुमतिचाल॥मदमस्तकरीज्यूंफूलमाल॥१५॥ ॥क
बित्त॥ ॥सहस्रअठ्यासीस्वर्णपात्रमें जिमावनसोयुधिष्ठिर
औरकेअधीनअन्नपावेंहें ॥अर्जुनत्रिलोककोजीतेयाबेरबनि
ताकेनाटिकसदनबीचबनितानचावेंहें ॥राजातूंबकासूर हिडं
बकोकरैयावधपाचिकविराटकोव्हेरसोईपचावेहे॥ माद्रीकेसु
जसकारदोनूंहीस्वरूपमणिएकअश्वबीचएकगोधनमेंधावेंहें
॥१६॥जाकेसीससोवत्तहोइंद्रकोकिरीटतापेगुहीवेंनीजारही
पचाऊंदुरवकोनसो॥गांजीवकीमुरवीतेंअंकितजेपूंचेभयेचूरि
नतेंढकितकूंभातेभानुभौनसो॥जुधरंगभूमिबीचदेतहोअरीन
शिक्षानृत्यरंगभूमिमेसिरवावेदासीजोनसो॥आसमुद्रपृथ्वीस
कीपाटरानीदासीहूंमेतापेंदुषकीचककोदाधेपरलोनसो॥१७॥
कुचनकीठाहरपेंकेचुकीक़सीहेंदेरिवतलथानटाहरपेंचूरिनकेवृंद
हें॥क्रपाकोपपुंजकेनिवासदोऊनेननमेंकजराभरनोऐसोमहासो
कफंदहें॥सिरआनतहांसीसफूलदोनूंहाथनतेंगांजीवकीघोषना
मृदंगनकेछंदहें॥कोनदेसकोनकालकोनदुरवकापेकहुंकैसेनि
द्रालगेमोकूंकोनसोअनंदहें॥१८॥ऐसीराजराणीमेरीचाहती
क्रपाकीदीठताकीक्रपादीठकाजसादीव्हेरह्योकरौं ॥चंदनघ
सितफालेफूटकेकठोरकर भयेऐसेदेरिवदुरवमनमेंदह्योकरौं॥

॥रोयलपटायगरेद्रौपदीपुकारकरेकष्टभीमक
॥१९॥ ॥दोहा॥ ॥निजप
निजअंशुनकूंरोकि॥त्रियहिवृकोदरलखि

यउर करतनियमजितसोक॥२०॥ ॥सवैय्या॥ ॥मेरोतो कोपसमुद्रअसाध्यअगस्तयुधिष्ठिरकोपमेंपीगयो॥वाडवको पमेंभ्रातकीनेमसरस्वतीकुंडलतातेंदबिगयो॥दाहविराटमें कोपमेंकोलगुपालतेज्वालकोंपुंजपचीगयो॥काहितेंभ्रातलों-जीहेंसबांधवजाहितेंआजिलोंकीचकजीगयो॥२१॥ ॥दोहा॥ ॥ ॥कहहुभ्रातवादुष्टसूं करिनृतसालसंकेत॥मेंबेठहुंताभव नमें मथमहिमारनहेत॥२२॥कह्योभीमत्यूंहीकह्यो भ्रातद्रौ पदीताही॥निसऐहुंनृतग्रहगुपत देखतथीतवचाहि॥२३॥ सुनिहुलस्योनृपमच्छकी कीचकदुष्टप्रधान॥नवनवपटभूखन धरत दिनभोबरखसमान॥२४॥सेरंध्रीकेलोभानस नृत ग्रहगयोसहेट॥पूरबकर्मप्रभावतें भईभीमतेंभेट॥२५॥ ॥ ॥सवैय्या॥ ॥भूखनअंबरतेंभयोभूषित सांतिकीवेरज्यूंदी पककीदूति॥चाहतहानिजअंगनतेंजुअलिंगनतेंवपुभारिदि येअति॥आजलोंथंबनबीचअधोमुखभीमकीभेटतेंऐसीब नीरति॥वीरकीबासकूंदुष्टकटाछतेंदेखियोदेखकेकीचककी गति॥ ॥दोहा॥ ॥भीमउठाइपछारिभुच कियोगांठभचकाय ॥कीचककेलागाकठिन भूषनदूषनभाय॥२६॥इंद्रदसानन बालिग्रह भयोकछूनहिंछेम॥सद्यफल्योकीचकसदन पर दाराकोप्रेम॥२७॥ ॥छंदपधरी॥ ॥भयोप्रातएकस तपांचओरकीचककेबंधवअतिकठोर॥मृतभ्रातदेखिद्रौ पदकुमार॥लइपकरिजरावहिंभ्रातलार॥द्रौपदाकरीकरुना पुकार॥सुनिभीमरसोईकेअगार॥प्राकारढहावतचल्योधी र॥विनुपंथगुप्तकाजकेवीर॥सबकीचककोकरिकुलसंहार ॥द्रुपदाछुडायआयोउदार॥इहवातनजानिपुरुषओर॥गंधर्व हिजोनप्रबलघोर॥द्रौपदीकहूंजोपरेंदीठ॥प्रगटदेरहेजेपुरुषपी

ठ॥ ॥दोहा॥ ॥प्रेरिसुयोधनदूतकेउ प्रगटकर्नसुतधर्म॥
दससदिसतेंपीछेफिरे कहूनपायोमर्म॥२८॥सभाबीचभयेएकठे
सुनिदूतनकेबैन॥गंगासुतकहिसबनतें तर्कबांधियहसैन॥
॥२९॥ ॥छप्पै॥ ॥जहांयुधिष्ठिरहोइतहांदुर्भिक्षनपावे॥
जहांयुधिष्ठिरहोइ सतईतीनलखावे॥जहांयुधिष्ठिरहोईबर
नचहुपरमधरमपर॥जहांयुधिष्ठिरहोयसुतरुरवटरितुफूल-
फर॥जितहोययुधिष्ठिरनृपनितजग्यमहोत्सवहोत॥नितक-
हिभीष्मलछवरततसकलमछदेसवैराटजित॥३०॥ ॥दोहा॥
दससहसगजबलप्रबल कीचकमच्छप्रधान॥मल्लजीमूतादिक
हतक भीमविनाकोआन॥३१॥ ॥कर्न०॥ ॥देससुसर्माको
लियो कीचकछीनत्रिवगर्त॥चलहुकरेमोग्रहणतित सजहुसे-
न्यअबर्त्त॥३२॥अर्जुनसुनिगोग्रहनकूं पोरखकरहिप्रकास॥
मानिसुयोधनकर्नमत चालियोसहितउलास॥३३॥ ॥छंदपध
री॥ ॥सप्तमीप्रथमसैन्यक्रूर॥सुसर्माकियेगोग्रहणसूर॥सु
निकूकचढ्योवैराटभूप॥जुधिष्ठिरभ्रातत्रयजुतअनूप॥भोउ
भयसैन्यसंग्रामघोर॥जीत्योजुसुसरमाप्रबलजोर॥मच्छकोप
करिचल्योमूढ॥भीमतेजुधिष्ठिरकह्योगूढ॥निकारीविपतिजाके
निवास॥ताकूंछुडाहुकरिसत्रुनास॥जोभईप्रथमनृपमच्छरीत॥
जूंकरीभीमजामातुरीती॥सिरकाटनलागोभीमसेन॥निवार्यो
जुधिष्ठरसदयनैन॥लखिजीवदानकोसुजसलेहु॥दासोस्मिक
हतछुटकायदेहु॥चितकुरुकुलकोजामातुचाहि॥तजिजियकिय
मुंडनअर्धताहि॥करिविजयकियोउतहिसुकाम॥अतिदईमच्छ
भीमहिंइनाम॥अष्टमीसुयोधनभूपआय॥पुनिकीयोउतरगोग्र
हणपाय॥पुरबीचकरीग्वालनपुकार॥कहुवचनकहेउत्तरकुमार॥
मोकूंकोअर्जुनगिन्योगूर॥सुयाधनहरेघनरथारूढ॥काकरूसा

रथीमोरनाहि ॥ मरिगयोप्रथमसोइजुमाहि ॥ यहबचनद्रौपदीसुनिअकाज ॥ कुंवरतेकह्योबृहनटाकाज ॥ यहह्वोयसारथीतोरआज ॥ निरकुरुकहाजीतहिदेवराज ॥ यउसारथिजुतअर्जुनउदार ॥ इंद्रादिसमरजीतेअपार ॥ ३४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कुंवरकहै सुनबृहन्नटा तूंरथहांकहिमोहि ॥ ऐहूंसत्रुनजीतअब देहूंबहुधनतोहि ॥ ३५ ॥ रथारूढ़ह्वैकेकटे कबचकसेदोऊवीर ॥ समीजायभाथाअषयं धनुगांडीवलियधीर ॥ ३६ ॥ लखिआवतसामीपरथ कहतपरस्परचाहि ॥ आजसुयोधनसैन्यपै एकरथी-कोआहि ॥ ३७ ॥ ॥ सुयो० ॥ ॥ कालिसुसर्माधनहरयो अपनहरयोधनआज ॥ भयसंजुतमछभूपने कन्यादइनृपकाज ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ द्रोन० ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ मामातेरोकहैकन्याभेजीहैविराटभेटताविवाहहूकेगारीगीतजेसुनोहीगे ॥ रोवेंअ-स्वध्वजागिरेसरूजेरिवसलपरैबोयेबीजताकेफलमिलकेलुनोहीगे ॥ त्रियानाकिरीटीव्हैहेधूजतनिहारोधराकपिकीगरजसुनेंसिरकूंधुनोहीगे ॥ माननवातचारुदिसाउतपातहोनजातवेदगोजिवतेगातकुंभुनोहीगे ॥ ३९ ॥ कहैद्रोनआवतहिदेखकेअकेलोरथऊ-र्ध्वध्वजदंडताकोतेजअद्भूतहै ॥ चिक्करतवाहनचलाकीचुतनूरभईचारूभटचारुसुतअपनेकुसूतहै ॥ धूकनहैधरनीओरधूंधरोदिखावतनभहोतअनमित्तधीरत्यागेरिनधूतहै ॥ गांजीवसरासनधरयोहैसत्रुनासनकौत्रासनतनकपाकसासनकोपूतहै ॥ ४० ॥ ॥ कर्न० ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ काउतपातबतावतहैहमएकहुबातनजीवपैंआनंत ॥ द्रोनतेंकर्नकहैकरकोपज्यूंबीदकोजीमतवीरखखानत ॥ एककहाकपिकेतअनेकपितामहसेनकूंकानपिछानत ॥ जोहमतेंदुरजोधनतेंनहिषोडसभागपराक्रमजानत ॥ ४१ ॥ का-कुसमांडकोबालकहैफलतर्जनीदेखतहीगिरिजेहै ॥ ज्यूंजुजुवा

कुदिखायडरावतबालकूंचूंकहासैनत्रसेहैं ॥ नामसुनाइकैपा
रथकोतुमदेतहो क्लीबताकोउनपेहै ॥ द्रोनवाएककिरीटीकेगोन
तेंकोनजोपीठबतायपलेहैं ॥ ४२ ॥ द्रोनकोपुत्रकहैस्कनसूतंकाप
वतगालवजाएवडाई ॥ एकगाजीवत इंद्रकोरुद्रकोतौसिलियेज
बकरतिगाई ॥ कालखंजादिकवर्मनिबातरुगंधर्वजापेअजेतुम
पाई ॥ द्रोपदीप्रापतदेखिहैआपनेंएकलेकोनाविजेउपजाई ॥ ४३
॥ बाहुतेंक्षत्रियसूरसबै द्विजवाक्यतेंसूरसदैवलखावत ॥ भीम
महाबलतें धनुतेंकपिकेतकीशूरतादेवहुगावत ॥ हैछलसूरयहै
सकुनीरुसुयोधनकूंहठशूरबतावत ॥ नीततेंसूरयुधिष्ठिरहैतु
मकर्नमनोरथशूरकहावत ॥ ४४ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ उत्तरगोग्र-
हणपुकारसुनिग्वालनतेंउत्तरकवरबोल्योकोपबेसुमारमें ॥ मेहूं-
काकिरीटीराजखोसिकेनिकारदीनोसारथीजोहोयतोदिखाऊंगो
प्रहारमे ॥ देखिव्योमचुंबितध्वजाहूकुरुवंसनकीखेदकंपअंशुते
भयेहैंताहीवारमें ॥ सबकोंदिखानोतहांपदजोनिपूंसककोस्वांगमा
त्रअर्जुनमेंलछतेंकुमारमें ॥ ४५ ॥ देखिचमूभाग्योबालपकख्यो
विलोमदोरिकह्योराजपुत्रमेरोप्रानउडिजावैगो ॥ जानदेहुतोकूंर
थबाजकरीद्रव्यदेहुंजुद्धतोंकरेगोमेरोजीवअकुलावैगो ॥ पार्थक-
ह्योअर्जुनहुंगायेरहिभाजेमतिअद्भुतबनेगोजुद्धसीघ्रविजेपावैगो
॥ अर्जुनहोआपतोसुनावोदसनामअर्थयथायोगस्रनेतेंविस्वास
दृढआवैगो ॥ ४६ ॥ सत्रुजीतबेतैंविजेशक्रकृत्यअर्जुनमेंइंद्रियो
कीटताकेकिरीटीकहायोहूं ॥ फालगुनउत्राअरुपुरुवाकेमध्य
जन्मकृष्णपंडुकृपाजिष्णुवासकोजायोहूं ॥ जुद्धमेंगिलानका
मकरुनाबिभत्सुतातेंस्वेतअस्वहीनेस्वेतबाहपदपायोहूं ॥ स
व्यसाचिवामपानिहूंसहायतातेंजानिधनंजयरसाकोद्रव्यस-
वैजीतिलायोहूं ॥ ४७ ॥ ॥ उत्तर० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अर्जु

नहोतोभ्रातचहु कितहैद्रुपदकुमार॥ ॥अर्जुन॥ ॥भूप जुधिष्टिरकंकभट बल्लुवभीमविचारि॥४८॥ ग्रंथिकारयह विदनकुल तंत्रिपालसहदेव॥हैसैरंध्रीद्रौपदी तजिविषादलहि भेव॥४९॥ होहुकवरममसारथी जुधसमयकोलेखि॥जानिभ्रातिरथी ब्रहनटा वीरनाट्यअबदेखि॥५०॥जानिबाधतलआनमम पनचकरहिपुनिगान॥नृत्यकरहिममउभयकर लेहिरीझिरिपुमान॥५१॥ ॥छंदपधरी॥ ॥करीसमीपरिक्रमयग्रहणकीन॥ तेइधनुसबानकरउभयलीन॥गोध्वजासींघलछनविलाय॥ भोचिंतितवानरविकटभाय॥ गंधर्वअस्त्रविद्याप्रभाव॥स्वेतास्वभयोरथमनस्वभाव॥ करिकोपधनुषटंकारकीन॥ भोशब्दभूमिआकाशलीन॥ बहुरिदियदेवदत्तहिबजाय॥ कियेहाकध्वजाकपिमहाकाय॥स्यूंधडधडाटरथनेमिघोर॥चकिरहेसत्रुनहिंसुनतओर॥यहरूपसैन्यपरिक्रमादीन॥ कहिसब्दभीषमप्रतिनयमकीन॥५२॥ ॥दोहा॥ ॥ क्षत्रधर्मप्रतिकूल तुमसानुकूलमैंतात॥ मैंछुडातेगोग्रहनतुमअकरमतेंनलजात॥५३॥ तोतेंव्हैहैविजयमम व्हैहैअजयतुमार॥ मैंअर्जुनमुखकाकहूं सकुनहिंकहतपुकार॥५४॥ ॥छंदपधरी॥ ॥कहियतोजुधप्रारंभकीन॥ मिलिअमरव्योमदेखतअधीन॥ गांजीवबानधनअभ्रछाय॥ पवनजनवीचनहिगवनपाय॥ इतिप्रथमभूपरितुतपअभीत॥ पुनिकर्नअनुजसंग्रामजीत॥द्रोनीकोकाट्योध्वजादंड॥ पुनिधनुषकवचकियखंडखंड॥गुरुपुत्रजानिनहिंकरीघात॥करनहिंभगायहूवेरतात॥ भीसमकेभालविचमारिबान॥ मूर्छितकरीदीनोअसहमान॥त्रिंहुलोकबिजेतातरुनअंग॥ गांडीवधनुषअक्षयनिषंग॥ अर्जुनसोईरोक्योरिनअजेय॥ द्रोनकेकरतवषानदेव॥ सोइद्रो

नकृपाचारयसधीर ॥ दोऊजीतिछुडाईगायवीर ॥ दुरजोधन कोएकबानमारि ॥ दियेछत्ररुउष्णिषभूमिडारि ॥ कृपद्रोनकर्न अरुभीष्मवान ॥ पार्थकेलगेकेंउभेदिमान ॥ इकचल्योपार्थकोमो-हअस्त्र ॥ सबगिरेवीरगिरपरेसस्त्र ॥ भीस्मकीध्वजाचितरुधिर अंक ॥ नरआयहाथलेषेनिसंक ॥ लेजातसबनकीछीनलाज ॥ करितजेजियतमृतदयाकाज ॥ पुरपठयदूतगउवनछुडा य ॥ सबकबरविजयकहियोसुनाय ॥ नृपहुनिजपुरतिहुदिव सआय ॥ सुनिपुत्रविजयचासररचाय ॥ कंकभरताहिप्रतिषेध कीन ॥ नलभयोदुखितयहविसनलीन ॥ कुरुभूपजुधिष्ठिरद्यूत काज ॥ कितगयोनजानेभ्रष्टराज ॥ मंगलकेसमयनरमहुआप ॥ गर्विष्टभूपदहुजयप्रताप ॥ नहिगन्योवचनखेल्योनिसंक ॥ क्रीडतहिकह्योभटसुनहुकंक ॥ ५६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कहैविराटभटकंकतें अहोउतरसमराथ ॥ जीत्योदेवनतेंअ जय कुरुवंसनकोसाथ ॥ ५७ ॥ कंककहेनृपवृहनदा जाकेसा रथीसोय ॥ सोजीतैसुरराजको तोउकाअचरजहोय ॥ ५८ ॥ सुनतस्तुतीममपुत्रकी रोधतहैहठठानि ॥ करतस्तुतीवासं-डकी रेद्विजतूंअज्ञान ॥ ५९ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ भीस्मद्रो नकर्नद्रोनीकुरुगजदसासनजिनकोविसेसतेजदेवनतेंमान्यो है ॥ उनहीकेप्रतापहातपांडवबिलायगयेइंद्रादिकआसनतें जनमबखान्योहै ॥ तेउजीतिएकरथीगायजेछुरायलायोउत रकोपौरसमेंआजिदिनजान्योहै ॥ धन्यमातापितादेसवंसजो सपुत्रऐसोबालवयहूमैंअदभूतजसआन्योहै ॥ ६० ॥ ॥ कंकउवाच ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ जाकेऐसेसारथी सोक्यूं वालकमित्र ॥ तीनलोककूंजीतिलै तोपुनिकहाविचित्र ॥ ६१ ॥

पास ॥ कथामहार ॥ चंलिजुधिष्ठिर-

भालतें सीग्ररुधिरकीधार ॥ ६२ ॥ स्वर्णपात्रमेंद्रौपदी झेलि लियोरतसोई ॥ मतिभीमार्जुनदेखिले निजतैंबन्चेनकोई ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ नृपकन्यासैन्यथेस्थापठाय ॥ - लायेसुउतरकुंवरहिबधाय ॥ कहिप्रथमहिनरतिहिकवरकाज ॥ पांडवनप्रगटमतकरहुआज ॥ प्रतिहारकह्योआवतकुमार ॥ भटकंकगुसबरज्योसभारि ॥ ६४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ राजकुंवरकुंआनदे ब्रहन्भटहिमतिआनि ॥ लखैरुधिरममभालकी करैसबनकीहानि ॥ ६५ ॥ मिल्योआयपितुतेंकवर लख्यो जधिष्ठिरभाल ॥ कह्योमच्छतेंकिनकर्यो ऐसोकरमचंडाल ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ मच्छ० ॥ ॥ करतप्रसंसातोरसुत षंढप्रसंसतमूढ ॥ तातेंअक्षप्रहारमें कियोसीग्रहठरूढ ॥ ६७ ॥ ॥ उतर० ॥ ॥ द्विजपेंघातअनर्थयह क्षमाकरावहुयाहि ॥ देवदूतजीत्योअमर प्रातदिखोहूंताहि ॥ ६८ ॥ प्रातसभाकीनीकवर पांडवभूषितआय ॥ श्रेष्ठासनपैंधर्मसुत प्रथमहिबैठ्योजाय ॥ ॥ ६९ ॥ देखिदूरतेंमच्छनृप कह्योकंकभटमूढ ॥ मुहलाग्योतातेंभयो ममआसनआरूढ ॥ ७० ॥ ॥ अर्जुन ॥ ॥ पाकेंअनुचरहैसदा इंद्रासनअनुरूप ॥ तेरोतुच्छासनकहा येहैयुधिष्ठिरभूप ॥ ७१ ॥ कहीसकलउतरकवर निजपितुतेंसमझाय ॥ गुप्तरहेजबतेकथा जुधपरिजंतजिताय ॥ ७२ ॥ ॥ मच्छ० ॥ ॥ मोरसुताअतिगुननजुत करैग्रहनसुतइंद्र ॥ तबउरनहोंहूंकछुक तुमतेंधर्मनरेंद्र ॥ ७३ ॥ ॥ अर्जुन० ॥ ॥ मेरेतोवह पुत्रिसम गुरुकरिजानतमोहि ॥ कलंकरहेमिश्रितकहै जोऐसी गतहोहि ॥ ७४ ॥ कह्योजुधिष्ठिरविजयकों पुत्रसुभद्रानंद ॥ अभिमनकूंदीजेसुता करहुवाहसुखकंद ॥ ७५ ॥ तथाअस्तुकहिन्यूतवें दूतनदियेपठाय ॥ संबांधिदोऊनृपनके मिलेकृष्ण

लूंआय ॥ ७६ ॥ भयोव्याहआनंदतें कीयेकरिरथवाज ॥ पठये
सुयोधनदूतयत कियेप्रगटतिहकाज ॥ ७७ ॥ ॥ जुधिष्ठिर०
॥ ॥ गयेसतदिसअधिकदिन अधिकमासतेंआज ॥ त्यूंही
भीसमद्रोनकहि नामानीकुरुराज ॥ ७८ ॥ ॥ इतिश्री पांडव
यशोंदुचंद्रिका विराटपर्वणिसप्तममयूखः ॥ ७ ॥ ॥ छ ॥
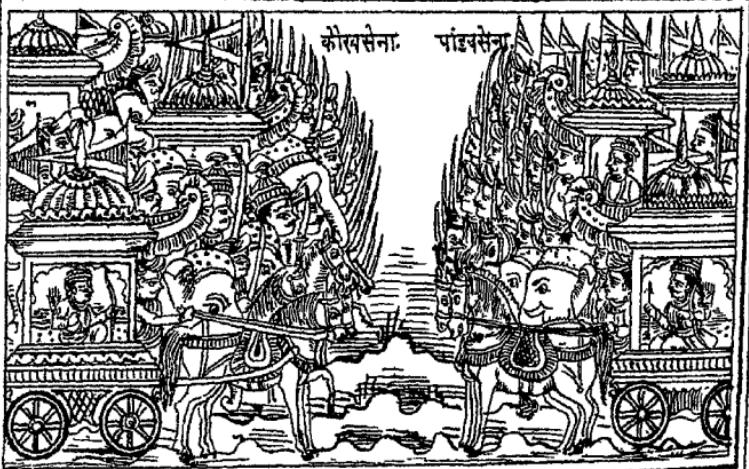
श्रीगणेशायनमः॥ ॥छंदपधरी॥ ॥वैराटसुताउत्तराविवा-
ह॥अभिमनकियकरग्रह्जुतउत्साह॥मातविवसभासबनृपप
धारि॥यस्कदेवतनयकोसुनिविचारि॥शिष्टासनबैठेनृपसधी
र॥वैराटद्रुपदवपुत्रह्वीर॥तिनअग्रजुधिष्ठिरवास्कदेव॥भीमा
दिकतिनकेअग्रभेव॥श्रीकृष्णकहतभूपनसुनाय॥लघुग्रह्सु
नहुसबचितलगाय॥संपूर्णनीतविद्यासुजाण॥सबकहहुमेत्र
बुधिबलसमान॥कीनोदुरयोधननृपअकाज॥रचिकपटद्यूलह्
रिलयोराज॥नृपधर्मधर्मपथसावधान॥पनकियोजथाकीनो
प्रमान॥त्रयोदसवर्षवनगुप्तवास॥तिनमेंसहिलीनीविविधत्रा-
स॥अबचहतनृपतअपनोविभाग॥तथापथधर्मविनभयेत्याग
॥सगपनअपनेइलउनसमान॥दोउओरकुसलचाहतनिदान॥
यहसुनितबोलिसेसावतार॥सतकारिअनुजवचबहुप्रकार॥
पठवहुदूतकुलिबुधिपुनीत॥रजाअचक्षुप्रतिविनयरीत॥सब
कहेबातविनतीसुनाय॥सुयोधनआदिसबकोसुहाय॥युधिष्ठि
रद्यूतविचप्रथमहाय॥सहिलयोआजलोंकष्टसोय॥अबपिता-
आयवहपुत्रआहि॥ताकोंविभागदीजेसुताहि॥नाहिंदोषआपकूं
हैनृपाल॥चलभयोयुधिष्ठिरद्यूतचाल॥यूंजोरबतायेविनअराध
॥अन्यथासुयोधनहैअसाध्य॥यहसुनतबचनयुयुधानआप॥प
रजस्योकृतासनछतप्रताप॥बलिभद्रसुनहुममसत्यबात॥तुम
कहेबचननिंदतनतात॥वचनएवलीजस्कननवीर॥उनकूंमेनिं
दतहुअधीर॥यकप्रछसारवताकीअनेक॥यकवांऊस्कमनफ
लजुक्तएक॥वसियेकउदरयेकस्कूरवीर॥यकमहाकुमतिका
तरअधीर॥ऐसोनयुधिष्ठिरबीचआहि॥तनमनअपलछन
कहेताहि॥अषलछनसुयोधनकेअपार॥बेठेस्कआपतिनकूं
बिसारि॥यनकोजोदूषनकहतआप॥पापिष्टसरचाताकोप्र

लाप ॥ नमावत धर्मकोकोननीत ॥ पगपरहिसुयोधनसहित
प्रीत ॥ नहिंनमेंदुष्टमदअंधनीच ॥ तोबसावहुसीघ्रजमलोक
बीच ॥ धनजयसात्विकीधनुषधारि ॥ महिकैरेनिकंटकदुष्टमा-
रि ॥ तिहलोकजीतिवोसुलभतात ॥ बपुरोदुरयोधनकितिकबा
त ॥ परिहैंकियुधिष्ठिरनृपतिपाय ॥ कैभक्षहिगृधशृगालकाय
॥ यहसुनतबोलिनृपद्रुपदयेह ॥ सातकीकहतुतुमनिःसंदेह ॥ न
मनताकियेमदअंधनीच ॥ बलगिनहिअधिकनिजसेन्यबीच ॥
जडकाष्टतयेविननमतनाहिं ॥ महासारदंडपस्कवृंदमाहिं ॥ करि
वोतथापिसामादिकाज ॥ रहेंप्रब्याजथाविधधर्मराज ॥ निज
वंसपुरोहितकूंबुलाय ॥ सबकहीरीतताकूंसुनाय ॥ जगच्चतुर
खानिचवुरासिलक्ष ॥ तिनमेंबरजंगमहेप्रतक्ष ॥ बुधिजीविति
नहिमेंअतिविसेष ॥ नरदेहरतिनहिमेंअधिकदेखि ॥ तिनमेंद्वि
जजन्महेंश्रेष्ठतात ॥ वेदाध्ययनीतिनसेंविख्यात ॥ तिनमेंबरक
हियतकरमकार ॥ तिनमेंअद्वैतवादीविचार ॥ तिनमेंअध्ययनी-
आपतात ॥ वेताकुरुपांडवकेरिबात ॥ विद्यातपकुलबयचतुरब्र
द्ध ॥ सबनातिनिपुणअरुमंत्रसिद्ध ॥ पधारहुशीघ्रकुरुब्रद्धपा-
स ॥ सुनावहुमिष्टअरुकटुकभास ॥ जदुवंसदृष्टतुमकूंनदो
ष ॥ फिरदूतजानिकरिहेनरोष ॥ पुनिभीष्मद्रोनविदुरहिप्रधा
न ॥ मिलकरहिआसकेवचनमान ॥ दुसासनसकुनीकर्नदुष्ट ॥
सुनिवचनअनादरकरहिसुष्ट ॥ इतनेंहमपठवहिदूतओर ॥ नि
मंत्रणकाजनृपठोरठोर ॥ सुयोधनकरहिकूटसंधान ॥ जुध
साजकरहिहमसमयजानि ॥ करत्ताजुधसेन्यासानकूल ॥ महा
कोपसस्त्रसाहित्यमूल ॥ तीनहुवातजाकेतयार ॥ महिराजकर
हिसोइसत्रुमार ॥ श्रीकृष्णकहैतुमगुरुसमान ॥ आज्ञावहिह
मसमसिष्यआन ॥ करहोविचारजोइआपकाज ॥ सबकरहि

मानहमञ्जुतसमाज ॥ हमहूंअबद्वारापुरीजात ॥ पुरोहितनागपुरकोप्रभात ॥ मानेनसुयोधनसंधिमूढ ॥ हमकूंबुलाइयठवहुअगूढ ॥ कहिकृष्णद्वारिकागमनकीन ॥ द्रुपदकूंनिमंत्रणभारदीन ॥ पुरोहितकियोगजपुरप्रवेस ॥ सतकारकियोबुधिच्चरवविसेस ॥ वैचित्रवीर्यपरिषदवनाय ॥ विप्रकोलीयोसादरबुलाय ॥ यतकुसलपूंछिउतकीसुनाय ॥ पूसकुलबयसममानपाय ॥ कहनपुनिबचनआरंभकीन ॥ द्रुपदादिनृपनसंदेसदीन ॥ भीमकोदियोतुमाबिषअभीत ॥ लाखयहरच्योअतिसयअनीत ॥ रचिकपटद्यूततुमहस्योराज ॥ लीनीत्रयकीबिचसभालाज ॥ अपराधसबनिकोटकनएहु ॥ दुहुलोकसधेंअधराजदेहु ॥ इतपरलोभवसिनटहुआप ॥ पुनिलखिहोगांजीवकोप्रताप ॥ ऐसादेवनरहैअनेक ॥ अर्जुनतेजीतेसमरएक ॥ अर्जुनरुभीमतेजुरयोआन ॥ कोऊबच्योसुन्योअबलोंनकान ॥ जिनसुनतकरनकहिवचनजोर ॥ वनद्वादशअब्दनिवसबहोर ॥ परिहेदुरयोधननृपनपाय ॥ लेहेंसुतिन्हेंछतियनलगाय ॥ कियप्रगटत्रयोदशवर्षमांहि ॥ न्यायविनयासयकमिलैनाहि ॥ बोलतभीमार्जुनभयवनाहि ॥ ऐसेनफूकतेंगिरउडाय ॥ गांगेयकहतप्रज्ञागंभीर ॥ विसरेबहुदिनकीबातवीर ॥ द्रौपदीस्वयंवरघोषजात ॥ तुमकरोयादमतिकरोतात ॥ माजनोंरवोयबांधवमराय ॥ जुतसेन्यविजयतेंअजयपाय ॥ वैराटअबहिबीतीविसारि ॥ महिपनविचबोलतगालमारि ॥ ऐसेकोसिरवावनसुनिअसाध ॥ विहुलोककरततबपुत्रबाध ॥ करैंजोइपुत्रतूंगिनतकाज ॥ राहिहै धृतराष्ट्रनवंसराज ॥ पितामहवचनकूंकरिप्रमान ॥ नृपहटकिकरननिजमुखनिदान ॥ १ ॥ ॥ सुयोधन० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
तुमबहुरयोजीहोबोहोत द्रोणादिकगांगेय ॥ भूमिन्नदेहोपेडभर ठाढोकरनअजेय ॥ २ ॥ ॥ भीष्म० ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥

मेरोतोहैवांछितसोंनींथोपनकुरुक्षेत्रसरस्वतीर्थमृत्युगुनीकीर-
तिकूंगुनिहैं॥ तेरेलोभमोहमानमत्सरकपटाईताकेबीजबहैफल
नीकोविधिधिलुनिहैं॥ यादकरिमेरद्रोनविदुरादिकहूकेबोलगांजीव
कोतेजदेखिपीछेसीसधुनीहैं॥ मेरेबैननीतकेनिचासनाहिस्र
निहैंतोकरनादिकवीरकोविनासवेगिस्रनिहैं॥ ३॥ ॥कर्न०॥
॥ ॥दोहा॥ ॥जोलौसेनापतिरहै यहभीष्मदुरबाद॥
तोलौंसस्त्रनकरयहु कर्नजुक्तअल्हाद॥ ४॥ जादिनगंगास्र
तमरहि दरहिपरस्परबाद॥ त्तादिनपांडुनमारिनृप हरिहूंतो
रविरवाद॥ ५॥ ॥ छंदपधरी॥ ॥ पुरोहितबिदाकीनो
सप्रीत॥ राजनतेंजाविधबनतरीत॥ तुमपीछेइपठवहुसीघ्र
तात॥ विधिसुनिहैंसंजयकहहिवात॥ उपप्लव्यआयनृपके
अगार॥ सबकहेपुरोहितसमाचार॥ गयोअर्जुनमूतनवास्र
देव॥ उतदुरयोधनआयीअजेव॥ पुरिविचकियोदोउसंगप्रवे
स॥ कुरुराज्यउतेंइतगुडाकेस॥ पोढततहांरुकमणिकांतपाय
॥ वहसमयवीरदोउनिकठआय॥ यकऊर्ध्वबैठयकअधोभाग
॥ अभिमानीयकयकसहितराग॥ बंदीजनबोलेविमलबानि
॥ गायकमिलिभैरवकियोगान॥ वहसमयजागश्रीकृष्णआ
प॥ मिसभयोप्रथमपारथमिलाप॥ सुयोधनकहतहमप्रथम
आय॥ निमंत्रणकाजव्हैजैसहाय॥ संबंधसरवाधनहैंसमान॥
दोउतरफआपजानतनिदान॥ ६॥ ॥ श्रीकृष्ण०॥ ॥ इकले
हुमोहिविनुसस्त्रएक॥ यकलेहुशस्त्रजुतबलअनेक॥ लियेरथ-
सुयोधनप्रीतलाय॥ सस्त्रविनकृष्णअर्जुनसहाय॥ ससमिलि
अक्षोहिनिइतसुभाय॥ एकादशगजपुरमिलिआय॥ संजय
नृपभेज्योसावधान॥ जुधिष्ठिरकीयोहितपूज्यजान॥ करिकु
शलप्रश्ननृपकीसुनाय॥ पुनिकहनलगेसतकारपाय॥ आप

कुयुद्धकरवोनआज॥भिक्षान्नश्रेष्ठनहिंश्रेष्ठराज॥गुरुजनको
कुलकोकरिसँघार॥तुमसेनहिंवांछितराजभार॥सबगुरुजन
करिवोचहतसंधि॥माननतनसुयोधननृपमदंध॥यहसुनतकृष्णा
करिकोपआप॥पुनिकहतदूतसोजुतप्रताप॥नहिंदेतग्रामयक
सहितनीत॥फिरभीष्मगावतकोनरीत॥कहिनितमंगावतथि
नहिंभीष॥सुयोधनदुष्टकोक्यूंनसीष॥देनहोभयेअसमर्थदी
न॥नहिंकाराग्रहबिचकरतलीन॥दिनपांचसाततितरह्योदूत॥
सबकहिसंदेसकियविदासूत॥६॥ ॥दोहा॥ ॥उतविराटसों
आयके संजयपरमसयान॥मतिअचक्षुनृपतेंमिल्यो लियआ
यसमतिथान॥७॥श्रमजुतपथरथरवेदतें अबमैंनिजग्रहजात
॥पांडुनकेसंदेससब कहहुंसभाविचप्रात॥८॥धिकनृपतेरीबु
धिकूं त्यागेबिनअपराध॥पांडुपुत्रनिजपुत्रकों गिनतअसाध-
हिसाध॥९॥गोसंजयस्वस्थाननिशि नृपबुलायलघुभ्रात॥
कह्योसुनावहुनीतकूं निद्रालगतनतात॥१०॥देअबलंबनमोहि
कूं गोसंजयनिजगेह॥कहिहैसंदेसोकहा उपजतभयसंदेह॥
॥११॥ विदुर॥ परत्रियरतपरद्रव्यहर तिनहिंप्रजागरहोय
॥आपअबलरिपुप्रबलतें करैवैरपुनिसोय॥१२॥इतेकहा
चितदोषतें बंधनहोमहाराज॥निद्रालागतनआपको इहै
कोनगतिआज॥१३॥इकतेंदोयबिचारकरि जीतिचारतें
तीन॥पांचरोकिषटजानिकरि साततजेसुरवलीन॥१४॥
॥ ॥कबित्त॥ ॥एकबुधिव्रतहितें कारजअकारजकों
नीकेकैविचारसत्रुमित्रउदासीनकों॥कोप्याशामलोभ्यांदाम-
भीतेभेदहीनेदंडचारतेंयारीतजीते पूर्वकहैतीनकों॥पापड़
ड्रीवेगरोकिसंधिविग्रहादिषटजानसप्तविष्णतजेऔरसंगही
नकों॥ दूत १ सुरा २ मृगया ३ स्त्री ४ तंद्रा ५ छल ६ क्रूरताई

७ दोनूलोकअभ्रजानिसातकेअधीनकों ॥१५॥ ॥दोहा॥ ॥जादिनविद्याधर्मकों यसलोकाभनहोइ ॥विदुरकहैंधृतराष्ट्रतें व्यंधकालहैसोय ॥१६॥उतपातविद्यान्यायधन करइअमरतनमान॥षरचहूअतुरहोयमनु कालग्रहेकचआनि ॥१७॥मनसावाचाकर्मना राजनीतिकिरीति ॥विदुरकहैधृतराष्टतें सुनहुलायपरतीत॥१८॥ ॥मनसोदाहरन॥ ॥ ॥कवित्त॥ ॥केतिकउपन्नमेरेरवरचकितोकआहिलेतो पुन्यदानकेतोकीरतकोदानहै ॥केतीचढीप्यादीसेनकेतेसत्रुकेतेमित्रकैसेदेसकैसोकालवैभवविधानहै।।कोनस्यामरवोरकोहरामरवोरमेरेपासकौनकृपापात्रकौनसाधोरनस्यानहै॥जहांतहांजबेतबेनृपतिविचारयाकरे विदुरबरवानेराजनीतिकोविधानहै॥१९॥ ॥दोहा॥ ॥ तीनहुराषेद्रष्टमें तीननविगरनदेल ॥तीनपिछानेविमलमति सबकोंवसकरिलेत॥२०॥ ॥वाचाउदाहरन॥ ॥सत्यओरउपगारमय मिष्टवचनअविरुद्ध॥श्रूपदासहरिभक्तिजुत सोइवाणीहैसद्ध॥२१॥ ॥करमना०॥ ॥सत्यसोचसमदमदया विद्यासकुलतादान॥जगवल्लभतासूरता पावतदसपुन्यवान॥२२॥छिमामानुषीविपतिमें देवापदिसंतोष॥ओगुनतिनमेंएकनृप गिनतअसक्तसदोष॥२३॥धुनितेंयुधिष्ठिरमेंदोनूदृष्टांतघटावेंहै सर्वचर्मआछन्नभुव जाकेपदपदत्रान॥आतपत्रजिहिंसीसपर नभआछिन्नवितान॥ ॥कवित्त॥ ॥पुत्रत्रियाकाजधनरक्षानीकेकीजतुहै पुत्रत्रियारक्षासोहिआत्माकेकाजहै॥पुत्रत्रियानासतहीआपकोंबचायलीजेपुत्रादिककेरहेभअगकोइलाजहै ॥द्रव्यजातारारवेकुलकुलजातारारवेजीवजीवजातारारिवलीजेजाकोनामलाजहै

॥ लाजगयेगईकीर्ति २ गयेगयोमानमानगयेजीवतहीमृत्युको समाजहै ॥ २३ ॥ सोनसभाजामेंकोऊब्रधकोप्रवेसनाहिंसोनब्रद्धहोयसमेपायनीतिबोलेना ॥ सोननीतजामेंकुललोकबेद्कीनरीत सोनरीतजामेंसाचझूटनीकैंतोलेना ॥ सोनतोलिवोहजामेंपक्षपातबोलेछलस्वारथविचारजेसीहोइतैसीखोलेना ॥ सोईभूमिपालएतेदोषधिनवानीसुनिताकोंअंगीकारकरेइतैउतेंडोलेना ॥ २४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कारागृहदेपुत्रको धर्मपुत्रकोराज ॥ टरैप्रजागरआपको कुलकोव्हैनअकाज ॥ ॥ २५ ॥ त्यागएकहितग्रामके ग्रामत्यागहितदेस ॥ देसत्यागीहितप्रानके बानीविदुषविसेस ॥ २६ ॥ विदुरकहततूंसत्यअब स्हृदरीतसमझाय ॥ जथाभविष्यव्हैहैनथा पुत्रनत्याग्योजाय ॥ २७ ॥ भीष्मद्रोणकर्नादिसब सतपुत्रनजुतभूप ॥ मिलेसभाबिचप्रातभये बाल्हिकआदिअनूप ॥ २८ ॥ बोलपठायोदूतसोई संजयतिनढिगआई ॥ भीमकिरीटीकेवचन सबकूं कहतसुनाय ॥ २९ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ भीमसेनकह्योंसूतकहियोंसुयोधनतेंजेतेशत्रुतोसेतेतेकतेमारिडारेहैं ॥ द्रौपदीकेकुसभावनकेविरादहकेकेसेसहेजातधर्मराजकाजधारेहैं ॥ युधिष्ठिरसामकुतेंमागेंबिनाजुद्धकियेदैन्यकानपंचग्रामहमनाविचारेहैं ॥ मानलेनवारेनहिंआनलेनवारेहमदानलेनवारेनहिंप्रानलेनवारेहैं ॥ ३० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ हिडंबजटासुरबकअसुर जरासंधपुनिजान ॥ कीचकादिबलकुबुधितें सबभयेतोरसमान ॥ ३१ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ द्यूतक्रीडाहीमेंकालक्रीडासीदिखायदेतोअग्रजकोधर्मराषवेकानाहिंमारेहैं ॥ लाखवाग्रहबनकेविरादद्रौपदीकेकुसऐसेदुरवभीमनिसद्योसनाविसारेहैं ॥ करियेविलोमबासतिहारोजुधिष्ठि

रकोप्रानररवेचहैतोनिदानतोकोप्यारेहै ॥ कुंतीबलेनवारेहैसदै वदानभिक्षाहमसीवलेनवारेनाहीजीवलेनवारेहै ॥ ३२ ॥ कुटु मत्रियाकीलीनीलाजश्रौरराजसाजपाजीहैस्वभावताकेएही घाततताजीहै ॥ हमतोचंडालतोकोंकेदतेंछुरायलीनोश्रग्रजकी श्राज्ञाक्षत्रधर्महितेंराजीहै ॥ तोकूंतोंभयोंत्रिदोषराजसेन्यवेभ वकोऐसोरोगकाटिवकूंकिरीटीइलाजीहै ॥ स्थाननछुडावेसबका ननपठावैनाहिंचाननकेपासेश्रबप्रानननकीबाजीहै ॥ ३३ ॥ ॥ दो हा ॥ ॥ देटंकारगांजीवकूं कहेबचनफिरपाथ ॥ इंद्रश्रंसनि रखेदसह भोपूरितइकसात ॥ ३४ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ तेरोबंधु तुहितेरोमातुलत्योंसूतपुत्रचंडालचोकरीज्यूंहीश्रौरमिलेसारेहैं ॥ धर्मराजलोकबीचधर्मराजयादकीनेधर्मराजकोपभरेलोचनउ- घारेहैं ॥ ब्रह्महूकेरुद्रहूकेसरनबचोगेनाहिगांजिवकुंधारिकेकि- रीटीयूंबकारेहैं ॥ ढालकर्नवारेहमरव्यालकर्नवारेनाहिंसालक र्नवारेहमकालकर्नवारेहैं ॥ ३५ ॥ ॥ छप्पै ॥ ॥ जबहिभीम रनजुरहिप्रानतिहबंधुनहरता ॥ जबहिभीमरनजुरहिकरीसेना क्षयकरता ॥ जबहिभीमरनजुरहिश्रसहिवलभजहिजितहितित ॥ जबहिभीमरनजुरहिकहहिसबसरनलहहिकित ॥ रनजुरहि भीमदुरजयदुसहसमऊकष्टपरिहैसबहि ॥ मदभ्रष्टदुष्टधृतरा ष्ट्रसुततपिहेदुरयोधनतबहि ॥ ३६ ॥ जबहिसातकीजुरहिकठिन गतसत्रुनिकंदन ॥ जबहिश्रभिमनूजुरहिपाडसुभद्राकुलनंदन ॥ जबहिसिखंडीजुरहिभीष्मकेमर्मबिदारहि ॥ धृष्टद्युम्नरिनजुर हिप्रबलभटद्रोनप्रहारहि ॥ सुसर्मासकुनीकेप्रानहरजुरहिमाद्री केसुतजबहि ॥ मतिभ्रष्टदुष्टधृतराष्ट्रसुततपिहैदुरजोधनतब हि ॥ ३७ ॥ स्वेतश्रस्वरथजुरहिध्वजावातात्मजगर्जहिदेवदत्तगंभ जीवघोसगगनसत्रुनतरजहि ॥ वातवेगतिहिरथहिकृष्णसंगरवि

प्रेरहि॥कहांजाइ़काकरहिसूरमिलिइतउतहेरहि॥गनबानछुट
हिगांजीवतेंजीवअमितहरिहैंजबहि॥मतिभ्रष्टदुष्टधृतराष्ट्रसुत
तपिहैदुरजोधनतबहि॥३८॥ ॥दोहा॥ ॥कहतसुयोधन
मोरतें देवहुसमरथनाहि॥जुरनजुद्धविचनरनतें कहुडरउ
पजेकांहिं॥३९॥जौलौंसिरधरपैरहै तौलौमिलेनक्यार॥जब
हीशिरधरथेरहे तबसबलेहिसभार॥४०॥ ॥धृतराष्ट्र॥
॥भोगांधारीतोरसुत करतभरतकुलनास॥गुरुजनकीसी
खनगिनत हैनितकुमतिहुलास॥४१॥गांडिवजुतप्रतिकूल
व्है खांडवदियोजराय॥सानुकूलपांडवसकल सुरअरिदि
येमिटाय॥४२॥सहस्रार्जुनपांचसत छोरतइकछुनवान
॥सोइद्वैभुजतेंपांडुसुत कौतिहपुरुषसमान॥४३॥ ॥
गांधारी॥ ॥प्रत्यक्षअंधमातापिता भोसुतहमकुंदेख॥पु
त्रसोककोदुसहदुख जीवमात्रविचलेख॥४४॥ ॥सुयोधन
॥ ॥कबित्त॥ ॥अहोमहाकष्टधृतराष्ट्रहूकहतऐसेव्हेहैं
वंसनष्टयासमर्थताकाभ्रष्टहै॥प्रष्टहेसदेवराधापुत्रतेग
रिष्टहूमेंजातेकोऊसूरवीरज्येष्टनाकनिष्टहै॥कर्नमामादुः
सासनइष्टहैहमारेतेऊसत्रुनकोंमारिकेअभीतभयेतिष्टहै॥
औरनकीबानीकटुनेकनसुहानिमोहिवानीतीनहुकीतीनकाल
हीमेंमिष्टहे॥४५॥ ॥नैकहूमानीनाहिनृप संजयजुतथसी
ख॥भावीनासकलनृपनकी परीसबनकूंदीख॥४६॥ ॥
इतिश्रीपांडवयशेंदुचंद्रिकाउद्योगपर्वणीअष्टमममयूखः॥८॥
श्रीकृष्णार्पणमस्तु.

श्रीरस्तु

अथ उद्योगपर्वणि
उत्तरार्धनवममयूखप्रारंभः

विराटरूप.
तप लोक
मह लोक
इंद्रादिदेव कोस्थान
आकाश
स्वर्ग
भूलोक
अतल
वितल
सुतल
तलातल
महातल
रसातल
अर्जुन

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सतगयेबहुदिनभये पीछेनाहिंसंदेस ॥ तृतियवसीठीकृष्णतुम गजपुरकरहुप्रवेस ॥ १ ॥ मातपिताअधअंधमम सोइमोहिसोकअसाध्य ॥ तीजेउमानेनाहितो कामेरोअपराध ॥ २ ॥ कहेयुधिष्ठरकृष्ण तें करियोसामउपाय ॥ कुलविनासकोदासके अंकलगैनाहिं आय ॥ ३ ॥ त्यूंहिवृकोदरनेकह्यो यूंमृदुबोलहुआय ॥ संधिकरैमदअंधनृप लगैनकुलबधपाप ॥ ४ ॥ असेइअर्जुननकुल-के वचनसुनेयदुवीर ॥ कहिसहदेवरुसातकी जुधथपहुरनधीर ॥ ५ ॥ ढरतजुगलपद्मासतें जुगलकुचनपरनीर ॥ कहतद्रोपदीकृष्णतें धिकुपांडुनकीधीर ॥ ६ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ मेचकमृदुललंबेवारकोसुगंधसीच्यो वामपानलैकेजुराकृष्णाको बतायोहै ॥ याकूंजिनहाथनतें ऐंच्योलेछिदेलजोलौतोलौंद्रोपदीकोकोपनेकनासिरायोहे ॥ पुत्रवधूभीषमअचक्षकीकहाऊ नाहींजिनकेसमीपसभाबीचदुखपायोहै ॥ गांजीवकेगदाके धरैयाकूंधिकारजोपें एतेहीपेंसंधिकोउपायमनभायोहै ॥ ७ ॥ बंधुधृष्टद्युम्नपिताद्रोपदस्वयंभुवीभेंरवसुराभोपांडुपांडुपुत्रभरताहे ॥ ताकोभयोव्हालसभाबीचजूकंगालकोव्हेतापेभीमसेनहुकेसंधिकोविचारहे ॥ रहोपांचोगंगापुत्रद्रोनहूकेकाल-रूपओरकुरुवंसिनकेकरतासंधारहे ॥ मेरोपितामेरोबंधुमेरे पुत्रमहावीरस्कभद्राकोनंदएतेजुत्यकूंतयारहै ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अतिसीतलतनइंदुकी होतअहनबहुवेर ॥ उग्रतेजरविकोउसमय होतनतदपिअंधेर ॥ ९ ॥ निजपीतांबरपोंछिकरि अश्रुद्रोपदीकेर ॥ कहतकृष्णतिहबेरपुनि अंशुजुक्तमुरवहेरि ॥ १० ॥ ज्यूंतवसोकनमिटतहे स्कनिनृपद्रुपदकुमारि ॥ त्यूंनिमग्नमणींतेलो व्हेहेकेऊनृपनारि ॥ ११ ॥ योकहिकीनोग-

मनपुनि कृष्णनागपुरश्रोर॥ अश्वभयोधृतराष्ट्रसुनि विदुरहि-कहतबहोर॥१२॥ करिहोंश्रातिथकृष्णको विदुरसुनहुममबात॥ विनाश्रसवसतदासिका करीश्रष्टरथसात॥१३॥ देहूंश्रष्टदससहस उत्तमश्रजिनदुसाल॥ चीनदेसकेऊर्णपट हैंसहस्त्रतिहकाल॥१४॥ दुःसासनकेमहलजे षटरितुसुखदस्वरूप॥ तहंडेरापुनिश्रवरहू देहूंरतनश्रनूप॥१५॥ श्रष्टगुनोसबसाथको खानपानसुखदेन॥ विनदुरयोधनजायहै सनमुखतिनकोलेन॥१६॥ ॥विदुर०॥ ॥श्रापबुद्धिवयवृद्धहैं करतलरकईबात॥ श्रर्जुनप्यारोप्रानतें तजेकृष्णक्योंतात॥१७॥ सर्वराजकेलोभतें होयनतेरैकृष्ण॥ श्रर्धराज्यदियेधर्मकों क्षत्रिहरिकुलश्रेष्ठ॥१८॥ पापधुवावेंश्रर्धविन विनजलकुंभनश्रान॥ ग्रहनकरैसतकारनहि कृष्णश्रभक्षसमान॥१९॥ विदुरकह्योत्यूंहीकृष्ण पूजाग्रहणनकीन॥ राजविदुरहुकेरहे तोकेइभोजनलीन॥२०॥ विदुरकहेचाहियेनइत तबश्रागमव्रजराज॥ दुष्टसुयोधननाडरत करतसुकाजश्रकाज॥२१॥ श्रपनोकहैसुतुमकही जथाविदुरधीमंत॥ इनतैंमोकूंनैकभय समझुश्रतिमतिसंत॥२२॥ प्रातसभाविचनृपतसब श्रायेपुनिऋषिराय॥ त्यूंश्रागमभोकृष्णकूं सबतेंश्रादरपाय॥२३॥ कृष्णकहैधृतराष्ट्रसुनि नकरिभूपकुलनष्ट॥ दुष्टमतिसोइहोतहै गिनेदिननमेंभ्रष्ट॥२४॥ देखियुधिष्ठिरकीछमा तवसुतकोश्रपराध॥ चिगरिसुधरैधर्मको श्रबहुराजदेश्राध॥२५॥ ॥सुयोधन॥ ॥विद्याधनकुलविभवको दानसूरताजोर॥ मेरेसोउनकेकहां छमततबहिदुखघोर॥२६॥ ॥कृष्ण०॥ ॥सवैया॥ ॥वंसतेंनाहिंमहानताताहेनमहानतालाखनग्रंथपढेतें॥ उमरतेंनमहानताहेनमहानताकोटिकद्रव्यबढेतें॥ दानतैंनाहिमहानता

हैन महानतासूरताजुत्थ्यचढेते ॥ जोमगधर्मधनंजयकोसुम
हानताताभगबीचकढेते ॥२७॥ ॥कबित्त॥ ॥सुयोध
नकहैपित्ताऔरहूसभासदकूंबातेंयोगुवालकीभुवालकैसेमानो
हो ॥ एहोस्यामद्रोणादिकंसबहिंभ्रमाएआय इनकेभरोसेक-
हाएहुचित्तआनोहो ॥ स्चीअग्रदबेंजेती भूमिकोनदेनकहै क
नोंदिकचारहुकोमतनापिछानीहो ॥ गोरसकीजानोकृष्णातोकै
सेंबसीठीकरोगोरसकीजानोहोकेंगोरसकीजानोहो ॥ २८ ॥ कृ
ष्णकहैसुयोधनमानतनमेरीतातेंभईपरतीतभीमवांछितको
पावेगो ॥ अजसतिहारोत्यूंहीसुजसयुधिष्ठिरकोरहिहैअरवंडखं
डपेडमेंकहावेगो ॥ आथरगभूमेंमोकूंनाहिंदिषायएसोजाकि
ओटजायनिजप्रानतूंबचावेगो ॥ जावेगोसमूलवर्गभीमकीगदा
तेंधुनिविजेंधारिमारिविजेंविनयबजावेगो ॥२९॥ ॥दोहा॥
॥ अहोसुयोधनअहरनिस सेवतहठहिंसदीव ॥ तजिरनकूंजे
हैंनथा जेहैंभूमिरुजीव ॥३०॥ ॥कबित्त॥ ॥जादीनको
मानमारिकिरीटीसुभद्रालेगोतुमनेंनिहोर्य्योतेंसेंमेतोनानि
होरिहों ॥ वेरबांधिकरेंप्रीतराजनातकीनरीतसत्रुसेन्यनाव
सिंधुआहवमेंबोरिहों ॥ मेरीयागदातेंजमराजलोकचढिपेहै
भीमादिकसूरनकेकंधनकोंतोरिहों ॥ छोरिहोंनटेकएककहि
येअनेकमेरोनामरनछोरनाहिंकेसेरनछोरीहों ॥३१॥ ॥
कृष्ण० ॥ ॥ आनथानहाटककोकोमलस्वभावसदाअग्नि
नीरफेटतहाकठिनमहानहै ॥ आनधातुआनथानकठिनम
हानहैपेनीरसोरयंत्रतहांसबहीकीहानीहै ॥ साचवान्धर्म
त्रान पांडुपुत्रकोमलहैयुध्धकेप्रयानइंद्ररुद्रकेप्रमानहै ॥
त्रान धातुकेसमानजानितेरेबंधुत्यूंहीप्रानआनव्हैहैमानि
विनानदानहै ॥ ३२ ॥ कहैकुरुवीरप्रण्णीवीरतेंकहोहातुम

देवअंसपंडुनतेंजीतिवेकोलागना ॥ धर्मराजवायुइंद्रअश्विनीकुमारपांचुहोतअवतारततोहोतोराजत्यागना ॥ क्वैहैहौनहाररराजकरिहै भरतवसीजीवकोरुजीवकाकोमेरेअनुरागना ॥ नरकेसंघारक्वैहैनरकेजुरेतेतोहूघरकेविभागक्वैहैघरकेविभागना ॥ ३३ ॥ जीवजीवकातैंमानप्यारोमोकूंवासुदेवजेतेदेहधारीतेतेकालकोअहारहै ॥ भीष्मकरनद्रोनीद्रोनमद्रपतिदूसासनसबैसत्रुसैन्यकोसंघारकरतारहै ॥ हारिहैतोआपतेंनक्वैहैउपहास मेरोयाहीतेंनऔरकछुचितकोविचारहै ॥ योतोहैजरयोंआहारलोकपरलोकहीकेगदाकेप्रहारहीतेंसुखकेविहारहै ॥ ३४ ॥ ॥ धृतरा० ॥ ॥ भीमभीमवातहैधनंजयसोगांजीवअषयतोनइंधनकोटारहै ॥ कर्नादिकजरिहैउरवरिहैदुसासनादियुधिष्ठिरछमासीलमईदाबिमारिहै ॥ जलहैनकुलसहदेवव्योममंडलहैनावपंथकोनतांकुपारिजोउतारिहै ॥ पांचमहातत्वजेसेपांचोंप्यातंतेजपुंजछदेवासुदेवमेरोमूलछेदिडारिहै ॥ ३५ ॥ फेरिजदुराजकुरुराजसमझावेकाजकहतसमाजबीचहितकीसुबानीहै ॥ मेरेकहिवेकोसुनिलीजेनीकेश्रोत्रदेकेपंडुनकोदेवोभागनीतकीनिसानीहै ॥ नातोसबछितहूकेछत्रिनकोक्वैहैनासहोनहारहोनीसोतोजाहरहीजानीहै ॥ एकघरहानीदूजीधनहूकीहानिजानिमहाप्रानहानिएकहानिकीनहानिहै ॥ ३६ ॥ सभासदभीष्मसेंद्रोनकृपाचार्यजसेभूपधृतराष्ट्रजसेविदुरनिहारिये ॥ पांतीदांरसीतलसुभावहैयुधिष्ठिरसोंपांचग्रामभांगेसंतोषकोविचारिये ॥ मोसोहैवसीठीसमझायवेकूंकृष्णाकहैचाहतहूंजैसेतैसेभूसंधारटारिये ॥ एतेहिपैमेरोकह्योवायुकेवधूरैवह्योक्वैहैभावीनह्योताहिकैसेकेनिवारिये ॥ ३७ ॥

॥ ॥दोहा॥ ॥कैदकस्योचहैकृष्णको धस्योचंडाल नधार॥ डस्योसुयोधनदेखिहरि धस्योरूपवैराट॥३८॥ कह्योसुयोधनकृष्णको गन्योनआगममर्न॥ कृष्णचलेनृप सीखले गोपहुचावनकर्न॥३९॥ ॥कृष्ण०॥ ॥तूंक्षेत्रज गुरुपाडुसुत होकुद्विरदपुरनाथ॥ परैंजुधिष्ठिरतोरपग तज हुसुयोधनसाथ॥४०॥ ॥कर्नव०॥ ॥कहोआपजैसेहि करों निरलोभीसुतधर्म॥ तजूंसुयोधन रनसमय कहाबनै एहकर्म॥४१॥ खुल्योमिल्योक्षत्रीनको दुर्लभस्वर्गकोद्वार॥ फिरंहारसधिकपाटदे मतरोकहुयहबार॥४२॥ कहिइ तनीपीछोफिस्यो करतसदननितनेम॥ पृथाआयताहीसम य दियेअसीसजुतक्षेम॥४३॥ कुंताजाच्योकर्नको तूंमम पुत्रप्रधान॥ पांचअनुजजुतकरहु सुत राजनागपुरथान॥४४॥ ॥मातकरनइकछत्रविन कियोआजलौंराज॥ कियेजज्ञदा नादिपुनि ब्याहमहोछवराज॥४५॥ नृपतसुयोधनप्रीतते ताहितजोंक्यूंआज॥ मातागांधारीपिता धृतराष्ट्रमहाराज॥४६॥ तजेंसुयोधनकूनतो पांचपुत्रदेमोहि॥ तैनतूंतबबसि परे तिनहितजाचततोहि॥४७॥ हतूंविजयकूंवसिपरें तबसु तवनहौबहोर॥ हतेंकिरीटीकरनकूं तोउरहेपांचहुओर॥४८॥ ॥हतनापुरतेंआयकें कृष्णकहतजुतरोस॥ तीनवसीठीक्षेतु की प्रबतुमकोनहिदोष॥४९॥ अंधपुत्रमतिअंधनृप दैन हिपैंडप्रमान॥ जुरहिभीमअर्जुनजबहि देहिभूमिअरुमान॥५०॥ ॥कवित्त॥ ॥कृष्णकोकहाबदुष्टमान्योनासु योधननैंक्षत्रीकुलनासकाजयहकेआदिनकूं॥ किरीटीकोजे ठीएसेबोलिउठ्योवोकिभुजाकारेंहुगदातैंसीघ्रअरिकेकद नकूं॥ बडेभूपनकेहियेहहरायदेऊंमालपहरायदेंहुपंचाहिब-

दनकूं ॥ महास्यंहश्रासनपैंश्रयजविगायदैहूंकौरवपठायदै कुकमकेसदनकूं ॥ ५१ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ इतनेंचोथोदूत करिमातुलपुत्रसिषाय ॥ पठयसुयोधनधर्मप्रत कहिकदुघूत स्रुनाय ॥ ५२ ॥ तूंतपसीमांजारगति कुलकुठारमतिनीच ॥ श्रंतर्कपटीधर्मस्रुत बन्योसाधुजगबीच ॥ ५३ ॥ जोनच्योवैराट बिच वेणीसीसगुहाय ॥ सोश्ररजुनकर्नादिकू बोलतभीतब ताय ॥ ५४ ॥ दुरयोधनकेसिरसदधि बंधीभूमइहबेर ॥ डर दिखायकोउरचौसिले ऐसोकहाश्रंधेर ॥ ५५ ॥ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ ॥ प्रत्यूत्तर ॥ ॥ स० ॥ ॥ नितप्यासदुसासन श्रोनितकी चितभीमको यूंश्रकुलावतहै ॥ छिनजामलौबीतन जामजेधौसलौघोसतेमासलौजावतहैं ॥ फिरमातुलपूतउ लूकदूंमेलिकेक्यूंकधुवादस्रुनावतहै ॥ नृपतेरीश्रनीतकौ नाकलौनीरबढ्यौश्रबसासनश्रावतहै ॥ ५६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ पुत्रहीनव्हैहैपिता मातश्रंधममसोक ॥ मरतोमारेश्र बधकू श्रावहूसीसश्रलोक ॥ ५७ ॥ ॥ श्रर्जुन ॥ ॥ नचिछोडैं वैराटमैं कर्नादिककेप्रान ॥ गांजिवज्रुतनचिरीउमैं श्रवहरिले हुनिदान ॥ ५८ ॥ इतैसातग्यारहउतैं मिलिश्रक्षोहणश्रान ॥ कुरुक्षेत्रडेराकिया लखिनिरदूषनथान ॥ ५९ ॥ रथीमहारथी श्रतिरथीसंख्या ॥ ॥ रथीरथीतेंजुद्धकरी राखीपरिक्रसोय ॥ श्रद्धजोइचलपुरनितें ताहीकीजयहोय ॥ ६० ॥ ॥ महारथी ॥ ॥ एकलरैंदससहस्त्रतें राखिलेतरथसाज ॥ सारथि हयउपसारथी चक्ररक्षनिजकाज ॥ ६१ ॥ राखेलेतनिजरथ हिकूं करिश्रगनिततेंजुद्ध ॥ कहततापिकोश्रतिरथी जेहैबुद्धि विसुद्ध ॥ ६२ ॥ ॥ डिंगल ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ लाखाइलस करलार धरमपूछजिसडोधणी ॥ भारथबालोभार भीमा-

अर्जुनरेभुजा ॥ ६३ ॥ हैमहारथीहजार जुजुधानंसिखंडीजिसा ॥ भारतवालोभार भीमार्जुनरेभुजां ॥ ६४ ॥ धृष्टद्युम्नधजुधार श्रुतिकीर्तिश्रुतिचरमसा ॥ भारथवालोभार भीमाअर्जुनरेभुजा ॥ ६५ ॥ उत्तरकुरुवरउदार द्रौपदनकुलविराटदृढ ॥ भारथवालोभार भीमाअरजुनरेभुजां ॥ ६६ ॥ अभिमनतेजअपार सुभद्रानंदनविजयस्कत ॥ भारतवालोभार भीमाअरजुनरेभुजां ॥ ६७ ॥ श्रुतिसोमहुइसियार प्रतिविंधसहदेवसुप्रगट ॥ भारतवालोभार भीमाअरजुनरेभुजां ॥ ६८ ॥ सतानीकगहेसार धृष्टकेतचिकितानधृत ॥ भारतवालोभार भीमाअरजुनरेभुजां ॥ ६९ ॥ जुधसहदेवजुझार जरासंधसुतजोमरद ॥ भारतवालोभार भीमाअरजुनरेभुजां ॥ ७० ॥ केकयनृपतकुवार कुंतिभोजपूजितकहर ॥ भारतवालोभार भीमाअरजुनरेभुजां ॥ ७१ ॥ सलभूरिश्रवसार दुरयोधनसल्यसोमदत्त ॥ भारतवालोभार करणद्रोणभीसमकरां ॥ ७२ ॥ कृपाचार्ययुधकार जयद्रथभटद्रोणीजिसा ॥ भारत० करणद्रोण० ॥ ७३ ॥ नृपबाल्हिकनिरधार कृतवर्माभगदत्तविकट ॥ भारत० करणद्रोण० ॥ ७४ ॥ अलंमासुरआधार दुःसासनविकरणादुसह ॥ भारत० करणद्रो० ॥ ७५ ॥ यलाम्बुधीईकतार प्रतकेतूकांबोजविंद ॥ भारत० करणद्रो० ॥ ७६ ॥ कृतदुरसुरवजयकार चित्रसेनअनुविंदविचित्र ॥ दिकवालो० करणद्रो० ॥ ७७ ॥ सुदक्षिणग्रहीयासार चित्रकेतजयन्अचल ॥ भारतवा० करणद्रो० ॥ ७८ ॥ सकुनीजुधसाधार स्कसर्मासिररवासुभट ॥ भारतवा० करणद्रो० ॥ ॥ ७९ ॥ दुरधरचीतउदार कुलभूषणलछमनकुंवर ॥ भारतवा० करणद्रो० ॥ ८० ॥ जेबांकाजुझार सलिसुतदुःसासनसुतन ॥ भारतवा० करणद्रोण० ॥ ८१ ॥ धषकुरुपांडवधार ॥

आह्मासाह्माउलगीया ॥ भडसनादोयभार भीष्मद्रोण-अरजुनभुजां ॥८२॥ ॥ इतिश्रीपांडवयशेंदुचंद्रिकापुनःउद्योगपरवाणिनवममयूखः ॥९॥ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

श्रीरस्तु

अथभीष्मपर्वप्रारंभः

श्रीगणेशायनमः॥ ॥दोहा॥ ॥द्वैपायनरिखनागपुर सुत समझावनआय॥कहतसभाविचिसांतिहित जेउतपातलखाय॥१॥ ॥कवित्त॥ ॥घोसच्चारिकूके निसानिसाचारीकूकै घोसबनचारीनयनयचारीबनधावैहै॥आम्रबीच फूलेकंज कंजमेंलगैहै केरीकालदेसबस्तुकोविरोधसोलखावैहैं॥विनापौनतूटै ध्वजाजलैनाआहुतीहोमयधनकेंफूडकुरुक्षेत्रहीपैंजावैंहै॥होतउतपातक्षत्रिवसकोअदनकाजकुलकोकदनपुत्रकूंनसमझावैहै॥२॥ ॥दोहा॥ ॥धृतराष्ट्र०॥ ॥भवतव्यऊपरजतन कछु मेरौफुरैनतात॥करियेआपउपायकछु सुनौजुधकीबात॥३॥ ॥व्यास०॥ ॥गुपतप्रगटजुधकीकथा कहिहैसंजयतोहि॥देवादिकह्पैप्रबळजो भवतव्यसुहोइ॥४॥दसदिनबीते जुद्धके संजयनृपढिगआय॥पूंछीनृपजैसीभई तैसीकहतसुनाइ॥५॥ ॥संजय०॥ ॥छत्रिनकौगुरुछत्रधर छत्रिधर्मनररूप॥सांतनुगंगातैंप्रभव गिर्‌यापितातवभूप॥६॥सुनिपितुबधमूर्छितभयो ह्वैसचेतकियप्रश्न॥कैसेछलकरिममपिता कहहुगिरायोकृष्ण॥७॥कार्तिकसुक्लत्रयोदसी जुधआरंभसहे-

त ॥ मछव्यूह भीषमरची अर्धचंद्रकपिकेतु ॥ ८ ॥ पछिमपांडव पूरबकुरू जुरीसेन्ययहभाय ॥ मानकुलोपमृजादकूं सिंधुमिलेहुआय ॥ ९ ॥ करयोयुद्धस्तुतिहिसमय अग्रजकोउपदेस ॥ जाकेबलगरजतनृपति सैन्यनरहिहेसेस ॥ १० ॥ भूपजुधिष्ठिर धर्मनिधि उपदिष्टाजगदीस ॥ भीमधनंजयभटजहां हैजय बिसवावीस ॥ ११ ॥ कहसुयोधनबचनकटु मिल्योधर्मतैंजाइ ॥ अधक्षोहणीसेन्यले लियोपार्थउरलाय ॥ १२ ॥ कहिअर्जुनदोउसेन्यबिच रथथापहुयदुवीर ॥ जोलौंजुधकरतापुरस लखोमोरसमधीर ॥ १३ ॥ रथथापतअर्जुनलख्यो दोउअनीकुकरध्यान ॥ बांधवसंबंधीसमुझि डारिदियेधनुबान ॥ १४ ॥

॥ अर्जुन ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ काकेओरभतीजेमामेभागनेय श्यालेबंधुबहिनेंऊपितामहगुरुद्विजमारिवो ॥ रुधिरकेभीनेभोगकोनऐसोराजचहैयातेश्रेयमानतहूंभिक्षाअन्नधारिवो ॥ पुलकितभयेहेरोमकंपितसरीरमेरोविकलहृदयताकूंकैसेकलपारिवो ॥ कोऊकहोसूरकोऊकायरअसाधुकहोऐसेजीविवेतेतोसंदेवभलोहारिवो ॥ १५ ॥ अर्जुनअरवंडआत्माकोनासमानैंमतपोनतैंसुसतनाहींआगितैंनजरिवो ॥ जलतेंगलतनाहिंछिदैनाहिशस्त्रनतैंव्यापकअद्वैतव्योमकोसोचितधरिवो ॥ जीतवेतेराजमरेहीतैंलाभस्वर्गसाजछत्रीकोअनन्यधर्मउच्छवतैंलरिवो ॥ वारिवोनचरिवोमांगरिवोनगरिवोत्यूंहारिवोनहरिवोनामारिवोनमरिवो ॥ १६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अग्निदत्तविषदत्तनर क्षेत्रदारधनहार ॥ बहुरवकारतसस्त्रगहि अवधवध्यषट्कार ॥ १७ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ प्रथमहलाहलदियोहो भीमसेनजूकूं दूजेलाखधामेंहवीनअग्निमेंजरायेहे ॥ तीजोद्रौपदीकोअभिमर्षनईवारकीनोचौथेसबवेभवकेअंगहीछिनायेहे ॥ पंचमरसाकूंरखोसिवनकूं

पठाइ दियेछठे हाथसस्त्रबंधुमारिवेकौंआयेहैं॥एकअंगहीनें वधदोषनहींकृष्णाकहेकुरुषट्अंगआततताईतैंअधायेहैं॥१७॥ ग्यारमीअध्यायदिव्यचक्षुदे दिषायोरूपकेउसीसनेत्रपायकेउ भुजाधारीहै॥सूर्यचंद्रअग्निजेसेसस्त्रऔर भूखनहैदांतनकीरेख बीचमरीसैन्यसारीहै॥रत्नादिककोट्यावधिकरीहैप्रसंसाताकूंदे खिकेकिरीटीदेहदसाकौंविसारीहै॥दूजियेप्रसन्नसांतिरूपकूं दिखैयेदेवमेरोहैनिमित्तसबैरचनातिहारीहै॥ ॥दोहा॥ ॥ अर्जुनगहिगांजीवकौ कियोऐंचिटंकार॥तोलौंपद्चारीनृपति कियपरदलसंचार॥१९॥भीमादिकबांधवकहत ऐनभरतकु लरीत॥अधिकदेखिरिपुसैन्यकुं आतुरहोनअनीत॥२०॥कृ ष्णकहैनृपकैंवना काउसुभकारनजात॥भीष्मद्रोनकूंपरिक्र मन करिनृपबूझतबात॥२१॥ ॥सवैया॥ ॥तितविष्णुपदी सुततैंविनतीइकभूपयुधिष्ठिरयूंगुदरावे॥अबजीतिरुहारहूरा बरेहाथमेंजापेंकृपालकृपासोइपावे॥धरतेंकरप्रीतिकिधौवचनतें द्विविधामेंअहोनिसजीअकुलावे॥कुरुभूषनभीषमएककहोह मघोरयुद्धवेंकीकाठमंगावे॥२२॥ ॥दोहा॥ ॥जोयहांआ ज्ञामांगवे नहिंआवतकुरुराज॥हमप्रसन्नहोवतनहीं होवततो रअकाज॥२३॥अबतेरीजयहोइहै गुरुजनदेतअसीस॥हमतो कारनजीवका भयेअन्यायअनीस॥२४॥ ॥नृप०॥ ॥जोलौं भीषमद्रोणदोउ सहस्त्रधरैजुधन्याय॥तोलौंइंद्रादिकनजुत मेरी जेयनलखाय॥२५॥भीष्मकहेपूरबत्रिया तिनकोदेहुप्रष्ट॥मा रकानगांजीवधर बातकरहिममनष्ट॥२६॥द्रोनकहैअप्रियवचन करिहैसत्युपुकार॥ताहिसुनतधनुवानसब देहूंकरतेंडारि॥२७ ॥ ॥सवैया॥ ॥कबहूनलखीनसुनीकहेसंजयदानकथाअ दभूतनवीनी॥सुरराजकेजाचवेदानीदधीचभोअंततजीतवेकी

विधचीनी ॥ कुरुपांडवसैन्यजुरीसिहीबेरमें भूपयुधिष्ठिरविनती कीनी ॥ जिनतैंलरिबोतिन्हे भीसमद्रोननैंजीवदियोजयआसि रवादीनी ॥ २८ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ गुरुजनपैंवरदानले गयोजुधिष्ठिरतात ॥ घोरभयोई दिवसजुध तीजेदिनकीवात ॥ २९ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ संजयकहतएकगांजीवतैंमहावीरपांडवप्रजार्योतहां सुनेहैवरवानमें ॥ देवदैत्यनागकोव्याधधीतेलराईउतेइतेमेघ बूंदनरुकाईव्योमथानमे ॥ ऐसीचपलाईतापें छाईचपलाईदेखि तारुन्ययेअधगंगापुत्रकीनीदानमें ॥ नैनपिताध्यानमेंज्यूंसारथी अज्ञानमेंत्यूंवानरहैम्यानमेंपरवीवाकटेपानमें ॥ ३० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कोईकहैअज्ञानक्यौं स्वयंब्रह्मकूहोय ॥ तोक्यूंसंदनचक्र कर धर्योप्रतज्ञारवोइ ॥ ३१ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ तीजेघोसकुरुप्र इशत्रुसैन्यकोहटायकिरीटीकोंआपकोपराक्रमदिरवायोहै ॥ सारथीमहारथीजेदोनोकृष्णाचक्रतहै प्रेरवेकूंअस्वसरुअछिद्रनाहिं पायोहै ॥ आगेपीछेसव्यअपसव्यजोनिहारेताकूंरथनालरवोवेस रापंजरयोंछायोहै ॥ आनवीरबानतेंबचावेप्रानवासवीकेगंगापुत्रवानकोवितानसोवनायोहै ॥ ३२ ॥ पितामहपारथकोप्रबलप्रहारपेखिपार्थिवअनेकएकएकनाअरोरहो ॥ अर्जुनउदारबलअस्त्रकीविसारिवैठोवामपानस्थिरीभूतिगांजीवधरोरहो ॥ पैजकोनिवारभक्तपैजप्रतिपारवेकोरथअंगधारिरासिचावकडरोरहो ॥ ताछिनविसंभरवासमरकोकीनोकंपकम्मरतें छुटिपीतअंबरपरोरहो ॥ ३३ ॥ करीहीप्रतिज्ञाअस्वप्रेरकप्रतोदविनीलोहकूंछवूनयुध आदिकीयेवानीहै ॥ ताहीकूंविसारिचक्रस्यंदनकोधारिचले भीषमपैताहीबाररसाअकुलानीहै ॥ ताहिसमझाइबेकूं कटितेंखुलोहैपटधूजेमतिदासकीप्रतज्ञाउरआनीहै ॥ पटकोतथाभिप्राय बडेलोफफूठपरैताकोंसंगछांडि दैनोनीतिकीनिसानीहै ॥ ३४ ॥

॥ ॥ दोहा ॥ ॥ आतुरनररथतेंउतरि पकरेहरिकेपाय ॥ यहअन्यायकाकरतहो दोरतसस्त्रउठाय ॥ ३५ ॥ हरिआतुरलखिभीष्महसि डारिदियेधनुबान ॥ मेंसमीपअबमारियेतजियेकोपविधान ॥ ३६ ॥ आपकहीमेंसस्त्रबिन भूमिहरहुसबभार ॥ हमेंछत्रिकानागिने बोलहुवचनविचार ॥ ३७ ॥ डारिचक्रहरिहसिदयो कियउत्तरब्रजराज ॥ तजीप्रतिज्ञामोरमें तोरप्रतज्ञाकाज ॥ ३८ ॥ जुद्धभयोनवदिवसपुनि घोरपरसपरघात ॥ कहतपितातेंतोरसुत नवमदिवसकीरात ॥ ३९ ॥ पिलाभरोसेआपके मेंधार्योसंग्राम ॥ चाहतपांडवविजयतुम करतअकतसेकाम ॥ ४० ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ अर्जुनकेसरतनकटेभाल ॥ तूंकहतवचनस्रुतनाटसाल ॥ सुयोधनसुनहुपूरववृत्तांत ॥ एकभयोभूपजुतमदअसांत ॥ रिखनतेंकहतदीजेबताय ॥ मोतेंसंग्रामकोउजुरेआय ॥ बरनारायणबद्रीनिकेत ॥ तिनरिखनबताएजुद्धहेत ॥ तिनपेंजुधजाच्योनृपमदंध ॥ सीतलताउबोलेकृपासिंध ॥ हमरिखितपस्याकरतलेखि ॥ जुधकाजऔरकोउक्षत्रिदेखि ॥ मान्योंनवचंनफिरजुद्धनाच ॥ नारायणनरतेंकह्योवाच ॥ यकअस्त्रउचारनकरहुमूढ ॥ मदत्रष्टहोययहदुष्टमूढ ॥ नरसुनतहकार्योभूमिपाल ॥ व्हेसावधानसजिसस्त्रजाल ॥ मंत्र्योअभल्लसरकपासमुंज ॥ प्रेर्योसुरुकेसबसस्त्रपुंज ॥ मुखरुकेनेनअरुश्रवनघ्रान ॥ सरकणतेंसबकेरुकेप्राण ॥ निजसैन्यदुखितलखिप्रणतकीन ॥ दयाजुतनृपहिहरिखिअभयदीन ॥ भुवभारहरनअवतारधारि ॥ विधिप्रारथनानीकेविचारि ॥ तेइअजयसुरासुरतेंअनूप ॥ वसुदेवतनयअर्जुनसरूप ॥ पनकर्योनजीतूंतोउप्रात ॥ तजिहूरनतीरयप्रानतात ॥ सुनिगयोसुयोधनआपथान ॥ सुतधर्मआयबंधुनसमान ॥ भीष्मतेंमिल्योहरिजुक्तभूप ॥

आदसहिपायआसनअनूप ॥ पितातेंकहतपुनिजोरिहाथ ॥ सब परतजातनिजमोरगाथ ॥ वहकोनक्रियाजिनतेंजुदीठ ॥ जोरह्योआपरीनफरीपीट ॥ कहिभीष्मसिखंडीकुंवरकाज ॥ रिनप्रातसंमुखम मकरहुराज ॥ तातेंनहिंसनमुखव्होहुतात ॥ तासमयकिरीटीकरहि घात ॥ ज्यूंकह्योपितात्यूंकियोव्याज ॥ गांगेयमहाबलहतनकाज ॥ इकएकदिवसदसदसहजार ॥ असवारपयादेकरसंहार ॥ ४१ ॥ ॥ ॥दोहा॥ ॥ राजपुत्रइकसहसपुनि नवसहस्रमातंग ॥ अष्टसहसमारेरथी दसदिनबीचअभंग ॥ ४२ ॥ इरावानअरजुनतनय उत्तरसरवरूखेत ॥ तीनपुत्रवैराटके मरेसुदसदिनहेत ॥ ४३ ॥ सतरासुततेरेसुनृप भीमसेनकेहाथ ॥ मरेगयेइवारमें भीष्मजुद्धकेसाथ ॥ ४४ ॥ अग्रसिखंडीकूंकियो रह्योकिरीटीपीठ ॥ पूर्वक्रियाअंबासमझि भीस्मबचाईदीठ ॥ ४५ ॥ दीठबचाईदेखिनर मेलिदियेधनुबान ॥ भयेपरामुखपित्रकों हतवोपापपिछान ॥ ४६ ॥ ॥ कृष्णवच० ॥ ॥ भीष्मद्रोणअरुकर्नको बहुरिसुयोधनकेर ॥ मुसकलछलबिनमारिवो करिप्रहारहियहेरि ॥ ४७ ॥ लगेबानगांजीवके इंद्रवज्रकेरूप ॥ गिरयोपितानरभूमिमें सरसज्यासनरभूप ॥ ४८ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ लखिगिन्योभीस्मकुरुहीनगर्ब ॥ पांडवनआदिरहेघेरिसर्व ॥ कीयेआज्ञाभीसमनीरकाज ॥ सबलियेकमंडलुकुरुसमाज ॥ अविलोक्योंभीसमविजयओर ॥ कियेप्रगटगंगतिहबानघोर ॥ आचमनकियोजलपानआप ॥ पुनिकह्योकरनतेंजुतप्रताप ॥ सुयोधनतोरआधीनवीर ॥ मैमरयोअबहुकरिसंधिधीर ॥ तुमलख्योतेजगांजीवतात ॥ कियेबाणमारिगंगाविख्यात ॥ ॥ कर्नु० ॥ ॥ आधीनभूपममसत्यवात ॥ ततकालसंधिजबकरूंतात ॥ इकदेहुमोहिवरदानआप ॥ सरत्रतेंनमरूंताकेप्रताप ॥ मृतलोककिरीटीविनाधीर

॥ वधकरतातेरोकोऊनवीर ॥ ऐसीअभिलाषारहततोर ॥ ताकेरहुजुधनृपकरमघोर ॥ भीसमढिगजामिकनरपठाय ॥ अबहारसैन्यदोउसिवरआय ॥ ४९॥ ॥दोहा॥ ॥करनहिसेनापतिकियों चाहतहोतवपूत ॥ करनकह्योद्विजद्रोनछत यह नहिंहोयअभूत ॥ ५०॥ भयोद्रोनसेनापती जुद्धबनेगोभ्रात ॥ आज्ञाव्हैजुधदेखिके फेरकहूंगोतात ॥ ५१॥ तेरीनवअक्षोहनी पांचधर्मसुतपास ॥ रहीसुमततेरेनृपत व्हैहैवेगहीनास ॥ ५२॥ ॥धृतरा०॥ ॥कबित्त॥ ॥जानेअस्वतीसअश्वमेधनकेवोधिरारकेजोतेनिजरथनाछुरायेगयेकाहुये ॥ रामइक्कईसवारनिछत्रीकरैयाभूमिजुधकोसिरवैयाजुधजीतिलीनोजाहुपैं ॥ कासीराजहुकीकन्यातीनहीपकरल्यायोस्वयंवरजीतिकेनजीत्योगयोताहुपैं ॥ ऐसोपिताकोभलहीजुद्धकेमिपातभयोरूयोधनमूढविजैचाहतहैयाहुपैं ॥ ५३॥ ॥दोहा॥ ॥जाहूसूतकुरुक्षेत्रमें पूतनमानतरंच ॥ जोभवस्यासोइहोयहै कीजकहांप्रपंच ॥ ५४॥ ॥इतिश्रीपांडवयशोंदुचंद्रिकाभीषमपरवणीदसममयूरवः ॥ १०॥ ॥श्रीगोपालकृष्णार्पणमस्तु॥ ॥
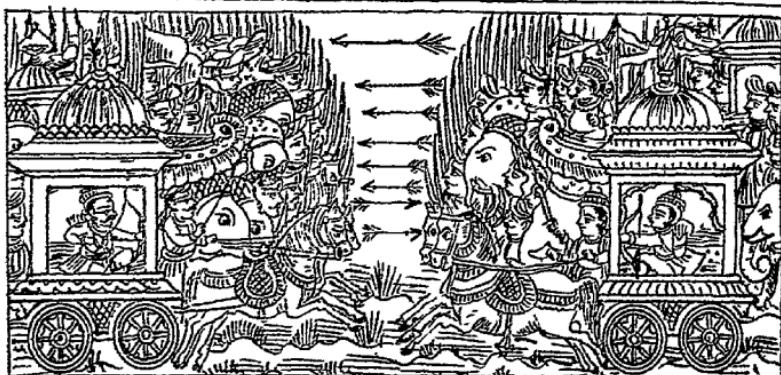
श्रीगणेशायनमः॥ ॥अथद्रोणपर्वप्रारंभः॥ ॥दोहा॥ ॥
पांचदिवसलखिद्रोनजुध हतनापुरमेंआय॥द्रोनपतनपांड
वविजय संजयकहतरुनाय॥१॥ ॥श्लोक॥ ॥गेहेयस्य-
श्रुतिंपठंतिनितरांनानास्वरैर्ब्राह्मणाः वीराणांहिश्रृणोमिघोषमु
दितंजाकर्षितांधन्विनां॥उच्चैर्वेणुरवादिवाद्यविविधैर्नृत्यंतिवा
रांगनाः हाहाद्रोणकुलोसितस्यसदनेवाक्यंसमुद्दीर्यतां॥२॥
॥ ॥धृतराष्ट्रवचनश्लोककोआसय॥ ॥सवैया॥ ॥जितना
द्विजराजकेगेहविषेद्विजघोषश्रुतिसमृतीकरते॥फिरसोथधनु
मुखीसुनिकेकुरुराजकेसत्रुसबैडरते॥वजिवाद्यअनेकहिगाय
कगानतेंहिसबश्रोतनकोहरते॥तितहाकितद्रोनबिडारिगयो
बहुसब्दअसंभवसेवरते॥३॥ ॥सोरठा॥ ॥महाअसेभ
वभीत द्रोनपतनसंजयदुसह॥भारचहुजथाअभीत जुधकि
योदुजराजने॥४॥ ॥संजय०॥ ॥सवैया॥ ॥जीतिसकेति
नतेंनरकोजयदाइकजोव्हेगुपालसोनाहीं॥वाद्विजराजकेबान
समानकरेउपमानपेंकालसोनाहीं॥हाथनमेंचलचालअनोपम
हैचितमेंचलचालसोनाही॥द्रोनबराहकीडाढनमेपरिकेकदिवी
कछुखालसोनाहीं॥५॥ ॥कबित्त॥ ॥द्रोनकेप्रहारेबानमा
रेज्यूविचारेप्रछभयेमतवारेझूमेझूकेझुकेझुके॥वानकोसधा-
नसत्रुप्रानकोप्रयानसाथविजैकेजहांकेतहांलखतरुकेरुके॥
नैनविडरानेऐनबैनतुतरानेसबेसैनथहराने मुखअधरसूके
सूके॥चावरेसेव्हेरहेउतावरेजितेकतितेजावरेकेधालेरहेडावरे
लुकेलुके॥६॥द्रोनकह्योमागसुयोधननृपमाग्योवरजीवतही
धर्मराजमोहिपकराइये॥अर्जुनछतेंयहेकठिन दिगपालनको
द्रोनकहेदोऊकोवियोगकेसेपाइये॥त्रिगर्ताधिपतियोसुसर्माने
ममरवेकोकीनोकहीसेनकोह्यांअरजुनबुलाइये॥नेमनरकैव्य

दैन्यश्रायुश्रासागिनेनाहिशत्रुजुत्थजाचैनाकेसन्मुषसिधाइये ॥७॥ ॥दोहा॥ ॥नहींदीनताक्लीव्यता अर्जुनकेदोयनेम ॥श्रायुश्रन्नदेहैश्रवसि श्रायुराखिहेक्षेम॥८॥इतेएकगांजी वधर उतेंपचासहजार॥बहुतरथीइकपहरमें कीनेविजयसंहार ॥९॥मोहश्रस्त्रतेंसारथी रथीकृष्णाश्ररुपार्थ॥लखेपरतश्ररिप रसपर हततजाननिजसाथ॥१०॥ ॥कवित्त॥ ॥संसप्तके युद्धकूंकिरीटीकेगयेतेकरिप्रेस्यौभगदत्तभीमहूकोश्रंतलैरह्यौ ॥स्वबलविचलनिष्ठुसब्दसुनितिष्ठतिष्ठश्रायोयूंउच्चारताहिगांजि वकूंछेरह्यौ॥मास्योबानएकहीप्रचारिढिगश्रावतसोपरवोवामू डपैलखावेतुंडच्छेरह्यौ॥धर्मजकेविजैकेवितानसेतनेगेतातेमहू रतश्रादिकीलरोपीवेकोंव्हैरह्यौ॥११॥भगदत्तनेंबेष्णवश्रस्त्रप्रे स्योश्रर्जुनपेंनारायनबीचऊल्योनरकूंबचायके॥पटकावरदान कोहोद्रष्टकाजसत्रुसीसकृष्णनेकदायगेस्योकथासमुझायकें॥ वहेगजमारिसीसडारीभूपेंभूपहुकोविजयउच्चारिनिजबलकोसु नायके॥भिरेहेंजेजेश्रायकेकेश्रायुधउठायकेवातेजहुकूपायके तेपरेमूरछायके॥१२॥ ॥सुयोधन॥ दोहा॥ ॥हेंदिनश्रर जुनबिनरह्यौ धर्मनपकस्यौश्राप॥बरव्रथाकिश्रथवाव्रथा भ-येतोरसरचाप॥१३॥ ॥द्रोन०॥ ॥चक्रव्यूहश्रबरचतहूं श्रा जपकरिहूंभूप॥नातोहतिहोंसूरकोऊ ताहीकोश्रनुरूप॥१४॥ श्रर्जुनकोंजुधकोगये संसप्तकेसंग॥तापीछेद्विजद्रोननें की-नोव्यूहश्रभंग॥१५॥ ॥युधिष्ठिर॥ ॥व्यूहभेदपैंहारजय लगीपुत्रविख्यात॥वेधतहैप्रद्युम्नहरि तूंश्रथवातवतात॥ ॥१६॥तोविनश्रभिमनतीनहू वेतोनहिंयहकाल॥तूंवेधहूंतव प्रष्टपें रहिहैंहमसबलाल॥१७॥चक्रव्यूहकेवेधसें श्रभिमनक वरउदार॥धर्मराजश्रादेसतें चल्योकवचधनुधार॥१८॥ ॥

कवित्त ॥ ॥ जयद्रथको मृत्युऔअजयसुयोधनकोछक्कुवीरधीरनकोअजसलखागयो ॥ विजयजुधिष्ठिरकोरुजसकिरीटीजूकोद्रोनकोपतननाहिंजतनरखागयो ॥ सुभद्राकोसोकअहवातनासउतराकोकेउनृपपुत्रनकोकालज्यूशिखागयो ॥ इतनेपदारथकोचक्रव्यूहरंगभूमेअर्जुनकेआगमतेआगमदिखागयो ॥ १९ ॥ द्रोनकोहृढायोदलदुसहदिखातदीर्घदारुनदुसासनसेचक्रव्यूहवनायोहै ॥ जाकोभीरभेदवेकोभर्तवंसभूषनयोपायपितुआज्ञाभुजभारभीमभायोहै ॥ पारेअवनीसनकेसीसअभिसेसकीन्हेकेतेइकुमारमारेतोउनअधायोहै ॥ सुभद्राकीकूरवकीबलैयालीजेबारवारजाकेबीचवीरधीरअभिमन्युजायोहै ॥ २० ॥ बैरीबखानतहैसुयोधनकीसैन्यबारेअर्जुनतेंजाकोतेजलखतसवायोहै ॥ वडिवाकोभोरजेसोचक्रव्यूहतापैंवेगदक्षजरयकाजवीरभद्ररसायोहै ॥ वापहूकोआकारजऔरसबक्षत्रिनकोताकेसुरवबापजेसोआपपदपायोहै ॥ सुभद्राकीकूरवकीबलैयालीजेवारवारजाकेबीचवीरधीरअभिमन्युजायोहै ॥ २१ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ काकाऔरभत्तीजके भयोजुद्धल्यद्भूत ॥ दुःसासनमूर्छितभयो ताहिभागोलेसूत ॥ २२ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ मातापितारुभद्रारुधनंजयहैपरवतेजकदीविसरेना ॥ ज्येष्ठतोकष्टमेद्रष्टपरेनकनिष्ठकीकष्टमेंप्रष्टफिरेना ॥ तातकोभ्रातडरेबहुसत्रुमेंभ्रातकोतातसदैवडरेना ॥ काकेकीहोडभतीजकरेंनहिकाकोभतीजकीहोडकरेना ॥ २३ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ सुयोधनकोपकियेसुभद्रानंदपेंचल्योताकूंदेखिसेनापतिद्रोनअकुलायोहै ॥ बारबारबरजूंमेंवरजोनमानेसठमरीद्रष्टबालप्रलयकालसोलखायोहै ॥ अकेलेकुमारलरयोंलोकतरीवाहनीकोमारिकेअबारजमलोककूंपठायोहै ॥ आसचीकोछक्योज्यूअसावधानजातकितेआगेदखिमहा

वीरवासवीकोजायोहै ॥२४॥ ॥छंद॥ ॥दवावैत ॥
अर्जुनकेपीछेकुरु दलकेउमगायेते ॥ बंधनचक्रव्यूहहियमसु
तकेफुरमायेते ॥ अभिमनकेत्रिहाइनधीरेरथलागतहीबगतरत
नधारतरवसंरवनकेवागतही ॥ रुक्रगोदसहित ह्रतेंवायुदिनरूरवो
सी ॥ भैंचकसोकालहिनृपपुत्रनकोभूषोसो ॥ दिनमणीकीरस्मी
निरतेजहीदरसावैल्यूं ॥ कंपतभूभूधरअहिकोलहिकसकावैल्यूं ॥
कायरमुरवसूकेतुतरानेकरकंपतहै ॥ सूरनकेजसकीपरलोकहि
कीसंपतहै ॥ व्यूहेकरिबंधनगोकबरनकेझुंडनमें ॥ छत्रनकीछा
यातकमारतसुरमुंडनमें ॥ छाईसुघराईदलअर्जुनकेछौनेकी ॥
लाघवताकरकीसुघराईमुरवलोंनेकी ॥ निररवौआचारजछविस्क
भद्राकेनंदनकी ॥ करकीचलचालनगनसत्रुननिस्कंदनकी ॥
पंचननेंबोलतचरवअद्भुततापेचूहुं ॥ हैअर्जुनऐसीभईअष्टीकुं
देरवूहुं ॥ दाहेंअरुबायेधनुमंडलसेरसंजुतहै ॥ रस्मीजुतसूरज
परीवेरवहिमेंरजतहै ॥ कालहिकेबालहिसेचाननवरसावेजे ॥
सालननटसालनदरसालहीदरसावजे ॥ अभिमनकेसनमुरव
अजरायलजेअडतेहै ॥ जमपुरकेभमैलकेउधायलतडफतेहै ॥
वीरनकेजुद्धनबिचचालनतिहबरूकी ॥ सेंधमुहबालनकेभाल
नसमसेरूकी ॥ वीरानूतनचिकेभटजूटेरचिरचिकेल्यूं ॥ मचकेल
गिबाहनषचिषचिकेधरलचकेल्यूं ॥ गडगडतेतूरनवडवडकेते
उलडतेहे ॥ भिडतेकेऊमुडतेकेऊफडतेकेऊपडतेहे ॥ किलके
मिलमिलकेदलबलकेअगवारीपें ॥ चलिकेछलबलकेअनजल
केइकतारीपें ॥ लेकेउडोलेकेउनीलेतरवारनकूं ॥ रवोलेनिसान
केबोलेअरिमारनकूं ॥ भूमेकेउघूमेंकेउवाहनरथनागूपें ॥ रूमे
केउदूमेभडअछेहयआगूपें ॥ क्षेत्रनतेंसत्रुनकीसेनाऊरिपर
तीहै ॥ जोगनीलक्तनतेंपत्रनकूंभरतीहै ॥ कोकादुसासनकूंमू-

रछतकरिडास्योहीं ॥ द्वेसत नृपपुत्रनजुतलछमनकूंमास्योही ॥ भानुसुत १ द्रोनी २ कृप ३ भूरिश्रव ४ आचारिज ५ सल्य ६ जुतमिलविरथीसोकीनोजवमारनकज ॥ दीनोसिरसंकरकों पलरतपलचारीको ॥ पितुकोजयमृत्यु भयजयद्रथअपकारीकी ॥ लारवनकोंदेकेविधवापनअरिप्यारीकों ॥ उत्तराकोदीनोवि-धवापन निजनारीको ॥ २५ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मस्योकंवरसं-ध्यासमय भयोसेन्यअबहार ॥ सोकसिंधुबिचधर्मसुत कर करिफूटतपुकार ॥ २६ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ नृपतगांधारजूकीत नयाउछाहकरोकुंतिभोजतनयाकेउछवमिटायेते ॥ वासुदेवअ र्जुनकूंबदनबताऊंकैसेयुयुत्सुकूंकितेसीरवदेहोविचलायते ॥ युधिष्ठिर कहतमोकूवनकोगमनश्रेय मनकोमनोरथसोमनमें बिलायते ॥ भलेमन भायेपायेराजपदअंधपूतस्कभद्राकेजा येवीरस्वरगासिधायेते ॥ २७ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ मधुभोजनमेंम निभूषनमेंमृदसेननमेंजहांपानिपिया ॥ सिवगोननमेंसुधभोन नमेंथिरवाहनपेंसुतदेखिजिया ॥ करियेजिनकोइनठाहरअग्रसो हायअबेअकुलातहिया ॥ धिकमोधिकक्षत्रनकूंजुधबीचकहाक हुबालकुंअग्रकिया ॥ २८ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ अर्जुनदेखेआइके सांऊसिबिरहरिसंग ॥ नंहिवादित्रप्रदीपनहि नहीरागनहिंरंग ॥ ॥ २९ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ आयोवीरसमसत्सकगनकोंसंभारि जबसूनेसेसिबिरदेखिसोकवेसुमारहे ॥ पूछत हैंदुसहद्सात्रात-नआमात्यनसूंकेसबकेसंगयोकिरीटीबेकरारहै ॥ भर्तवंसभूसन जोदुसनदूसहगनकूंताकोलडेतोमेरेप्रानकोआधारहै ॥ बलभा गनेयकहांसुभद्राकोछावाकहांकहांपांडुनंदनअभिमन्युकुमार है ॥ २९ ॥ नानास्त्रसेनतेरीमाताकुंतीवीरसुयापितामहशांतनु त्यूंपितानृपपंडुहै ॥ कीनोसुरलोकअभेलीनोनरलोकजीतिवासी

नागलोकहुकेमानतबलचंडहै॥केसवकिरीटीजूसूंकहैंअभिन्यु-
कहांसत्रुजीतिवेकोंतेरेबिरदअखंडहै॥देषिध्वजदंडताजिषंडअ
रिझुंडतानतेरे भुजदंडहूतेअभयब्रह्मंडहे॥३०॥ ॥अर्जुन०
॥ ॥दोहा॥ ॥क्यूंधारतहौसखतुम महावीरबहुभांत
॥तुमदिगसिसकेसेमर्यो यातेंचितअकुलात॥३१॥ ॥युधिष्ठिर॥ ॥कबित्त॥ ॥तेरेगयेपीछेद्रोनचक्रव्यूहरच्यो
ताकोवेधवेकोकीनोपनप्रेर्योंमैंकुमारकूं॥वेधिहोमेंव्यूहपीछो
आयवेकोसंसयहैचारुभ्राततेरीपीठरहैंगेनिकारकूं॥सिंधुरा
जबरकेप्रभावचारोंजीतिरोकेरुद्रकेप्रतापमेंलख्योनहोनहारकूं
॥ऐसेजीपिरायबैठेसत्रुकोसिरायबैठेलारबूंतेंभिरायकेमराय
बैठेवारकूं॥३२॥सल्यछेद्योसूतसूतपुत्रधनुद्रोनीअश्वभूरि
श्रवाश्रानद्रोनढालकरवालकूं॥दुःसासनपुत्रभयेविरथगदातें
जुर्योमूर्छित्तभयेकोंदेखिप्रहार्योविहालकूं॥दंतीकेपछारिवीर
मारिमर्योलाखनकूंलछनकुमारलूंबिदारव्यूहजालकूं॥मंगल
निवारिबैठेविषयविसारिबैठेयूंअलोकधारिबैठेमारिबैठेबाल
कूं॥३३॥बारबारवारिदृगधारवहैंसुभद्राकेकहैपाथनाथजू
सिरानोबलरावरो॥भीमआदिभूषनकोधारतसुसरुभटति
नकोनप्रेरेभूपभयोमतिवावरो॥कुररीलौंकूकेहूकेउठतकरे
जेबीचदेखौंप्यारोपूतकहाजुधकोउतावरो॥होतोसबछत्री
मेरेजानेंतोनिछत्रीदलद्रोनव्यूहदारुनबिदानकूंड्डावरो॥३४॥
प्रातभयेअग्रजतिहारोसोसंवारिरथसारथीहैसेन्यबीचअभ
यविहारीहे॥कपिकीगरजघोषदेवदत्तगांजीवकीरिपुरिपुनारि
नकेगरवप्रहारीहे॥नामांकितवानमेरेपानकोसंजोगपायआछे
आछेबीरनकेप्रानकोअहारहे॥जैसेअत्ररोवेतेरेपुत्रकीकलित्र-
प्यारीतैसेपुत्रसत्रुकीकलित्रतूंनिहारीहे॥३५॥ ॥अरजुन

॥ ॥दोहा॥ ॥प्रातअस्तलौंनारहै जयद्रथबामम प्रान ॥ दौउरहौंतोहोंकुमत्व मोकोंनरकनिदान॥३६॥सरनयुधिष्ठिरकृष्णकी अथवाभजिनहिंजाय॥ तोइंद्रादिसाह्यतोऊ पितृनदेंहुंमिलाय॥३७॥सुनीप्रतिज्ञापार्थकी दूतनतैंतिहिबेर॥जयद्रथनृपभगिजानकूं सातकियोहियहेर॥३८॥कहेसुयोधनद्रोनतैं जयद्रथरारवहुआप॥ प्रातअस्तमितभानुलौं ममजयतोरप्रताप॥३९॥ द्रोनकहैमृगराजकों करिअपराधअमीत॥ जंबुककीमति सिंधुनृप यहतोपरमअनीत॥४०॥त्रिधाप्रातरचिहूंचमू सकटपद्मशुचिव्यूह॥ तावेधनसमरथनहीं सुरइंद्रादिसमूह॥४१॥एतेही-मेंभयसिवासि होइसिंधुनृपनास॥अरवयसुरवनकोंभोगिहौं निधिकेउस्वर्गनिवास॥४२॥भूमिसयनरचिपार्थके आपहाथव्रजनाथ॥ताहिसुवायरुस्वप्नमें शिवपुरदरसयसाथ॥४३॥शिवहिरिझायरुपायतहां एकबानअहिरूप॥ जयद्रथबधहितपासुपति दूजोअरुअनूप॥४४॥अस्त्रसिरवायोस्वप्नमें हरिनिजडेरनिआय॥ कहतकामनाअर्धनिस दारकतैंसमझाय॥४५॥ ॥॥कबित्त॥ ॥सुनोमित्रदारुकजयजयद्रथवचावेकाजद्रोनसेंअसाधमिलिव्यूहकीविचारीहै॥प्रातनाहिंछोरूं इंद्रआदिकसहायजापेंअर्जुनकोसत्रुसोहमारोसत्रुभारीहै॥अर्जुनहैमेरोप्रानमेंहूंप्रानअर्जुनकोअर्जुनकीजीवनसोजीवनहमारीहै॥ अर्जुनविनानछिनदेरवसकूंविश्वहूकूंकहैगिरधारीमैंसदैवऐसीधारीहै॥४६॥ ॥दोहा॥ ॥समरथसज्जीभूतकरि रारवहुमोरसमीप॥अर्जुनतैंनमरेतऊ मारिहौंसिंधुमहीप॥४७॥ रातप्रतिज्ञायादकरि चढ्योप्रातकुरुबीर॥ महिजयद्रथअकुलातदोउ धरधरातताजिधीर॥४८॥ ॥कबित्त॥ ॥ कोपकीकटाक्षतेंनिहारतहीरिपुऔरकामकीकटाक्षबामतिनकीधितानहै॥ मू-

वीरगांजीवताकोसपरसकरतश्रीनारनके कज्जलकोपरसमि-
टातहै ॥ दसतहैश्रोठश्रापपीरकोसहतवीरसत्रुबंधुश्रोदनकीपा
रसोविलातहै ॥ धारिउसकारनहीश्रर्जुनकेसत्रुनकी स्त्रियनकी
चूरनकोचूरनदिखातहै ॥ ४९ ॥ ॥ द्रोन० ॥ ॥ दोहा ॥
॥ ॥ रिनविनजीतेसत्रुके तूंश्रर्जुननहिजात ॥ जोमोहिजेहै
जीतिश्रव तबपनसांचोतात ॥ ५० ॥ ॥ श्रर्जुन० ॥ ॥
तुममेरेनहिसत्रुहो श्राचारजद्विजवंस ॥ जिनतेंहारनजीतसम
छत्रिनकहतप्रसंस ॥ ५१ ॥ देगुरुकोसप्रदछिना श्रपसव्यक्षेप
राथ ॥ जयलछनदेद्रोनकू चल्योनाइकेमाथ ॥ ५२ ॥ ॥ कबि
त्त ॥ ॥ कहतेकिरीटीजूसूंकरिहैकलहक्रूर महासूरबीरनकी
मनमेंमनीरही ॥ वाहनकेवेगवासुदेवप्रेरीवेतेवाजिवाहतोभईना
चितवाहतोधनीरही ॥ दोयकोसश्रागेसत्रुनासकरेऐसेवानदोयकोस
पीछेपरैचक्रतश्रनीरही ॥ पायेहैनृपतिपतिश्रछरश्रपतिहैपैंपाथ
सत्रुसंपतितेंविपतिबनीरही ॥ ५३ ॥ चारचारकोसविस्तारदिसा
चारहीमेंकपीचिन्हलीयेव्योममंडलमेंजूटिवो ॥ ऐसोध्वजदंडरथ
वेगहैश्ररवंडतेसोजारवप्रचंडब्रह्मांडकैसो फूटिवो ॥ श्रर्जुनकी-
सीघ्रताकोकोनपेबखानबने एकसारथदूरपाथसत्रुश्रायुटूटिवो
॥ पांचसतबाननकोछिनमेंनजान्योजायतीनतेंनिकारिवोसधा
नऐंचिछूटिवो ॥ ५४ ॥ सुचि १ हासि २ करुणा ३ श्रो रौद्र ४ वी-
र ५ हैबिभत्स ६ भयानक ७ श्रद्भुत ८ श्रोसात ९ लौंविख्यात
है ॥ रति १ हांसी २ सोक ३ कोप ४ उत्सव ५ गिलान ६ भीति
७ विस्मे ८ निर्वेद ९ थाईकारनकहतेहैं ॥ स्त्री १ रिषी २ स
त्रुनिमें ३ राजा ४ सूरे ५ सकुनी ६ मैकायर ७ दिखेये ८ यु
धिर ९ मेंसुहातहै ॥ दोनूंश्ररवेभातनतेश्रर्जुनकेहाथनते-
काटेप्रथीनाथनतेनोरसदिखातहै ॥ ५५ ॥ उतेबेनिकारबर

मालाद्रव्यसंपुटतेंइतैंअरवेतूनतेंनिकारतहीवनके ॥ उतैंदेव
वधूमालग्रंथिकोसंधानंकरेगांजीवकीमुरवीपेंहोतहीसंधानके
॥ इतेजापेकोपकीकटाक्षभरेनैनपेउतेभरकामकीकटाक्षप्रेमपा
नके ॥ मारिवेकूंमरवेकूंदोनूंएकसाथचले इतेपाथहाथउतेहाथअ
छरानके ॥ ५६ ॥ जाहीपेंसंधानबानगांजीवतेंअर्जुनकोताहीपें
अच्छरचरवचंचलचलातहे ॥ रूपरंगभूषनजेबसननिहारनही
छिनहीमेंओरहीकेंओरसेदिरवातहे ॥ मेरोहिबर्यौहेकेंधौंओर
कोवर्यौहेएसोअस्त्रविनसस्त्रहीमेंविस्मैंविरव्यातहै ॥ याहीरव्या
लवीचहेविहालसुरबालडारेंस्वेतफूलमाललाललालभईजात
हे ॥ ५७ ॥ गंगागतिगांजीवविराजितसहितघोसरवितनयाजूके
रूपइषुधारपैंनीहे ॥ सरस्वतीरूपजाकीपनचउदारसोहेलोकलो
कबीदअद्भूतजसलेंनीहे ॥ नारायनाढिगतेंचलीहेकुरुषेतबीचमहा
सूरबीरनकूंजोतमेंमिलेंनीहे ॥ हैतोगतिऊर्ध्वदेनीचतुर्वर्गश्रेनीपर
होयनत्रबेनीसुरलोककीनीसेंनीहे ॥ ५८ ॥ कोनसमेंतोनतेंनिकारें
द्रोनसेंन्यकहेकरतसंधानछोरिआनकूंगहतहे ॥ दोयदोयकोसआ
गेपीछेपायदसूंदिसादसदसकुंजरकेपिंजरदहतहे ॥ जाकेताकेज
त्रतत्रजहांतहांजबेतबेएकआनलगेफेरज्ञाननरहतहे ॥ अर्जुनके
बानकोप्रमानदेरवसत्रुनकेप्रानकोप्रयाननिजप्राननचहतहे ॥ ५९ ॥
॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ करिप्रथमद्रोनतेंजुद्धवीर ॥ जयलक्षनदे
पुनिचल्योधीर ॥ दंतिनकीसेनासबबिदारि ॥ जबनाधिपतीअंब
ष्टमारि ॥ अवंतीपतीव्यंदानुव्यंद ॥ कीनेदोपुत्रनजुतनिकंद ॥ न
हिंसुतभूपहरिकीयोरवंड ॥ निजअस्त्रहितेंपायोसुदंड ॥ मूर्छाह-
रिअर्जुनकीमिटाय ॥ हतिसत्रुसेंन्यपरवेसपाय ॥ केउरथीओरह
यगजारोह ॥ कीनेविनासअर्जुनसकोह ॥ वहसमयकृष्णनरतें
उचारि ॥ बहुश्रमितनृषातुरहयविचारि ॥ ततकालअस्त्रतेंरचहुता

ल ॥ समऊहुइइषुमइ पुनिअस्वसाल ॥ निरसल्यकरूंअस्वनपि
बाय ॥ करिअभययुद्धतूंसथिरकाय ॥ज्यूंकह्यौकृष्णत्यूंकियौ
पार्थ ॥सरबरहयसालाएकसाथ॥हयपायकियौहरियह्प्रवेस
॥सोरह्यौपयादोविजयसेस॥६०॥ ॥दोहा॥ ॥ विधिरथह
रिसारथिबिगर पार्थभूमिगतपेखि॥उमगेअरिफानूसबिनु
दीपसलभगदेखि॥६१॥बिनरथअर्जुनबहुरथी रोकिलियेजुत
छोभ ॥ अगिनतगुनगननरनके ज्यूंरोधतइकलोभ॥ ६२ ॥
॥ ॥कबित्त॥ ॥मूरखकेवैनमेंनकुलटाकेनैनमेंनमीनगति
लैनमेंनचपलाईऐसीहै॥ तारखकेगोनमेंनत्यूंहिपुंजपोनमैं
नबिद्युतकेहोनमेंनकोनजानेकैसीहै ॥ सव्यअपसव्यहूकीफु
रनीनजानीजायकिरीटीकेहाथनमैंजैसीहोइतैसीहै ॥ जितैजितै
जेतिजेतिसत्रुसैन्यजुरेजबतितैतितैतेतितैतिसीप्रताअनेसीहै॥
॥६३॥ ॥दोहा॥ ॥अेष्ययहीकोअतिथज्यूं कबहुनवेमुखजा
य॥त्योंअर्जुनतैंभिरिसमर बिनछुतकोउनलखाय॥६४॥ ॥
कबित्त॥ ॥व्हैकेप्रतिकूलजानेखांडुवनजारदीनोसानकूल-
व्हैकेसत्रुइंद्रकेकियेनिपात॥ भोजनकीबेरऔरपुत्रत्रियासप
रसकूंसबहीकोदक्षनकरबढतलखावेंतात॥ आहवमेंअर्जुनके
उभैबाहुएकसेहैलखेताकूंगांजीवअलातचक्रसोलखात ॥ वामअ
गूंदक्षनत्यूंदक्षनकेआगूबामवामनभूमापवेकेपैंडसेबढतजात
॥६५॥पार्थकेप्रहारपरलोकप्रथीनाथनकोपेषिदुरयोधनपछि
तातप्रानपीसेत्यों॥दुसहदुरापदीघैकपीध्वजदंडदेखिदूसासन
आदिदुतिहीनभयेदीसेत्यौं॥सोहतहैसत्रुतेसराहतसरबवी
र॥चाहतकिरीटीबाणदसहूदिसासेत्यौं॥वरकेबरीसेरूपसरस
सीसेइतैंकीदंडकसीसेउतैअच्छरअसीसेत्यूं॥६६॥ ॥सवैया
॥ ॥सिंधुनरेसकेमारवेकाजलयोपनवासवीसध्यगयोचल ॥

जाकेप्रवेसकेपीछेहिजेसनेमारविदारकेटारदियेरवल ॥ विह्हेऊम रसुद्धपराक्रमता।हिकेजुधमेंनाहिकछूछल ॥ पोनमृगेंद्रतैहोतग जेंद्रत्यूंदोनकेपोनतेपांडुनकोदल ॥ ६७ ॥ ॥ इतिश्रीपांडवयशेंदु चंद्रिकाद्रोणपर्वणिएकादशमयूरवः ॥ ११ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥

अथद्रोणपर्वउत्तरभागप्रारंभः
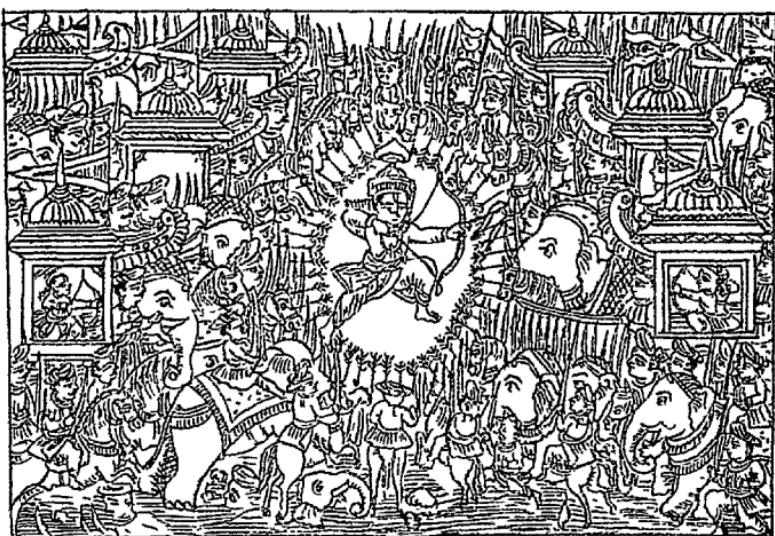
श्रीगणेशायनमः॥ ॥युधिष्ठिरउवाच॥ ॥कबित्त॥ ॥नेरैकाजवनहीमेंकह्यतोकिरीटीमोसुसातकीकेजोरहीतेंसत्रुनकोमारिहो॥कृष्णबलदेवजोपैंहोयनसहायतोहूएकसैन्ययहुतेंसवैकाजसारिहों॥सोहीकाजआजकोसहादसलौंद्रोनव्यूहतोबिनतरैयाकोहैनाहितेपुकारिहों॥देवदत्तगांजीवकीघोसनसूनुहूंतेरेगुरुबिनप्रथाकूंमैंकामुखदिखारिहूं॥१॥ ॥सात्यकी॥ ॥दोहा॥॥ ॥जबनसैनदससहसगज अर्जुनलायोजीत॥ तेउजुधकूसनमुरवरवरे लरवहुकालविपरीत॥२॥ इनहिंद्रोनजुतलोपिके कर्नसैन्यकूधाय॥दुसासनजलसिंधुहनि मिलहुविजयतेंजाय॥३॥ ॥कबित्त॥ ॥व्यूहकेउलंघिबेकूंसोचमोकूंनेकनाहिआपकोहैसोचमेंभरोसेछोरूकोनके॥हमेयाहीकाजदोऊकृष्णयहांराखिगयेजीवितग्रहनतेरोस्कन्योनमद्रोनके॥जुधिष्ठिरकहेमैंकाक्षत्रीनाहुभीमादिकमेरेहेसहायक्योंनजाहुउतगोनके॥एतीसुनीमोनकेंदिवायदानविप्रनकूंव्यूहदीनकेपैंचल्योरथीवेगपोनके॥४॥ ॥दोहा॥ ॥सकटव्यूहधुरद्रोनतें प्रथमहिभयोमिलाप॥द्रोनकहतदुरधर्षसों लखिसैनेयप्रताप॥॥५॥जामगव्हेतबगुरुकट्यो रेसात्वतमदअंध॥त्यूंअपसव्यव्हैनिकरिनूं कैतुहितूटहिकंध॥६॥ ॥सात्यकी॥ ॥जामगआचारजकटै कटतनसिरवकूंसोच॥तिनकूंजोदूषितकहे तिनकीबुधिमहिपोच॥७॥आडेफिरफिरहटगयो तीनवेरद्विजद्रोन॥तिनसात्वतजुद्धकुसलतें कहिजयपावतकोन॥॥८॥मारिसारथीद्रोनको कृतवरमाकोजीत॥समआईदुसासनहि कपटद्यूतकीरीत॥९॥सातकिबाननतेंबिकल रनत्याग्योजुवराज॥दूसासनचितचकितसो गयोद्रोनपेंभाज॥१०॥ ॥सवैया॥ ॥सीसकेभूषनभूमिपरेकटिसात

कीवीरकेबानकेमारे ॥ द्रोनकहे हसिकै कुरुराजजूआयेभले करमुंडउघारे ॥ बीजकोबोवत पूत दुसासनजान्यौनहींफल लागिहैरवारे ॥ जोप्रियहोइसोजाहरकीजियेपागमंगावैकीचून रीप्यारे ॥११॥ द्रोनकहे भ्रकुटीकरिबेकभयेसूतकायरमंगल गावें ॥ राजसभाबिचनाहररूपरुकामपरेपरस्यालकहावे ॥ क्यूंतुमसेनृपपूतदुसासनगालवजायकैवीरतापावे ॥ सात्यकी तेंबचेजन्मभयोनयोसूपबजावेकिथालबजावे ॥१२॥ ॥ छंदघनाक्षरी ॥ ॥ करैनासंधानसरकोपजुतवानीदुजक- हतदुसासनतेंभाग्योलरिववारवार ॥ सातकीकेबाननतेंत्रास तहोमेरोपूतकिरीटीकेबाननसहोगेकैसेभलेकार ॥ बरजतर- च्योधूतकाननपिताकीकीन्हीद्रोपदीकोऐंच्योचीरसंधिक्यूंनली नीधार ॥ जाननक्यूंरवेलेहेअजाननलोंपासनकेबाननकेजुथ व्हैहैप्राननकेलेनहार ॥१३॥ टेढीभ्रकुटीद्रोनदुसासननिकटदे षिबोलैप्रगटवाक्यकुसलजुतआयेधाय ॥ रवातरसुयोधनकी- सातकीकूंदीनीजयपूर्वतजिरायसाजवनकेनकीनेजाय ॥ कुरुद लबीचनरसिंघआपवीरबजोधिकहैहजारजाकोंअरितेंविमु- रवकाय ॥ वायबीजहाथनत्यूंपायजुवराजपदषायधाईपीठदीठ लाजहुनआईहाय ॥१४॥ ॥ कृष्णार्जुनउभयोक्तक ॥ ॥ ॥ द्रोनदलफारिकेविदारव्यूहदंतिनकीमार्यौसदर्सनजलसंध हूकोगिलगो ॥ जवनपछारिपुनिद्रोनसारथीप्रहारिजादवउदा रफेरदुसासद्रोनदलिगो ॥ विक्रमवरवानेसबैबीरभर्तवंसिनकेकु रुसैन्यसिंधुनरदेरवित्तूंबिचलिगो ॥ सात्यकीमदोन्मत्तकुंजरकरा लकृष्णबाल्हिकनृपालपौत्रकीचवीचकलिगो ॥१५॥ ॥ दोहा ॥ ॥ युयुधानभूरिश्रवा यदुपुंगवकुरुवीर ॥ जुटेविरथविन कवचभये तोउदोउतजीनधीर ॥१६॥ द्वंदयुद्धकरिपटककुरु

सातकीकोतहांसीस ॥ छातीचढिकाटनलगो यादवभयो-
अनीस ॥ १७ ॥ ॥ घ० ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ कृष्णजैसोसार
थीअनासरथत्यूंहीअस्त्रअरवेभातागांजीवकीगुनकुकटैनही
॥ किरीटीसोरथीताकीसमताकरैयावीरद्रोनरच्योव्यूहतापैंअ
केलोनटेनहीं ॥ सकटकेबीचपद्मपद्मबीचसुचिव्यूहदोयदस-
कोसताहीदेवहूअटैनहीं ॥ अटनकियोहैताकूंऐसेसातकीकोसी
सछातीचढभूरिश्रवाकाटैपेकटैनहीं ॥ १८ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
युधमन्युउत्तमौजहैं द्रुपदपुत्रभयद्रोन ॥ नररथांगरक्षकतोऊ
व्यूहबाह्यकियगोन ॥ १९ ॥ ॥ संजय ॥ ॥ सोमदत्ततातकौस
नी काटनलागोसीस ॥ करीदयाजीवततज्यौ उनभजिज्या-
च्योईस ॥ २० ॥ याकेसुतकौमोरसुत मृतकप्राययुधमांहि ॥ क
रैविनयसुनिधुरजटी तथाअस्तुकहिताहि ॥ २१ ॥ बन्योजोगता
तेइहै कृष्णकह्योनरदेखि ॥ आयोकुरुदलसिंधुनर गोपदडूबत
लेखि ॥ २२ ॥ ॥ अर्जुन० ॥ ॥ प्रेरचोममहितसातकी
कीनोनृपतअकाज ॥ इतयाकीरक्षाउचित इतजयद्रथवध
आज ॥ २३ ॥ यूंकहियामहिपानितें प्रष्टअदृष्टहिबान ॥ मोरयो
भुजभूरिश्रवा षडगजुक्तकियहानि ॥ २४ ॥ त्यागिसस्त्रसंन्या
सलै कहीकिरीटीदेख ॥ तोकूंऐसीउचितक्यू पुनिसंगतिफल
पेखि ॥ २५ ॥ लरतआनतेंप्रमतमें ममभुजछेद्योसोइ ॥ कृ-
ष्णमित्रविनक्षत्रतें यहअधर्मनहिंहोय ॥ २६ ॥ ॥ अर्जु०
॥ ॥ राजपुत्रनिजसैन्यकूं राखिलेतभयबेर ॥ बनीनरच्छा
अंगकी कृष्णहिनिंदतफेर ॥ २७ ॥ ममहितआयोसातकी
तजिआसानिजप्रान ॥ ताकोमृत्युसंकष्टमें क्यूंनहोउतनआन
॥ २८ ॥ इनतेंसातकिभूमितें सोईखड्गउठाई ॥ कृष्णादिकबरज
तरहै दूरकियेसिरकाय ॥ २९ ॥ ॥ कृष्ण० ॥ ॥ दारु-

कसातिकिकूंकरहु ममरथपरआरूढ ॥ जौंलौंगांजिवबानतें मरैसिंधुनृपमूढ ॥ २९ ॥ ॥ युधिष्ठिर ॥ ॥ पांचजन्यकीघोषसुनि कह्योभीमकूंदोर ॥ देवदत्तधुनिबिनुसुने मनअकुलावत मोर ॥ ३० ॥ नहींकपिध्वजकीकुसल कृष्णलरतममकाज ॥ द्रोनव्यूहबिचगोनकूं औरकोनतूंआज ॥ ३१ ॥ कहिहैसबाहिन-अनुजके तजीसातिकीदूरी ॥ करहुधनंजयतेंअधिक जाकौ जतनजरूर ॥ ३२ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ सातिकीजूंभीमहूंकों पठायोकिरीटीकाज द्रोनतेंसुनाएकदुबादवीररसमें ॥ मैं नाकिरीटीसिष्यतसात्यकीभसिस्यनाहींहारिकढोकैसेज्यूंकटेहे तेरेबसमें ॥ रेरेद्विजनीचअबमानतहूंसत्रुतोकूंजीतेबिनवैसेकैसे जेहुनानिकसिमैं ॥ धनुमुरवीकेरथनेमिउरवीके घोसगदागुरुबीके त्यूंसुनाएदसादिसमैं ॥ ३३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ एकगदाहतकर दियो अस्वसहितरथचूर ॥ नातरजमपुरभेटतें द्रोनकूंदिगयेदूर ॥ ३४ ॥ एकतीसएकदिवसमें चवदानिसबिचपूत ॥ तेरेजमपुरकोगये हतेभीमरनधूत ॥ ३५ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ पांचबेरभीमतेंभोपराजैदिनेसपुत्रएकबेरसोईजीत्योभीमकोंबकारि-कें ॥ जैसोशस्त्रलीनोतेसोकाटकेद्विधासोकीनोभृत्युगजत्रानत्यूंही छेघोवानमारिकें ॥ धनूकेअणीतेंघोदादकेकटुबादकहेखायोक रीबोहोतउठायोकरोहारिकें ॥ आजपीछेजुद्धकोबिचारकेपधा-र्योकरौतुल्यसत्रुधारिकेमैंकहतपुकारिकें ॥ ३६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ मरनप्रायकरिभीमको नामार्योयहहेत ॥ कुंताकोंचहुपुत्रको दियोबचनकरचेरत ॥ ३७ ॥ ॥ अर्जुन ॥ ॥ करनयांचधाभीमतें क्योंनपराजययाद ॥ एकबेरतूंकरिविरथ बोलतहेदुरवाद ॥ ३८ ॥ धूकअसूयकजनकी दृष्टिबुद्धिइकभाय ॥ तमपरऔगुनमेंफुरे दिनपरगुनलखाय ॥ ३९ ॥ निजकुत्रि-

यनिजपानितें मर्दतदूकश्रलाद ॥ होयतहोयस्वमुखहितें अ-सकृतकोश्रपवाद ॥ ४० ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ इइसैन्यबाह्य मिलिद्रुपदपुत्रश्ररुमिलेसातकीभीमश्रत्र ॥ इनबिनहिएकश्रर्जुनउदार ॥ कियेसत्रुविकलसुरश्रभयकार ॥ मूर्छितकियेकृपकूएकबान ॥ सुतद्रोनभग्योलैम्रतकजानि ॥ मद्रदेसस्थकियखंडखंड ॥ पुनिहतेदुसासनयहप्रचंड ॥ रथभगेंश्रस्वलैमरेसूल ॥ वृषसेनकरनदोऊपितापूत ॥ भूरिश्रवसात्तिकीकियोनास ॥ दुरयोधनभाजिगोद्रोनपास ॥ उतदेखनरिनश्रारिसिरउठाय ॥ चितक्षुभितकियहरसरचलाय ॥ ४१ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बहुतनमिलिकीनोविकल अभिमनदलविनएक ॥ धन्यएकगांजीवधर कीनेविकलश्रनेक ॥ ४२ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ श्रस्त्रहीतेंकीनोहैसरोवरश्रनूपरूपकीनेनिरसल्यश्रस्वनीरहूपिवायोहै ॥ भूरिश्रवाभुजाछेदिसातिकीबचायलीयौतासोपुनिभासनभीसबकोसुहायोहै ॥ सिंधुनृपरक्षाकाजश्रष्टधनुधारीठाढे तिनकौंदबायकीयोश्रापमनभायोहै ॥ सीसछेदिताकोदसजोजनउडायतातकेपितायदडारिसिरताहीकोंगिरायोहै ॥ ४३ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ जयद्रथहिमारिपुनिफिरेजोध ॥ रिनकवनतिनहिकरिसकेरोध ॥ श्रीकृष्णकहतरिनभूकभाव ॥ पार्थलखीयहगांजिवप्रभाव ॥ केउपरेबीरसिरखुलेकेस ॥ बोलहिजनुफाटेचरवविसेस ॥ गजपरेइतैंरथपंथरूध ॥ जाजुल्यकियोजहांजवनजुद्ध ॥ केउपरेधनुषशक्तीनिषंग ॥ कहुश्रधीभागकहुश्रर्धश्रंग ॥ कहुचर्मवर्मभूषनकितेक ॥ कहुश्रस्वरथनकेश्रंगकेक ॥ इतहतेश्रस्मजोधाश्रपार ॥ सातिकीकियोश्ररिदलसंहार ॥ यूंकहतयुधिष्ठिरनिकटश्राय ॥ लखिविजयविजयजुतकंठलाय ॥ षटकुतीमिल्योकरिहृदयलीन ॥ नृपमानिजनमजिनकोनवीन ॥ भगिनीपतिमार्योसकन्योभूप ॥ नव

पुत्रपस्यौदुपदीर्घकूप ॥ वहसमयगयोद्विजद्रोनपास ॥ नहिंसि थरस्वासडारितनिसास ॥ वहश्रमितवृद्धद्विजश्रप्रमाद ॥ बोल्यौ फिरतिनतैंकटुकवाद ॥ तुमविजयविजयकीचहीतत्र ॥ अजय ममचहतगमपरीश्रत्र ॥ जानिकरिपार्थतुमदियोजान ॥ साति-कीवृकोदरसथसमान ॥ जयद्रथहिजियतरविश्रस्तजोत ॥ नो जरतपार्थममविजयहोत ॥ मैंश्रापभरोंसेकस्योजुद्ध ॥ करत ममसैन्यश्ररिनासक्रुद्ध ॥ यहसुनतकह्योद्विजद्रोनश्राप ॥ निस रचहुजुद्धममलखिप्रताप ॥ ममरवुलहिकवचकेमृतककाय ॥ अ थवाकिरवुलहिसत्रुनमिटाइ ॥ ४४ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥

द्रोनद्रगदुसहदिखायकेसुयोधनकोकहैदाघेबेनतबेस्करताकितै गई ॥ अष्टधनुधारीबीचजयद्रथबच्यौनहायजीयकीअरुजयकीउर आसतौरितैगई ॥ पहलेहुजतनकस्योनप्रानराखवेकोअबतो सबसैन्यहूकीआयुसडतैगई ॥ जादिनतइभीसमसरसेजपोढे तादिनतैंबडेबडेबीरनकीबीरताबितैगई ॥ ४५ ॥ सुनकैकटुक वादनृपतसुयोधनकेद्रोनकहैकाहेनृपउच्छवकरैनही ॥ अष्टम-हारथीतुमरक्षकभिरथभयेहत्यौसिंधुराजतातैंभवस्यटरैनहीं ॥ द्वादसहीकोसपरयंतमेरोरच्यौव्यूहतामैंएकमहारथीसातकीडरैनही ॥ जबतैंनद्रष्टपरैध्वजादंडभीसमकोतबहीतैंविजैतेरोद्रष्टहीपरै नहीं ॥ ४६ ॥ ॥ धृतराष्ट्र० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ संजयममजा मातुको बढ्यभयोस्कानिकान ॥ आचारजकाकरतभयो कह हुबरवानिसुजान ॥ ४७ ॥ ॥ संजय० ॥ ॥ पठयदूतस्कत धर्मपें व्हैहैनिसिजुधघोर ॥ देहुपयादीसैन्यको हातदीपदहु ओर ॥ ४८ ॥ रथदिगपांचरुद्विरददिग चारतीनहयपास ॥ य हुअनुक्रमदोउसैन्यबिच भईमुसालप्रकास ॥ ४९ ॥ सुगंध तैलमयरतनमय भयेव्योमसुरदीप ॥ देखनजुधकोतिकमिलै

अच्छरबरनअवनीप ॥ ५० ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ जबसिंधु
नरेसहत्यौतिहक्षोभतें पुत्रपिताअतिदुर्धरसे ॥ नृपताछिनबा
चलबीचदिखापरेनासविराटकेहूहरसे ॥ मनुहाटिककस्यपहा
रनकौंविषखंभकेजाहरनाहरसे ॥ द्विजद्रोनरुद्रौनियछात्रिन
मेदोउदोयभृगूपतिसेदरसे ॥ ५१ ॥ दलपांडुनबीचविहारकरैदूज
जाकौनिरोधकीकोनकरेतथ ॥ जामगद्रोनकटैरनकीडतभोनृपसो
हुकठोरमहापथ ॥ पित्रनहीतेंमिलायदियेकेऊओरबचे तिनकीसु
नियेकथ ॥ श्रोनतुरंगहैसारथीश्रोनहीश्रौनध्वजाअतिश्रोनरथी
रत ॥ ५२ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ प्रलैहुकीअंचकेसमानबानिबेठो
द्रोनतापैंधृतरूपबैननृपतसुनावेहैं ॥ मारिबोहीधारिकेसंधार-
बोबिचारिसत्रुबीरताअपारतनत्रानमैंनमावेहैं ॥ पलितहैकेसकर
ललितचलाकिचित्रकिरीटीजवानतोहूउपामानपावेहैं ॥ जाहीओ
रलखैताकीआयुसाविरंचिहरितीनपचादिसामंचखालींदरसावेहैं ॥
॥ ५३ ॥ रथबिनरथीकेऊसारथीविनाहैरथमावतविनाहीगजदस
हीदिसाभ्रमाय ॥ धोरेविनजोरेकेउजोरेविनधूमेकेउमरेभूमेकटे
कहेविलुलायहाय ॥ तनविनत्रानकेत्तेत्रानविनकेतेतनस्यानवि
नसस्त्रकेतेसस्त्रविनगोतेरवाय ॥ जत्रजत्रगोनहोतद्रोनकोसुत
तत्रतत्रसत्रुसैन्यछिनमेंविचित्रचित्रजानीजाय ॥ ५४ ॥ डोलत
पुहमिदसौंदिसहूकेदिग्गजतेधूजतधरतपांवधीरजधरेंनहीं ॥
जोगनकेजूथचितचक्रतचहोंधाचीतेफिरतअत्रसतत्रपत्रतोभरे
नहीं ॥ वीरभद्रआदिनकोमुंडमालकियेमानिविथकविलोके
विदाम्रांकरधरेनहीं ॥ देषियेअमोघबलकौरवदलदावानल
पांडदलयोधनकोअच्छरबरेनही ॥ ५५ ॥ मेरेजानेजमदग्निक
रीहैनिछत्रीभूमिएकवीसवारकोपतोहुनासिरायोहै ॥ पिता
केनिवारिबेतेंसांतप्रतलीनोहैपैद्रोनव्याजहीतेंतेजबानदर

सायोहै ॥ एकनिसाद्योसवीन्चक्षोहनीरवपाईसाततताकीविद्या घोरहीतेंदोनूदलघायोहै ॥ पिताकहैधन्यपूतपूतकहैधन्यपिता पितापूतदोनूरूपअलेकोदिखायोहै ॥ ५६॥ ॥ सवैया ॥ नपरैद्रगगोचरआनकछूगमिकैसबकीजनुबुद्धिगई ॥ अरुअश्व रथीगजसारथीतेउध्वजाध्वजदंडनआदलई ॥ रनव्योमपताल दिसाविदिसास्कमनोवस्कधाद्विजरूपभई ॥ जितहीतितपांडव सैन्यतितेसबहीसदलक्षैरह्योद्रोनमई ॥ ५७॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ॥ करनकह्योनृपद्रोनको गिनहुनकछुअपराध ॥ जुद्धअमित अरुवृद्धवय नकरुबचनतेंबोध ॥ ५८॥ देखहुमेरोजुद्धअब करिहूंसत्रुनिकंद ॥ देहूंतोकूंविजयजस हतिकोउपांडव नंद ॥ ५९॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ सजिचल्योकरन जहांमहासूर ॥ कियनासपांडवीसैन्यक्रूर ॥ निजसैन्यकूक सुनिकपीकेतु ॥ हरितैंकियथिनतीजुत्तहेतु ॥ अबप्रेरहुसमर थकरनओर ॥ करिरह्योसैन्यकोकदनघोर ॥ मारिहोताहिति हूंपुत्रमारि ॥ पुत्रकोंसोकलहेविचारि ॥ यहसमयकृष्णकही गूढअर्थ ॥ करनतेंभिरननहिंसरसमर्थ ॥ हरिकह्योहिडंबासुत हकारि ॥ निसजुद्धतोहिलायकनिहारि ॥ ६०॥ ॥ घटोत्क च॥ ॥ राक्षसीअक्षोहणीसैन्यओर ॥ ममहतीद्रोणसुत अबहिघोर ॥ तोउकरिहुंमायासहितजुद्ध ॥ करनकूंरोकिराख हुसक्रुद्ध ॥ यूंकहीरुगमनकीनोअकास ॥ परबतनकरीबिर खाप्रकास ॥ निजसैन्यसुयोधनहोतनास ॥ लखिकह्योकरन प्रतजुतनितास ॥ ममसैन्यप्रलयसबहोतआज ॥ फिरसक्ति वासवीकवनकाज ॥ मोरवीसुकरनयहसुनतबेन ॥ इकवीर घातनीसक्तिऐन ॥ घटोत्कचमारिगईइंद्रधाम ॥ सनिहर षकियोदिगविजयस्याम ॥ ॥अर्जुन॥ ॥ कियह

रषसोकठांकवनकाज ॥ ॥ कृष्ण० ॥ ॥ यहभरतबच्यौ तूंपार्थआज ॥ ६१ ॥ ॥ धृ० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ संजस्वान बराहकी स्वपचकरावतरारी ॥ मरेदोऊबिचएकके धाकौहि नहिंविचारी ॥ ६२ ॥ त्यूंहीकृष्णाकेकरनवा मरैभीमकृतप्रीत ॥ नरकोवच्चवोभूमिकौ भारनहारनदोउरीत ॥ ६३ ॥ कट तसैन्यदोउसरबरी तीनजामगइबीत ॥ हटतनकौउपरसपर सकतनकौऊजीत ॥ ६४ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ पहर निसरहीफिरकह्यौपाथ ॥ सयनअबकरहु कछुउभयसाथ ॥ यहसुनतसबनदीनीअसीस ॥ विजयतबहोहुनरविसाबीस ॥ सबहयगजरथपरसयनसेन ॥ निद्रागतकीनींमिलतनैन ॥ पुनिवजेवीरवादित्रप्रात ॥ लरतेअरुमरतेनृपपललखात ॥ प्रथममदिनपांचपांचालपुत्र ॥ जमपुरहिपठायेद्रोनजत्र ॥ सोइक्षोभलियैनृपजिज्ञसेन ॥ द्रोनतैंभिस्यौदुषकृदृदेन ॥ द्रुपदकेद्रोनकेलगेबान ॥ परबसहिविथातुरभयेप्रान ॥ जिहिसमयजस्यौद्विजकोपज्वाल ॥ कियरुद्ररूपमनुप्रलयकाल ॥ द्रुपदकौकाटिसिरभूमिडारि ॥ चौपाटपतीपुनिलियौमारि ॥ वहसमयधृष्टद्युम्नसुअभीत ॥ पैंसटहजाररथजुतप्रतीत ॥ बदलौपितुलैवेकाजवीर ॥ आयोसुभिस्यौद्विजतैंअधीर ॥ जूटेदोउसेनापतीजुद्ध ॥ कियेसत्रुनासद्विजसहितक्रुद्ध ॥ हतद्रोनरथीपैंसटहजार ॥ बचायोसत्रुकारनबिचार ॥ करिविरथआपकोहतकजानि ॥ मोष्योस्कधृष्टद्युम्नहिपिछानि ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ धृष्टकेतुशिशुपालसुत मगधपतीसहदेव ॥ भिरेबहुरिरिनभूमिमे मास्योद्रोनअजेय ॥ ६५ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ दिनद्वैनिसएकजुरीनहिद्रोनकी संधिउपासनअंजुलिका ॥ बहुवीरनपांडुनकेबरवेउतरीकेउअच्छरआ

बलिका ॥ वरमालकेकारनहेरतही फिरतेपरेपायनमैंफलिका ॥ सुरराजकेबागसुनंदनमें कहांपुष्पजहांनमिलेकलिका ॥ ६६॥ सोमकसंजयनाकपिजे परत्रासरवगेंद्र सीमाननताकी ॥ सांधतछोरतसत्रुप्रहारतेंचीन्हपरेनहिशस्त्रचलाकी ॥ चारकह्योसनिसाइकमैंविरलेतहांबीरबचेफिरवाकी ॥ सातअक्षोहनीपांडवसैन्यकोएकहिद्रोणडकारगोडाकी ॥ ६७॥ ॥ कबित्त॥ ॥ जैद्रथकीरक्षाकाजदाढोभयोजबहीतेएतेबीरमारेगिनेपावैकविपारको ॥ द्वादसपहरबीचभईषटसंध्यातामैनाहीबन्योकर्मकछुद्विजकेविचारको ॥ केतोदेवतरपनमेंकेतोपितृतर्पनमेंअर्पनकियेज्यूंसत्रुकरिहैउदारको ॥ तीनअक्षौहिनीकोसंधारकियेएकादशीद्वादशीमेंपारनाभोपेंसटहजारको ॥ ६८॥ ॥ सवैया॥ ॥ सलभानसमाजजेद्रोनकेबानप्रयानतेभाननभानपरे॥ कितनेअसमानसमान कितेकबखाननपाननपांवटरे ॥ कटप्रानकितेसुरथानचलेसुविमाननबैठिकेबादडुरे ॥ तितग्यारसप्रानतेंद्वादसीसांझलौंरातिप्रभानिनजानिपरे॥ ६९॥ दोहा॥ ॥ रिखनकह्योमिलिद्रोनतें करहुसस्त्रअबत्याग ॥ यहअपनोनहिधर्महै करिहरितेंअनुराग ॥ ७०॥ कह्योकृष्णस्रुतधर्मतें ताहीसमायसिखाय ॥ हत्योअश्वत्थामाइति द्रोनहिकहहुसुनाय ॥ ७१॥ दूरद्रोनतेंकोसइक लरतहुतोनिजपूत ॥ प्रेर्योनृपकूंतिहसमय जयकारनहरिधूत॥ ७२॥ ॥ जुधिष्ठिर॥ ॥ बोल्योझूठनआजलूं सहजहिमेंजदुराय॥ केसोबोलूंपूज्यद्विज द्रोनबधकेकाज ॥ ७३॥ ॥ श्रीकृष्णवा ॥ ॥ छंदपधरी॥ ॥ छलबलतेंकीजेशत्रुनास ॥ यहकहतराजनीतिहिप्रकास ॥ निजसैन्यहिरदअश्वत्थामनास ॥ वृकोदरहत्योसुनिकृष्णकाम ॥ सबहिनिमिलिप्रेर्योधर्म

राज ॥ वह करयौ वचन द्विजतैं अकाज ॥ वधपुत्र अप्रिय अति सुने बोल ॥ तजि सस्त्र भूमि आसन अडोल ॥ करि दियो स्वास अकुटी चढाय ॥ वह समय द्रुपदसुत निकट आय ॥ छेद्यो सुरवङ्ग लै द्रोनसीस ॥ दोउ सैन्य कह्यौ धिक धिक अनीस ॥ ७३ ॥

॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कपटवाद सुत धर्मके सुनकर प्राणायाम ॥ धृष्टद्युम्न कौं निमत दै गयो वीर सुरधाम ॥ ७४ ॥ सहसराजस्तत गज अयुत तीन सहस रथ वृंद ॥ भये पयादे दोन कर चवदालारव निकंद ॥ ७५ ॥

॥ कबित्त ॥ ॥ द्रोन कांपतन देखि सैन्य दुर्योधन की अष्टविध सात्विक को सेवन करत है ॥ पावन पयादे भगे बाहन विकल देखि केते सूर धीरन के आयुध गिरत हैं ॥ केउ भरे कुंजर के प्यंजर प्रवेस करे ते उपल वारन के मुखतें मरत हैं ॥ अपजस अजैसो कभयके भयंकर से दुस्तर समुद्र चारु सह जे तरत हैं ॥ ७६ ॥ उमरतो बरष पंचासी बीच महाबाहु औरको जवान हू की उपमा धरै नहीं ॥ विचरत रह्यो जालौं उभय संग्राम बिषें शंभु की बलैं न जाके सस्त्र हू नहटै नहीं ॥ मारे द्रोन कहां-द्रोन इहै द्रोन हतो द्रोन ऐसो हि बकत रोग मानसी कटै नहीं ॥ आंखिन तैं ह्रदे हु ते पांडु सैन्य वीरन के द्रोन तो मिटो पै चित्र द्रोन को मिटै नहीं ॥ ७७ ॥ प्रकट पिताको परलोक पेखि पानन में पैने बान पकरि पिनाकी सो लखा परो ॥ नारायन अस्त्र निरमुक्त कीनो सत्रुनास अर्जुन तैं आदि नाहि और तें सिखा परो ॥ पायन पयादे पुंज सस्त्र के धरे परोक्ष पारथ लौं पांडु सैन्य पी रखन्न षा परो ॥ दीह भट द्रोनी दल दोवन के बीच दूट द्रोन तो परो पै दस द्रोन सो दिखा परो ॥ ७८

॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कृष्ण कह्यौ यह अस्त्र को और न सांति उपाय ॥ तजि बाहन सब रथ तजि परिये मन क्रम पाय ॥ ७९

॥ ॥ सवैया ॥ ॥ द्रोनके पुत्र के अस्त्र के तेज तें त्यागि-

मरोरकैंगैरमजे ॥ वाहनसस्त्रतेदूरधरेसबकृष्णकीसीखन बेरसजें ॥ भारतजैंअहिंसूरउदैंनहिमातपृथापयपानलजें॥ नीमपयारलूंपावअचालकूंक्षत्रत्वसीमकोंभीमतजें ॥९०॥ ॥ दोहा॥ ॥भयोसस्त्रमयअग्निमय भीमसेनपरव्यूह॥कृष्णविजयसबसस्त्रतिह छिनहीमिट्योसमूह॥९१॥ व्रथाभयो सुतद्रोनको वहनारायनअस्त्र॥विकलभईतवसैन्यनृप गहे पांडवनसस्त्र॥९२॥ ॥कबित्त॥ ॥ मैंहुकह्योंताहिस मयसकुनीदुसासनतेंमानीनावसीठीलबैंकहाहियसूनोहो ॥ पांचघोसनिसाएकशत्रुकेंमिटाईमिटयोसोतोद्विजराजदेखोसबही तेजूनोहो॥ताहिविनकुरुसैन्यभ्यासतअलूनोअबमामाभाग नेयबीजबोनहारदूनोहो ॥ गांजिवकीभारबीचवक्यानअंगभूनो होजूद्रोनबोयलूनेंजैसेवयूनबोयलूनोहो॥९३॥ ॥धृतराष्ट्र॰॥ ॥सवैया॥ ॥भीमभहाभुजदीपप्रकासमेंमोसुतसंधपतंगज्यूंनासत॥बाडवकोपबेलाल्चीवेस्यजूंनावप्रवेसने-कन्नत्रासत ॥भीमभुजानकेवीचसदाजमराजकोराजसमाजप्रकासत ॥संजयमोंसुतकुंजकोव्यारवयारतुषारज्यूंभीमविनासन॥९४॥ बिचदीपकजोतपतगगिरेकोउनासक्हेकोउडिजावतहैं ॥जमराजकेलोकगयेकुजियेतिनकीजगबातसुनावतहैं॥ वडवानलबीचपडेकुबचेकरतूतमुकुंददिखावतहै ॥सुनिसंजयमोंसुतकालअसोभरभीमतेकोउनआवतहै॥९५॥ ॥कवित्त॥ ॥ ॥जलहूतेंआगवडवागहूतेजैसेजलकेसरीतेंजैसीविधकुंजरनिबलहें॥बाजतेंकपोतजैसेतारखतेंउरगतेसेपोनसेप्रचंडगोनअभ्रजूंबिचलहें ॥इंदुहूतेंइंदीवररुद्रतेंत्रिपुरक्षुद्रइंद्रहुतेंदैत्येंद्रजाविधिविकलहैं॥पाछलेसत्रुजैसेसंजयसबमेरेपूतप्रथमकेसत्रुजैसेमारुतप्रबलहैं॥९६॥ ॥सवैया॥

कोपछिपीवडवानलआहितिमंगलग्राह्मदाधनुधारी ॥ चान
महाउरगादिकहैउरमीसुमनोरथव्योमविहारी ॥ नावकोदाबक-
छुनलगेद्विजद्रोनसीकर्नसीफारपछारी ॥ सोसुतनैकनपैंरिसकेभु
जभीमभयंकरसागरभारी ॥ ८७ ॥ रनमेंभिरकेहिरंवासुरसोरुब
कासुरसोनविछूटहिगो ॥ फिरकीचकसोरुजरासंधसोकुलदोव
नकौसिरकूटहिगो ॥ जगमेंनहिंसत्रुबच्योजिनतेतिनतेसुतजी
वनतूटहिगो ॥ भिरभीममहाभुजपाहनपायसुयोधनसोघट
फूटहिगो ॥ ८८ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ गांडीवधनुषजहांअरव
यनिरवंगदोयवन्हिदत्तवाहनयहमारुतकेमीतहैं ॥ सारथीहैकृष्ण
भीमसातकीसिखंडिओरधृष्टद्युम्नआदिवीरजगतेअजीतहैं ॥
देवद्विजदीनअधसेवानृपसावधानबेदकुललोककीमजादवीच
प्रीतहैं ॥ रविकोउदयकोज्यूंनिश्चयप्रतीतजेसेयुधिष्ठिरविजैहु
कीविजयेप्रतीतहैं ॥ ८९ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ होबलवंडज
रासंधीसोतिनतेंगयेभूपनकेगनकेदटओरकीकाजगदी-
सभगेसोईभीमपछारिकेमारिलियोऊट ॥ जीतिसुरेससहा
ईसुरेसकीकीनीकपिध्वजलोककहैरट ॥ कोतिनजीतसके-
सुनिसंजयहैजहांभीमधनंजयसेभट ॥ ९० ॥ ॥ कबित्त ॥
॥ ॥ कीरतननारदसो १ सोनकसौसुनिबोहै २ पूजनप्रथू
सो ३ पदसेवरमारानीसो ४ ॥ दासत्वहनूसो ५ सदाबं
दनअक्रूरजेसो ६ आत्मानिवेदबलिदैत्यराज्यदानीसो ७
॥ सखापनउधवसो ८ समरनसेसकोसोमनूसीतपस्या
ज्ञानदत्तात्रेयज्ञानीसो ॥ नारायनजुक्तनरऐसोताको
जीत्योचहैक्हैहैकोनमूढमेरेपूतअभिमानीसो ॥ ९१ ॥ ॥
॥ संजय० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ सेनापतिसुतद्रोनको चाह
तहोतवपुत्र ॥ करनछतेद्रोनीकह्यो यहउचितनहिअत्र

॥९२॥ करनहिसेनापतिकियो सोपिअक्षोहिनीपंच ॥ तीनरहीसतधर्मके तेउनहिरहिहैरंच ॥९३॥ लेआज्ञाकुरुक्षेत्रप्रति चल्योसूतसिरनाई ॥ फिरजैसोजुधदेखहु तैसोकहिहुंआई ॥ ॥९४॥ ॥ इतिश्रीपांडवयशेंदुचंद्रिकाद्रोनपर्वणिद्वादसमयूखः॥१२॥ ॥श्रीगोपालकृष्णार्पणमस्तु॥ ॥श्रीरस्तु॥

अथकर्नपर्वपूर्वार्धप्रारंभः.

श्रीगणेशायनमः॥ ॥अथकर्नपर्वसूचि॥ ॥दोहा॥ ॥ ॥वैशंपायन०॥ ॥ लखिद्वैदिनकोजुद्धपुनि संजय

परमसयान ॥ कहिनृपतैंतवपुत्रको कारचौकर्नतनत्रान ॥ १ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ भीमबडवाब्धिजाकोनेकहुनकीनोभयसातिकीतिमंगलकोत्रासहुनमान्यौराज ॥ नकुलसहदेवधृष्टद्युम्नसिखंडीजेसेमहाबलग्राहनकोचिंत्यौनाकछुइलाज ॥ किरीटीकेकोपवायुचंडखंडखंडकीनी गांजीवलहरन्चलीलोपिकैप्रमानपाज ॥ जातैंनृपचाहततहोआवहसमुद्रपारसुयोधनवारकर्न नवकाडुवानीआज ॥ २ ॥ पंकजुत्तभयोधूतक्रिडातैयुधिष्ठिरकेयसकोसरोवरसोनिकैकेनिषरिगो ॥ पोनपुत्रकोपकोप्रचंडपोनगोनतातैंचौकरीचंडालमेघमंडलविखरिगो ॥ पानकियेदिरिवश्रोनभीमकोदुसासनको महलतिकोटूटिभूसिखरिगो ॥ कर्ननदीगांजीवकीफेटतैंसुयोधनकेविजयमनोरथवृच्छमूलहिउखरिगो ॥ ३ ॥ मेरुकोचलन इंदुरथकोपतन भूमिउदय प्रभाकरको प्रतीचीमेंकहेंकाहि ॥ सिंधुकोसोसोखणअदाहतेजअगनीको फटिवोभूगोलकोसोसंजयविचारोजाहि ॥ च्यारूंपांडुपुत्रादिसाजीतिकोंजितेंयायेकन्यायतेंकोग्राहवमेंदेवदेत्यजीतेताहि ॥ कोउनिरसंसेएतिबातैंसुनिमानैंजोपैतोउनिरसंसेमेरेकर्नकोपतननाहिं ॥ ४ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ मारुतिकोविषदीनोजबेदससाहस्रदंतिनकोअसुलायो ॥ जारतहोसोजरचौपरधानउतैंनृपद्रोपदतैंबलपायो ॥ आपनकाजगयोद्विजराजसोआसिषदेहमहीतैंरुसायो ॥ अंधकहेंमभपूलहेंअंधतेजीतकेकोजूधव्यूंतवनायो ॥ ५ ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ करनमरनसुनिकानुहियनफटतकहावज्रहे ॥ कितसुतविजयविधान प्रानहानिजानीपरी ॥ ६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ करचोजुधकेसेकरन मरचोकर्नकिमतात ॥ डरचौमोरचितपुत्रहित कहहुजथारथवात ॥ ७ ॥ ॥ संजय० ॥ ॥

मच्छव्यूहकीनीकरन धृष्टद्युम्नशशिअआध ॥ भिरीपरसप
रसैन्यदोउ होनलगेनृपबाध ॥८॥ ॥कबित्त॥ ॥भी
मद्रोनीदोबनकेयुधकोसमाजभयोलागेनरदेवधराव्योमबीच-
ध्यानसे ॥दोवनकेकेसस्वदोऊयहैऔरऔरदोवनकेटूटेध्वज-
मानअप्रमानसे ॥दोवनकेकवचकटेहै फटेवस्त्रजैसेदोवनके-
अंगहैफलासकबीनपानसे ॥ दोउनकेबानलगेदोउनकेआनिभ
गेदोंचनकेज्ञानटगेदोवनकेप्रानसे॥९॥ ॥ छंदपधरी ॥
॥ ॥यहरीतिभयोमिलिद्वद्वजुध ॥कुरुपांडवजूठतसहित
क्रुध ॥कुलविरदनामनिजसन्नुवंस ॥ परसपरसुभटबोलतप्रसं
स ॥नृपतीरमंत्रकोयहविलास॥निजवंसहोतदोउऔरनास ॥
पांडवीसैन्यबिचगतीपाय॥हजारनकरनदिसेमिटाय ॥दरस
भिरेभीमतेंतोरपुत्र ॥जमलोकगयेदिनप्रथमजत्र ॥लखिप्रल
यरूपनिजदलबिदार॥करनप्रतिनकुलबोल्योहकार ॥धर्मिआ
जदिवसरिनबीचधूत ॥सबकलहमूलतूंमिल्योसूत ॥ तैंबये
बीजकुरुकुलअन्याय ॥दैहुंसजमनीपुरपटाय ॥जोअबहिभा
गिजैहैननीच॥ मिलिहैनकुटुंबसीरचढीमीच ॥द्रुपदाकेकढि
हैबचनसाल॥सुखसयनकरहिधरमजभुवाल॥ यहसुनतक
रनबोल्योअभीत ॥नाहिंबहुतबोलिवोसुभटरीत ॥ पौरसहि
दिखावतकरसंग्राम ॥ ऐसेनसुभटबोलतअकाम ॥यूंक
हतचलेमार्गणअपार ॥थतउतहिभयोबाणांधकार ॥ सरभर
दोयघटिकाभयोजुद्ध॥ कर्नकोभयोपुनिविसमक्रुद्ध ॥ नकुलके
प्रथमचहुअस्वमारि ॥सारथीएकबानहिसंहारि ॥ धनुषनि-
षंगपुनिध्वजादंड ॥ हतिबानकियेसबखंडखंड॥ लेखड्गचर्म
पुनिसमुखदोरि ॥तेउबानमारिदियेकरनतोरि ॥मारयोन
प्रथावायकसभारि ॥कटुबचनकहैगरधनुषडारि ॥ ऐसीन-

कहहुमुरवकबहुबात ॥ समभटहिनिमंत्रएाकरहुतात ॥ अनुजरथभयोआरूढआप ॥ विनुरदकरंडगतयथासाप ॥ धनिधनिनृपमानतहुंसधीर ॥ अयगतेपतीकेअनुगवीर ॥ ज्यूंज्यूंसमसमकमरतजात ॥ त्यूंनरतेंभिरतनमुरततात ॥ अर्जुनतवसेनासांऊवेर ॥ आतिकरीविकलनृपघेरिघेरि ॥ भोकरनथकितथिरटेरिटेरि ॥ सबभगतकपिध्वजहेरिहेरि ॥ कटिपरेवीरकेउसमरघोर ॥ अवहारभयोदोउसेन्यओर ॥ ११ ॥ ॥ ॥दोहा॥ ॥कह्योतोरसकतकरनप्रति डेरनहृदयविचार ॥ मानतहोतवभुजनपर सरबजुद्धकोभार ॥ १२ ॥ सोइतवदेरवतसेन्यमम करीकिरीटीत्रास ॥ जीवेकोजयकोवहुर रारवहुकसविसवास ॥ १३ ॥ ॥कर्न० ॥ ॥रथहयसूतनिरवंगधनु मेरसममेरेनांहि ॥ तिहिसमानजुधकरततोउ कहतन्यूनममकाहि ॥ १४ ॥ सल्यकरममसारथी लेहुविजयधनुहाथ ॥ रारवहुढिगवाननसकट कहाविचारोपाथ ॥ १५ ॥ परसरामदत्तविजयधनु बहुदिनपूजतवान ॥ अर्जुनहितरारवेउभय ग्रहिहूंवज्रसमान ॥ १६ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥तवपुत्रमद्रभूपतिबुलाय ॥ सबकह्योकर्नवांछितसुनाय ॥ ममविजयतोरआधीनआज ॥ हांकियेकर्नरथमोरकाज ॥ तुमअस्वकुसलकृष्णहिप्रमाए ॥ हैकर्नरथीअर्जुनसमानं ॥ कर्नधनुविजयपुनिपूज्यबान ॥ तुमजुक्तहराहिकपिकेतुप्रान ॥ कपिकेतुविनाभीमादिओर ॥ ततकालपठेहुपित्रठोर ॥ तजिभागनेयममकियसहाय ॥ यहपूर्नसुजसतोहिमिलहिआय ॥ १७ ॥ ॥संजय० ॥ ॥दोहा ॥ ॥ गयोयुधिष्ठिरतेंमिलन सल्यप्रथमवेराट ॥ मातुलतेंज्याच्योनृपत समऊभविस्यतघाट ॥ १८ ॥ तुम्हेंसुयोधनजाचहे करनसारथीकाज

॥अकरनहुकरियोअवसि मेरेहितमहाराज॥१९॥ करनस्तुतिकेअधिकबल निंद्यातेंबलछीन॥ द्वैसारथीनिंद्याकरहु होहिदुष्टमदहीन॥२०॥ तथाअस्तुबोल्यौतोउ नरथ्यौसल्यतिहिकाल॥ करनआनरखंडनकरन कहेवचनाजिनुसाल॥ ॥२१॥ सूतपुत्रकोसारथी करतनृपतकूंआज॥ मेंभगनासुतआयुग्रह भलेतजेतवकाज॥२२॥ ऐसेकहिनृपउठिचल्यो करहुंजुध्दइकंत॥कौनरहैतबढिगजहां सरभरसंतअसंत॥ ॥२३॥ कर्नगिनतहीपराक्रमी औरक्षत्रिकानाहिं॥ देवादिककीसेन्यकूं मैरोकूंरनमांहि॥२४॥ फैटपकरिबैठायढिग विनतीकरीबहोर॥ मानतहूंश्रीकृष्णतें अधिकपराक्रमतोर॥२५॥ आहिकरनपैंअेकअब अर्जुनहंतकबान॥ तातेंचाहतहूंनृपति सारथितोरसमान॥२६॥ करिसाथितारुद्रकी विधित्रिपुरासुवार॥नररथप्रेरककृष्णलखि यहेप्रतक्षव्यूहार॥२७॥ ॥संजय॰॥ ॥कह्योकृष्णतें अधिकमुहि भयोप्रअगुनग्राम॥हरिहूतोरविषादनृप करिहूंनीचहुकाम॥२८॥ करैकोलजोसूतसुत सहैवचनममसूल॥ कटुवीअर्धविभागको भोक्तामेंअनुकूल॥२९॥ ॥ ॥कर्न॰॥ ॥रथीसाथिकूंहोतहै स्करवदुरवभोगसमान॥उभयपरसपरबनतहि कष्टपरेतनआन॥३०॥ तातेंहितकिअहितकी कहिहेमद्रनरेस॥ मैसहिहोरनभूमिमें करिहोक्रोधनलेस॥३१॥ ॥छंदपधरी॥ ॥ भयोप्रातदुंदुभीवजेघोर॥ कहिव्यूहसेन्यचाढिउभयओर॥ रथएककरनअरुमद्रराज॥ गिरएकजधारविहवनभाज॥ तहांभयेसकुनविपरीतरूप॥ भयत्रासितभईतवसेन्यभूप॥ गिरिपरयोकरनकोध्वजादंड॥ पुनिकियोसकु

शुठाडोप्रचंड ॥ उलकानिपात भोंचारओर ॥ धरधूजि मिटयोरविप्रभाजोर ॥ तितकह्यो करननृपसुनकुमद्र ॥ रविव्येबलरवाचत्तसहितछिद्र ॥ उतजरीसमुरव दोउसैन्यआय ॥ सबनप्रतिकरनबोलतसुनाय ॥ ३२ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ ॥ देकुअस्वकरीआजकिरीटीदिखावैताहिदेहुवाअमोलवस्त्रभूषनअपारमें ॥ देहुसातपांचत्रियासमादेसमागधकीयेहुनाचहैतोऔरदेवेकूंउदारमें ॥ देहूंनिजदारापुत्रओरमनवांछितजेकपिध्वजादेखतहीकहुंनिरधारमें ॥ पांडवकोविभोऔरवासुदेवहुकोविभोविस्वमेंविख्यातकर्नठाढोदेनहारमें ॥ ३३ ॥ ॥ सल्य० ॥ ॥ गरुडकीसमताकोंमच्छुरउडानउडेतिमंगलसमताकूंकिंगाबह्याजातहे ॥ केहरकीसमताकूंजंबूककरतजोररविकीसमानताखद्योतकपैपातहे ॥ शेषकीसमानताज्यूंडिंडमकियोहीचहेहंसकीसमानताकूंकाकअकुलातहे ॥ सल्यकहेकुंजरकीसमताचहेज्यूंचीटीअर्जुनकीसमतातूंकरनदिखातहे ॥ ३४ ॥ कहांसाचकूटकहांकाचकहांहीरकनीकहांराइमेरुकहांमहीव्योमथानहे ॥ कहांनिसाद्योसकहांदीपकहांराकाचंद्रकहांक्षीरसिंधुकहांकूपकोप्रमानहे ॥ कहांदेवतरुकहांविकलबंबूलवृछकहांहेकथीरकहांकंचनकीखानीहे ॥ अचलताधूकीकहांकहांपानपीएसको कहांकर्नअर्जुनकीसीलतासमानहे ॥ ३५ ॥ एकस्यामकाजदूजेसारथीबन्योतूंभूपतिजेवंध्योकोलसूनमारोतीनव्यंगतें ॥ कर्नकहेसल्यमरुत्रियातेंहेजन्मजाकोचित्रकहाऐसोकटुबोलेसोउमंगतें ॥ मांसमदाहारिणीउचारिणीतेकामगीलधारिणीकुसंगअंगव्याकुलअनंगतें ॥ पतिकोंतजेविसारिपूतकोंतजेनिकारजारिकूंतजे

नन्यारीप्यारकेप्रसंगतें ॥३६॥ प्राकृतधनुषमरैगांजीवधनु-
अनासमरैबाणषीणवाकेअक्षयनिषंगहैं ॥ वाकेकृष्णसा
रथीसदैवअनुकूलमती मेरे प्रतिकूल तेरेसो सारथी कुसंग
है ॥ मोकूआपदोयगुरुरिषीकेमहानहानवाको वरदानरु
द्रइंद्रकोअभंगहैं ॥ अस्त्ररथबेसेनांवरोबरी करूंहूंजुधऐसो
क्यूंनबोलेतोकोंकोटिकोटिरंगहैं ॥ ३७ ॥ ॥सल्य० ॥
॥ ॥श्लोक॥ ॥ग्राहपत्रीशसिंहैश्च कव्योमवनचारि-
भिः ॥द्वेषंकृत्वाकगंतासि बकत्वंस्वास्थ्यमिच्छया ॥ ३८ ॥
॥ ॥दोहा॥ ॥ग्राहखगेंद्रमृगेंद्रतें जलनभवनचारीन
॥बककितजेहैंबैरकरि चहेथिरवासप्रवीन ॥ ३९ ॥ ॥
॥ ॥श्लोक॥ ॥गिरिसानुपादपाग्रेत्वंतिष्ठस्युपदेस्त
कृत् ॥प्रमत्तःसंभवानत्रउच्छ्रितान्मापतिष्यसि ॥ ४० ॥
॥ ॥दोहा॥ ॥चढेअग्रगिरसिखरतरु अन्यबचावन-
काज ॥सावधानमतिआपहु गिरजाबहुमहाराज ॥ ४१ ॥
॥ ॥श्लोक॥ ॥ भ्रष्टाचारःसारमेयो राज्ञासत्कृतवा
नथ ॥दुर्दरेणैवसिंहेन समतांगतुमिच्छति ॥ ४२॥ ॥
दोहा ॥ ॥भूपतितेसतकारलहि श्वनीपुत्रहठरूढ ॥
करीप्रहारकस्यहतें समताचाहतमूढ ॥ ४३॥ सूतपुत्रसं
ध्यासमय घूरवहुकरतगलार ॥ अर्जुनरविव्हैहैंउदय जो
हैंतेजतुम्हार ॥ ४४॥ ॥कबित्त॥ ॥ आदिआपभ
योमोकूगुरुजामदग्न्यजूको दूजेद्विजआपरथआश्रयध-
रनके ॥ तीजेसक्तिवासवीनिसाकेजुधमोघभईसुनेसमा
रहेंडंबेधकेलरनके ॥ राधापुत्रकहेमद्रदेससूढदेखिहैतूं
ढापिहैंअकासबानकंचनपरनके ॥स्त्रद्रहूकेसर्ननरमरनव
चातोकैसेहोतेजोनहर्नआनकुंडलकर्नके ॥ ४५॥ ॥

॥ ॥संजय०॥ ॥दोहा॥ ॥समससकेसाथ कूं कोटिकोटिहैरंग॥लीनोतहांफटायके अर्जुनसमर अभंग॥४६॥नरकोआवाहनकियो सुसरमाजुद्धसाज ॥जापीछेजूटतभये कुरुपांडवजयकाज॥४७॥इतेकर्न रक्षकउते भीमसेनरनधीर॥कटतमिटतनाहिनहटत उ भयसैन्यबरबीर॥४८॥ ॥छं०मोतिदास॥ ॥भट क्कतक्रोधजुरेतिहकाल॥अटक्कतएकनएकअचाल॥चट क्कतबोलतवानकमान॥हटक्कतअस्त्रनअस्त्रसमान॥ रटक्कतमानहुस्यंहवराह॥कटक्कतआयुधदंतसनाह॥ पटक्कतजासिरधायप्रहार॥लटकतसोतनुज्ञानविसारि ॥अटकतनाहिनअंगप्रहार॥सटक्कतबोलकढेतनपार॥ ठठक्कतकायरकेकहिहाय॥छटक्कतसस्त्रनहाथरहाय॥ बटक्कतस्वापदआदिअनेक॥गटक्कतकंकरुगिद्धकितेक॥म टक्कतभैरवबीरअपार॥ऊटक्कतलेउठायअहार॥सरक्क तनाहिनमीचविहाय॥ढरक्कतमंचनतेंसिरकाय॥षर- क्कतत्रानरूम्यानअनेक॥फरक्कतबानवरमनछेक॥कर क्कतमानहूंबीजअकास॥धरक्कतनेकनदेखविनास॥भ रक्कतवाहनभाजतदूर॥फरक्कतहेध्वजदंडसमूर॥मुरक्क तआवतआहवबीच॥बरष्यतवानमचावतकीच॥करष्यतको दंडकानप्रमान॥जरक्कतत्रानलच्चाअरुप्रान॥जितेतित नाचतकेककबंध॥जितेतितफूटततूटतकंध॥जितेतित जोगनिपत्रभरंत॥जितेतितअच्छरवीरवरंत॥जितेजित जूटतसस्त्रविहीन॥जितेतितकुंजरपिंजरनवीन॥जिते तितहोतप्रहारप्रचार॥जितेतितनाहिनमानतहार॥जिते तितखालियमंचलखाय॥जितेतितधायलकेकबकाय॥जि

तेतितओननदीउषकात ॥ जितेतितदेखतवीरवहात ॥ जिते
तितकेसग्रहाग्रहीहोय ॥ जितेतितमल्लजुद्धजूटतदोय ॥-
जितेतितहाथनलातनजुद्ध ॥ जितेतितदांतनघातनक्रुद्ध ॥
हकारतवीरनकौंतिहओर ॥ प्रहारनआयपरेसिरजोर ॥ कहाव
तआपमहारनसूर ॥ नआवतआजबजायकेतूर ॥ नपावतपू
ठरहेभटनाम ॥ नभावतईसहिकोयहकाम ॥ नभावतबोल
तवीरसुवान ॥ नसावतप्राननखोवतमान ॥ सहोतनबान-
नकेसुप्रहार ॥ रहोथितमीचहिकोसिरधार ॥ कहोसुखबोलस
भाविचक्रुद्ध ॥ जुरोनमुरोलखिदारुनजुद्ध ॥ ४९ ॥ ॥ दोहा ॥
॥ ॥ कस्यौविरथसुतधर्मकी बानविकलकरिअंग ॥ कहेक
रनदुरबचनअति हत्योननियमप्रसंग ॥ ५० ॥ ॥ कर्न० ॥
॥ ॥ आपनिपुनरिखधर्ममें क्षत्रधर्मअतिक्रूर ॥ अग्निहो
असंध्याकरहु लखहुजुद्धरहिदूर ॥ ५१ ॥ बाननतेंदुरबचन
तें भयोदुषितस्रुतधर्म ॥ गयोशिवरबिचद्रुपदजा सपरस
तेंभोसर्म ॥ ५२ ॥ हतित्रिगर्तकीसैन्यकू कृष्णसहित कौंतेय
॥ भीमकरनतेंभिररह्यो आयोतहांअजेय ॥ ५३ ॥ ॥
छंदपधरी ॥ ॥ तितपस्योदुसासनभीमद्रष्ट ॥ त्रियादुषस
मरिभोसोकनष्ट ॥ ध्वजकाटिप्रथमपुनिधनुषछेदि ॥ रथच
तुरअश्वहतिवर्मभेदि ॥ पुनिकेसजूटग्रहिमहिपचारि ॥ कर
नादिलखततवपुत्रमारि ॥ उरफारिकस्यौरत्तउष्णपान ॥ बिक
रालरूपराकसविधान ॥ ॥ श्रीकृष्ण० ॥ ॥ विधिजु
असंभवकहतसोय ॥ पीवोरत्तबांधवक्रूरहोय ॥ ॥ भीम०
॥ ॥ मांसादिभरप्रतलगेअस्तघात ॥ निजतारुरुधिरस
बनिगलिजात ॥ निजरक्तभ्रातरतकहाभेद ॥ यातेंनकृष्णक
छुकरहुखेद ॥ पुनिउभयसैन्यप्रतिबदतिबैन ॥ जुतकृष्णसु

नहुयूंभीमसेन ॥५४॥ ॥कबित्त॥ ॥द्रौपदीके
ऐंचेकेसतादिनाउठिविसालज्वालकीकरालमालरोमरोमदा
ग्योहै ॥ भीमसेनकहैनाथसुनियेहमारीबातआजलौंभयो
नचैनमहाक्रोधजाग्योहै ॥ दुसासनमारियाकूंपुहमीपछारि
फारिवक्षस्थलरक्तपीयोतातेंदुषभाग्योहै ॥ दुष्टनकेलोहुको
कहोगेकोइस्वादकेसोनागलोकसुधापियोतातेंज्यादालाग्यो
है ॥ ५५ ॥ उषकोपीयुषकोनचंदकीमयूषकोत्यूंचाह्योभषभू
षकोनचाइतहोजिनकूं ॥ पृथामातदुग्धहुतेंजादासत्रुश्रोनपा
नश्रोरकाबताऊस्वादयादमोरमनकूं ॥ करनादिकवीरकूंबका
रकह्योरक्षाकीजेरुधिरनिकारपियोपूरनपरकनकूं ॥ भागयो
द्रौपदीतेउरनअवारभयोकह्योयूंपुकारकेडकारदुसासनकूं ॥
॥५७॥ ॥दोहा॥ ॥श्रोनपियतरनसत्रुको दरसतभीमअ
नूप ॥ कहिराक्षससत्रवढकत लख्योनजाइस्वरूप ॥ ५८
॥ दुसासनकेहृदयतें सबेकुटलतासोधि ॥ वायुतनयकुटि
लनकूं मनकुदिरवावतबोध ॥५९॥ भिरेचतुरदसपुत्रतब
अग्रजवधलखिओर ॥ भीमगदातेंछिनकमें गयेदुसासन
ठोर ॥६०॥ ॥ इतिश्रीपांडवयशेंदुचंद्रिकाकर्णपर्वणि
त्रयोदशमयूखः ॥१३॥ ॥श्रीगोपालकृष्णार्पणमस्तु॥

॥ शुभंभवतु ॥

॥ श्रीरस्तु ॥

श्रीगणेशायनमः॥ ॥दोहा॥ ॥अर्जुनकेद्रष्टनपस्यो धर्मपुत्रध्वजदंड॥ कह्योभीमतेंसोधकरि कितहैनृपबलवंड॥१॥ ॥भीम०॥ ॥मोअरिभरगलमानिहै तुमहीसोधहुतात॥आयोंडेरनबीचरथ लखिनृपतिइहरखात॥२॥ ॥जुधिष्ठि०॥ ॥कबित्त॥ ॥जाकेडरहीतेंमोकूंतीनदसमंतसरनीकेनिद्राआईनहीताकूंमारिआयोतू॥-जाकेआगेचारदिकपालनकीविजैनाहीताहीसूतपुत्रकोमिटायविजैपायोतूं॥ तीनलोकबिचतीनकालमेंनऐसोकोऊतैसोधनुधारीलोकलोकमेंकहायोतूं॥ युधिष्ठिरकहैधन्यभागहैबधाईआजसारथीसमेतअद्भूतजसलायोतू॥३॥ ॥अर्जुन॥ ॥आपकीध्वजाकोदंडनिजनपस्योनभीमनत्यसत्रुनिंदातेंनिहारिवेकोआयोमें॥ अवलोहैकर्नविधमान-मोरेसोभकानअवीदेखिआयोभीमसेनकोपठायोमें॥आपकूंकुसलदेखिराबरोहुकमपायपायकुविजयमारिकेउविजेपायोमें॥ इंद्रकोजरायोबनरुद्रकोरिझायोऐसेनानायुधजीतिदेवदत्तकूंवजायोमें॥४॥ ॥युधिष्ठिर॥ ॥मथाकेमसूततेरोभयोसातह्योसपीछेभईव्योमबानीयोंअनायनकूंपारिहै॥जीतिहैत्रिलोकअभैकारिहैअमरओकुवातेकोनजीतेंभूमिभारकोउतारिहै॥ देववानीमिथ्याभईतूंनकन्याभईकाहेजुधछोरिआयोसत्रुदेखिकाउचारिहै॥कृष्णादिकऔरकूंतिहारोधनुसोंपिदेहुयहांबैठोदेखिराधापुत्रकोतेमारिहै॥५॥ ॥दोहा॥ ॥यूंसुनिकियोबिकोसिअसि ज्येष्ठबंधुवधकाज॥ कृष्णकहेसत्रुननिकट यहैकोनगतिआज॥६॥ ॥अर्जुन॥ ॥कोउमोकूंसनमुखकहै डारिदेहुधनुबान॥ मेरोनेमअखंडहै सद्यहरोतिहमान॥७॥ कहेआपकेस्क

नतसोइ धर्मपुत्रदुरवाद ॥ जियकोजयकोराज्यको मिथ्यो-
मोरअहलाद ॥ ८ ॥ धर्मराजकूंमारहू रखनप्रतज्ञामोर ॥
फिरमेरोजीवनकहां तजिहौंप्रानबहोर ॥ ९ ॥ ॥ श्रीकृष्ण०
॥ ॥ कहेधर्मदुर्वादतोहि क्रोधबढावनकाज ॥ कोप्योंअर्जु
नकर्नकूं अवसिमारिहैंआज ॥ १० ॥ कहेसमुखदुरवादरे
तूंसंबोधननीच ॥ गुरुजनकोविनुसस्त्रतें बधकहतश्रुतिबी-
च ॥ ११ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ जुधिस्थीयतेतिताकूं कहतयु
धिष्ठिरसोआपयूंपधारेयुधधीरताकहांरही ॥ आपतेंकनिष्ट
क्षत्रधर्मतेंगरिष्टभीमसोकौंजोकहैतोकहीवाहूऐसीनाकही
॥ आपकेअभागखोयोपिताकोविभागकीनीत्यागबंधुच्या-
रुजीतीदिसाच्यारकीमही ॥ रावरीयेभूलहोतवंसनिरमूलकही
आपकीकबूलराखीसूलआजलोंसही ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ यूंक
हिऐच्योंखडगपुनि समझिपिताबधपाप ॥ आपघातकूंकृष्ण
कहे बहुरकरतकहाआप ॥ १२ ॥ भोमोहिअग्रजभ्रातको
बिनासस्त्रबधपाप ॥ कैंसेराखूंदेहकूं आगेप्रेरकआप ॥
॥ १३ ॥ ॥ श्रीकृष्ण० ॥ ॥ आपकरेजसआपको आ
पघातसमसाच ॥ जीवनमृतगनिअपजसी स्वायंभूमनु
बाच ॥ १४ ॥ ॥ अर्जुन० ॥ ॥ छप्पै ॥ ॥ एकधनुष
गांजीवविजयकीयइंद्रसुरासुर ॥ एकधनुषगांजीवप्रगटकि
यअभयअमरपुर ॥ एकधनुषगांजीवकरीदिगविजयहते
उखल ॥ एकधनुषगांजीवदलिउदुरजोधनकोदल ॥ विनुसे
न्यएकगांजीवधनुकेउसत्रुखंडनकरिय ॥ करिकोपसोंपिध
नुओरकूंआपकहाइहउच्चरिय ॥ १५ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ ओ
सुनिदुरवचअनुजके कियेनृपबनदिसगोन ॥ ताकेपदगहि
कृष्णकहि कहिनृपइहयगतिकोन ॥ १६ ॥ ॥ युधि० ॥ ॥

मैंदुरव्यसनी भाग्यहत दुरवदायककुळकेर ॥ यैंनृपहोमैंतप करहु भ्रांतकहतसतिटेर ॥१७॥ ॥श्रीकृष्ण॰॥ ॥ तेरे तेरेबंधुकी मृत्युबचावनआज ॥ रखनप्रतज्ञाविजयकी कियेमोरगनिकाज ॥१८॥ कंठलगावहुअनुजकूं ममजुतआज्ञादेहु ॥ निसकंटकसबभूमिको राजविजयजसलेहु ॥१९॥ धर्मपुत्रकहेंआपसे जिनकेनाथकृपाल ॥ तिनकेबिनछनकमें क्यूंनविधनकेजाल ॥२०॥ मिलेपरसपरहरसरिस ढरतअश्रुदोउभ्रात ॥ कहतजुधिष्ठिर छमहुमम विजयहोहुतवतात ॥२१॥ कहुअर्जुनमेरीछिमहु मातपितागुरुनाथ ॥ ऐसेदुरबचआपकूं अवलूकहेनपाथ ॥२२॥ के दुरजोधनआपकी विजयआसमिटिजाहु ॥ केराधाकुंतातथा पुत्रसोकबिलखाहु ॥२३॥ कैंसुभद्राअहवातअब मिटजैहैततकाल ॥ नथाकर्नकीत्रियनकूं भूषनव्हेंहैसाल ॥२४॥ धारसुदरसनकहतहरि नरतेंमरनैनआज ॥ तोउमेंहतिहूंनयमतजि करनहिकोतवकाज ॥२५॥ यूंकहिरथआरूढभय भयेसकुनसुखमूल ॥ आनिमतउलकापातजे कर्नहिकूंप्रतिकूल ॥२६॥ भीमकहेयासमयजो वीरकपिध्वज होय ॥ मरेदुष्टराधातनय डरेसुयोधनरोय ॥२७॥ मोरजुद्धतेंअमितयह भिरेविगतश्रमपाथ ॥ दुरयोधनकीसैन्यसब अबहीहोयअनाथ ॥२८॥ ॥कबित्त॥ ॥ कहेहे विसोकनामसारथी महारथीतेस्यंदनकीनेमितें भूधूजतधुकातहें ॥ देवदत्तपांचजन्यगांजीवकीघोसहीतेंसैन्यकोरवीकेप्रानपंछीं उडेजातहें ॥ परसनकीयोहेंसत्रुआजलोंमुकुंदअबकर्नप्रानकर्सनसुदर्सनसुहातहें ॥ महामेरुकंदरसीदेरिवध्वजअंदर त्यूंमंदरगिरीसोभीमबंदरदिखातहें ॥२९॥ ॥दोहा॥ ॥

कह्योसारथीतेरथी देहुचतुरदसग्राम ॥ यहैबधाईबीचही ओरगजादिइनाम ॥ ३० ॥ जुरेअर्जुन कर्नजबहि कुटिल-द्रष्टजुतक्रुद्ध ॥ ढांक्योव्योमविमानतें सुरननिहारतजुद्ध ॥३१॥ ॥सल्य०॥ ॥जोव्हैहेकपिकेतुतें करनमरनधि-धिकोय ॥ तोहतिहूंकपिकेतुको मैंसेनापतिहोय ॥ ३२ ॥ ॥ कृष्ण०॥ ॥जोकदाचकरकरनके होयधनंजयपात ॥ करिहुसत्रुअजातिकु सीघ्रहिसत्रुअजात ॥ ३३ ॥ हत्योविजय व्रषसेनकु पितुसमीपकरिक्रोध ॥ करन करनकूं प्रथमही पुत्रसोकबोबोधि ॥ ३४ ॥ ॥ छप्पै ॥ ॥ यतेकृष्ण सारथी उतेमरुदेसनरेश्वर ॥ इतगांजीवटंकारउतें धनुविजय सब्द कर ॥ इतध्वजकपिकीगरज उते गजकक्ष भयंकर ॥ इतउत स्वेतहुअस्वइतेंइंद्रादिसकलसुर ॥ उतभानुआदितमयो-निसब इच्छतविजयविवादरत्त ॥ इनवीचअंसभवजयउभ-य कित्येकलरविऐसेकहत ॥ ३५ ॥ इतअभिमनदुखदुसह उ तेंव्रषसेनदुसहदुख ॥ इतद्रुपदाद्रुखाद उतेंबधबंधुनकी रुख ॥ करिसमरनजुतक्रोधचलेगनबानभयंकर ॥ नभ अच्छादितभयोकटतदोउसैन्यबीरबर ॥ हयमहारथीदोउ सारथीभयेबसंतपळाससम ॥ कहेदेवकिरीटीपुरनधनिक रनधन्यकोऊकहतयम ॥ ३६ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ नाभूतो नाभविष्यती ऐसोअदभुतजुद्ध ॥ यतेंइंद्रसुतवढतज्यूं बढ तभानुसुतक्रुध ॥ ३७ ॥ दूजेंदिनरनकरनको तीजेंदिनस्कतगंग ॥ चोथेदिनहिंजद्रोनको अदभुतजुद्धतिहुंअंग ॥ ३८ ॥ जुरेकरनअरजुनजहां दोनोसैन्यबिहाल ॥ होयजथादोयगज भिरत कदलीकोक्षयकाल ॥ ३९ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ अरि कोसमूह घर घरकोमिल्योहै सैन्यताकेबीचडरकौनलेसजाके

परको ॥ वरकोप्रभावहै किनरकोप्रभावहै किसरकोप्रभावकेप्र भावउभैकरको ॥जेतेअवनीसदीपुपरैतेनदीसपरेबीसबीस पेंडलोविजोगसीसधरको ॥कैसोयाकोव्है सोपोनगोनतैंअनैसो होतऐसोरनजेसोबनतारिनारियरको ॥४०॥ गांजिवको घोस देवदत्तरथनेमिनकीअवेगुदामेंढ्यसुनेचाहनातितेतिते ॥ रविसो उदेसोनरआगमनेतारागनभिरवेकूं सूरबीर भासत कितेकि तै ॥ पानदोनूहाथकोप्रधानयदुनाथकोत्यु भजेकरुसाथतेज पाथकोचितेचिते ॥ ज्ञानभूलिजावेलाभहानिभूलिजावेकेते प्रा न भूलजावेबानलागतजितेजिते ॥ ४१ ॥ कोरवीहमारीसैन्य पांडवी मिटायदेहे कायरकूंमारेनाहिंसूरनपैंकुध्द है ॥ बालकाल हितेदुरजोधनकूचाहेहमवालकालहीतेयाकेपनतेविरूधहै ॥ आगेजेबढेगेपीछेसुजसपढेगेकबिकेतव्हेकटेगेभूमिजूधतें- निरुध्द किरीटीभिरेहै ॥ आंषस्वभ्रकीसीखुलीजातक्रुधदेविरुध्दहै निरुध्दहेनजुध्दहै ॥ ४२ ॥ कमलकेदलहुते कोमलजुगलकरजुध बेरप्रबलकठोरताविचित्रहै ॥ अर्जुनहै एकतथाअर्जुनअनेकजै सेजुरेसत्रुजेतेकूंलखावेंजत्रजत्रहै ॥ भाथनतेंसत्रुनमेंसत्रुनतेभा थनमेंहाथशिशुमारचक्र इषुजूंनषत्रहै ॥ पत्रनकेप्रेरवेतेसव्य अपसव्यदोनोसत्रुपतीपित्रलोकप्रेरवेकेपत्रहै ॥ ४३ ॥ नावनिज सेन्यलाभ भूमिरत्नलैनप्रेरीसत्रुसैन्यसिंधुमेंप्रवेसनेकपायेहै ॥ युधिष्ठिरसाहवासुदेवसेनलाहपाय तिनकीसलाहविघ्नबंद कुमिटायहे ॥ त्रयोदसद्योसबीचतरे सिंधुतीजोभागपांचद्यो- सबीचदोयभागकूंनधायेहे ॥ पुत्रकेमरेतेकोपपोनभोप्रचंडता तेंसव्यअपसव्यवर्धमानसेलखायेहै ॥ ४४ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ करिक्रोधजुरयोरिनसूतपुत्र ॥ असिसैन्यपांडवीजत्रजत्र ॥ करन्नप्रतिलरनहितभिरतकेक ॥ उनकूंनसरनविनमरनएक

॥सरचरनवरनकरछुततसोय॥जुतपरनधरनबिनमगनहोय॥
तरनजुधलखतथिनधरनिओर॥सुतअरनउतैनरभिरनघोर॥रु
चिकरनचपलताअरिनमध्य॥ तवपुत्रविजयमानीप्रसिद्ध ॥
परिकरनवानतेंकरिनत्रास॥चिक्करतभजतकेउहोतनास ॥
खूंभीमसेनतबगजअनेक॥सिशुमारबीचप्रेरेकितेक॥ दुख
हरनसखाजदुपतिदयाल॥केउवारबचायोनरकृपाल॥४५॥
॥ ॥दोहा॥ ॥खांडुजरतअहिबचिगयो निगलिउडीति
हमात॥एकजानिइकबातकी धातभईभइपात ॥ ४६ ॥
॥ ॥कबित्त॥ ॥सोईवैरयादकियेकर्नबानव्यापकभो-
आगेथोअमोघयाकेतेजतेविसेसभो ॥ कर्नविनजानेताकोंकि
योहेसंधानदेखिहाहाकारभूमिअंतरिक्षदेसदेसभो ॥जोखो
कंठदेसकृष्णमचकलगाईअस्वगिरेभूमिबीचनरसीसपैप्रवेस
भो॥गिस्योहेकिरीटीकटिरतनजखोहैताकेविषतेंजस्योहेमे
किरीटीकोनलेसभो॥४७॥ ॥दोहा॥ ॥पुनितूनी
रप्रवेसकरि बोल्योकर्नसंभारि॥संधहुतवममसत्रुपें लेहुप्रा-
नानिकारि॥४८॥कर्नकहेतुमकोनसोइ कहतसर्पमोहिजा
नि॥लेनवेरममातुको आयोसमयपिछानि॥४९॥ ॥
कर्न०॥ ॥कर्नजोरलेओरको जुधनकरैंअहिराज॥कपटबा
नजोरेनहीं सतंअरजुनबधकाज॥५०॥जगबिचप्यारेदार
सुत तिनतेंप्यारेप्रान॥प्राननतेंजसमोहिप्रिय स्वामिहिध
र्मसमान॥५१॥जयजियरक्षाकवचअरु कुंडलजसकेकाज
॥दीयेतहिद्विजरूपधरी जाचतभोसुरराज॥५२॥इहसु
निअहिसररूप करिलेनकपिध्वजप्रान॥चल्योसुहरिउपदे
सतें नरछेद्योषटबान॥५३॥कर्नगुरुद्विजआपतें ब्रह्मअ
स्त्ररथभ्रष्ट॥ उतस्योचक्रनिकारक कृष्णकह्योकरिनिष्ट ॥

॥५४॥ ॥श्लोक॥ ॥निमग्नेरथचक्रेतुकर्णस्यप्रथ-वीपते ॥तंकेचिदागतेकालेतेप्रोचुस्मकिरीटिनं॥१॥माकर्णांत धनुर्मुर्वीकिर्षयंकर्णीनालिकैः ॥कुरुणांकुलकर्त्तासित्वंकर्णः क रुणाकुरु॥५५॥ ॥श्लोकोकीटीका॥ ॥दोहा॥ ॥ कर्णरथांगनिमग्नते भोप्रज्ञाचषभूप ॥ कितनेपुरुषकिरीटि कूं कहतभयेयहरूप॥५६॥मातिधनुजाकर्णांतलों ऐंचहु घोर सबान॥ कर्नविषैकुरुनाकरहु तूंकुरुभूषनभान॥५७॥ब हुकरनअकरनसमजि तजेपार्थधनुबान॥कृष्णकहतहन सत्रुको देखतकहाअज्ञान॥५८॥ ॥कर्न०॥ ॥सुन्यो बेदतेंबडनतें धर्मकष्टतनत्रान॥सोहमसाध्योआजलों जथाशुकसुनिकान॥५९॥धर्मभक्ताधिकधर्मको जेहमछी-जतजात॥पांडवगुरुपितुकपटपथ मारिबढतदिनरात॥ ॥६०॥सरनागतहूविप्रहू इतिवदतनरनमांहि॥ कर्नधनंज यतेंकहत तुमसेहततननाहि॥६१॥ विषरेकचरुविकवच पुनि विधनुविरथअरिचाहि॥बालप्रकृ मुरछतश्रमित तुम सेहततननाहि॥६२॥ मेरेतोतेंकृष्णतें नेकत्रासमतिमान ॥छनकछिमाकरभूमिते चक्रउधारतजानि॥६३॥ ॥ श्रीकृष्ण०॥ ॥विपतपरेपरनीच्चनर बनतधर्मबरजोर ॥धिकधिकनिंदतधर्मकूं कुकरमलखेनकोरि॥६४॥ ॥ छप्पै॥ ॥जदिनधर्मसुधकरिय भीमकोंदियोविषमविष ॥जदिनधर्मसुधकुरिय लाषगृहजारिसुवतलिख॥जदिन धर्मसुधकरिय सुवतरजकूकतरानी॥जदिनधर्मसुधकरि य कपटकरलीरजधानी॥कहकृष्णतहांरुधनाकरिय द्रु पदसुताबनबिचहरिय॥अहोभाग्यबधाईधन्यदिन कर्नध र्मदिससुधकरिय॥६५॥जदिनधर्मसुधकरिय आपकोंवि

प्रपठायो ॥ जदिनधर्मसुधकरिय घोषयात्राचढिआयो ॥
जदिनधर्मसुधकरिय त्यागिरनबिच नृपभजेउ ॥ जदिनधर्म
सुधकरिय गाइघेरतनहिलज्जेउ ॥ कहकृष्णतथासुधना
करिय मिलेबहोतअभिमनमस्यौ ॥ बधाइआजिदिनधन्य
तुम करनधर्मसमरनकस्यौ ॥६७॥ ॥दोहा॥ ॥ कृ
ष्णवचनसुनिपार्थके क्रोधानलकीज्वाल ॥ श्रोननना सान्चषन
तें बढासधूमविसाल ॥६८॥ कोपज्वलितचषविजयतें कीयो
धनुषटंकार ॥ सोॐकारगुरजनसुरवद दुरजनहृदयविदार
॥६९॥ ॥कवित्त॥ ॥ सूरकेआवाहनकोकायरवि
सरजनकोबंधुनकीरक्षाहीकोजत्रतत्रजान्योमें ॥ इंद्रकेउ-
छाहहूकोरवीउरदाहहूकोअच्छरविवाहहूकोकारनपिछा
न्योमें ॥ गांधारीकेआपदाकोप्रथाजूकेसंपदाकोजुधिष्ठिर
विजयप्रतापउरआन्योमें ॥ गांजीवकीप्रतिंच्याटंकारकोअ
मोघघोसयतननेंपदारथकोवीजमंत्रमान्योमें ॥६८॥ ॥प
द्धरी ॥ ॥ वृषवाहहत्योनरएकबान ॥ सोमहावीरअभि
मनसमान ॥पुनिहत्योकरनकोदुतियपुत्र ॥ जुतकुंडलमस्तक
गिस्योजत्र ॥ वृषवाहरुवृषपर्वापछारि ॥पुनिकह्योसुयोधन
तेंपुकारि ॥ तेंकियविरुधयहदुष्टहेत ॥ तिहहततअबहिकिन
राषिलेत ॥ यूंकहिरुकियोगांजीवसंधान ॥ वज्रकेरूपसोइ
रुद्रवान ॥६९॥ ॥दोहा॥ ॥ ऐंचिपनचकर्नासपुनि तें
जवानकर्नांत ॥ मोरव्योसिरहरिकरनको कियोदीपसमसांत
॥७०॥ दुरयोधनकेग्रेहविच ताबिनभयोअंधार ॥ तेजनिं-
कसिरबीचीचभो सबदेरवतसंसार ॥७१॥ देवदत्तअहिज-
क्षगिर सिंधुनदीधरिदेह ॥ आयेजुधलखिचकितभये गये
विजयलखिगेह ॥७२॥ करनमरतभाजिबलडरत गिरतरुक

रतगुहार ॥ दुरजोधनदुखसिंधुकौं तरतनपावतपार ॥ ७३ ॥
॥ ॥सुयोधन०॥ ॥कवित्त॥ ॥क्षत्रिधर्मछोरिकेमहा
रेपिताभीसमकूंवेसहतेद्रोनकूंनईश्वरकोंभावेगी ॥ त्यूंहीभूरिश्र
वाराधापुत्रहुअसावधानमोरेप्रथानंदकीकाकीरत्तरहावेगी ॥
योहीछलहीतैंभीमसेनतेहमारोबधहैभयस्यमृत्युदेहधारीकूतो
आवेगी ॥ कर्नहुकेमर्नहीतेंसबकोंदिखानीमेंहूंमानहानिमा
नियेकहानीतोनजावेगी ॥ ७४॥ ॥संजय०॥ ॥ राम
अवतारहीतेकरिहैविलोमरीतलघुसेसअंसइहांअग्रजकहा-
योहै ॥ वहांअनुकूलरहेसदाएकपत्नीव्रतदछनव्हैइहांविभचा
रपदपायोहै ॥ वहांनित्यपथकूउलंघपांवधस्योनाहियहांऐसी
रीतहीतैंकामकूंबनायोहैं ॥ वहांइंद्रपुत्रकोसंधारिराख्योभानु
नंदयहांवासवीकोरारविरविजमिटायोहै ॥ ७५ ॥ ॥ दोहा
॥ ॥ राजपुत्रहानिपंचशत उभयसहसरथवार ॥ हतेकरन
गजद्वैसहस एकलक्षपदचार ॥ ७६ ॥ कीयोसल्यसेनापती जय
आसासुततोर ॥ फिरकहिहुंलरिवेहूंजथा जुद्धबनेगोघोर
॥ ७७ ॥ मरेभीष्मद्रोनहुमरे कट्योकरनबलआन ॥ पांडुनजी
तहिसल्यअब आसानृपबलवान ॥ ७८ ॥ उतेएकअक्षौहि
नी तेरेसुतकीतीन ॥ रहीसल्यकेजुद्धमें सोसबव्हैहैलीन
॥ ७९ ॥ मिलेराजसूजज्ञमे धर्मपुत्रकेपास ॥ तितेदेसकेतो
रमत भयेरुव्हैहैनास ॥ ८० ॥ ॥ इतिश्रीपांडवयशोंदु
चंद्रिकाकर्णपर्वणिचतुर्दशमयूखः ॥ १४ ॥ ॥ छ ॥
॥ ॥ श्रीगोपालकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥ ॥ ॥

अथशल्यपर्वप्रारंभः

श्रीगणेशायनमः॥ ॥अथसल्यपर्वप्रारंभः॥ ॥दोहा॥ ॥संजयऔरयुयुत्सुदोउ आयेनृपकूलेन॥त्रियनजुक्त कुरुखेतहित बडीबधाईदेन॥१॥ ॥संजय॥ ॥कबित्त॥ ॥भीमकोंदियोहो विषतादिनवयोहो बीजलाखग्रहभयेताकोअंकुरलखायोहै॥ द्यूतक्रीडाकालविसतारपायबडोभयोद्रोपदीहरनभयेमंजरीतेंछायोहै॥ मछगायघेरीजवैपुष्पफलभारभयोतेनेंहीकुमंत्रजलसिंचिकेबढायोहै॥ विदुरकेवचनकुठारतेंनकट्योवृक्षवाकोफलपाकोभूपतेरीभेटआयोहै॥२॥ ॥दोहा॥ ॥यूंसुनिनृपमूर्छितभयो खाईहृदयदरार॥ हायहायरणवाससब कहिकरिउठीपुकार॥३॥ मूर्छाजागीनृपतकी ढरतअंशुदोउनेत्र॥ सीघ्रगमनरथचाढिसकल चलेतन्हांकुरुक्षेत्र॥४॥ संजयअरुधृतराष्ट्रभये एकहिरथआरोह॥पूछतपथबिचजुद्धकी बातनृपतजुतमोह॥५॥ ॥पद्धरी॥ ॥ज्यूंभईकथाजुधविषमभाय॥ सबकहततथासंजयसुनाय॥ मद्रेसभयोसेनपमहीप॥सबव्यूहजुक्ततवसुतसमीप॥ फिरहोनलगोसंग्रामभूप॥ अरिरहेस्नूरजितुतितअनूप॥ सुसरमावधभोनकुलहाथ॥ पुनिहतीताहिसबसैन्यपाथ॥ द्वादससुततेरेसलसमीप॥ मारेसुभीमरनबिचमहीप॥ सहदेवहत्योतबसालभद्र॥ क्षयबीजप्रवर्तकसकुनिक्रुद्ध॥ मुहपकरिलियोसातिकीसहास॥ करिक्रपाछुडायोवेदव्यास॥ जुधिष्ठिरशक्ति

१ संजय धृतराष्ट्रसे कहते हैं कि यह तुम्हारे वंशनाशके वृक्षबीज वहे जो भीमको विष दियो औ लाखाग्रह उसका अंकुर द्यूतक्रीडा विस्तार द्रुपदीहरण कली मच्छगाय घेरी सो फूल फल तुह्मारा कुमंत्र जलसे वडा इसवास्ते इसका फल तुमको मिला.

लीहृदयबीच ॥ मद्रेसगिर्‍योबसिदुसहमीच ॥ करपदपसारि अधवदनहोय ॥ कामीत्रियलपटे जथाकोय ॥ ६ ॥ ॥
नरतेंअष्टादससहस धर्मसेनबिचओर ॥ कृतवर्माद्रोणेय कृप तीनमहारथतोर ॥ ७ ॥ सल्यमरेतेंतोरसुत निद्रातेंअकुलाय ॥ जलस्तंभनकेमंत्रतें जलविचसोयोजाय ॥ ८ ॥ भीमसेनकेवधिकजे गयेसिकारहिलेन ॥ तजेमृतकम्रगकुंडपें दई वधाईऐन ॥ ९ ॥ सोसुनसैन्यतयारव्है गईजहांकुरुभूप ॥ धर्मराजकटुवादकहि छेड्योकालस्वरूप ॥ १० ॥ धिकदुरयोधनतोरमत अपजसकोडरनाहीं ॥ करिसारेकुलकोकदन मिलिसोयोजलमाहीं ॥ ११ ॥ कृष्ण० ॥ मैंकेसोरनछोरहूं कहतोतूंकुराज ॥ भजिजलबिचभयभीमके आयछिप्योक्यूंआज ॥ १२ ॥ ॥ सुयोधन० ॥ ॥ सोरठो ॥ ॥ नित तुमकपटनिवास दुरयोधननिरकपटदिल ॥ सबकहसीस्यावास अपजसहरहरसीआपरो ॥ १३ ॥ ॥ भीम० ॥
॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ कुलकोविनासकरि जलकोनिवासकीनो भीमकोनत्रासओरलाजनेकआईना ॥ भीसमसेद्रोनसेकर्नसेंमरायबेठोदुसासनदसादेखितोहूग्लानपाईना ॥ भीमकहेकहतोतूंअकेलोमिटायदेहूपोरसताकहांगईकबहूदिखाईना ॥ करीलपराईतेंतोसबेविसराईमैंतोद्रोपदीपिराईताकोअबलोंसिराईना ॥ १४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कोपिद्रुपदकुमारत्ते ऊरनहोऊंआज ॥ लैजीयतोसेंदुष्टको देंअग्रजकूंराज ॥ १५ ॥ सुयोधन० ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ द्रोनकर्नसोकहीतेमोकोंनींदलागीनाहीतीनद्योसभयेहोनहारयूंविचारेगो ॥ एकजामसोऊतोनैंश्रमतेनिवर्तहोऊंसुयोधनतातेंनीरसज्याचितधारेगो ॥ कुसमेजगावोसदाऐसेईअधर्मकात्रिअकेलोहैतोउनेकतु

मतैंनहारिगो ॥ चूकजैहैकसेभयेएकठेसेभांडेनपेठूकभयोल दुतोउभूकफकरिडारेगो ॥१६॥ ॥जु०॥ ॥दोहा॥ ॥कह्यो जुधिष्ठिरनृपतसुनि अबकुअर्धभूलेहु ॥ अंधमातपितुदुखित कूं संततिकोसुखदेहु ॥१७॥ ॥कबित्त॥ ॥गदाधारे कंधपेवकारतमदांधनृपभीमआदिसुनियेविचारकहूपनमें ॥ कैतोसुहिमारकेअजातसत्रुराजकरोकेसंधारतुमकूंनिवास करूंवनमें ॥ मेरीतोअरवंडआज्ञारहीछत्रधारीनपेदीननरना- रिनपेंभावेनाहींमनमें ॥त्यूंहीजुधजूटपर्योफूटपर्योजंघदेस नाहीहटछूटपर्योतूटपर्योरनमें ॥१८॥ ॥दोहा॥ ॥ भीमसिखायेकृष्णके वामहिजंघप्रहार ॥ कर्योगदाकोवहप र्यो कुरुकुलभूषनभार ॥१९॥ ॥कबित्त॥ ॥ का लीकोसोचक्रकेफनालीकोसोफूलकारलोचनकपालीकेकपा लकेसीहैउदोति ॥ आयुधसुरेसकेसोमानहुप्रलैकोभानुकोप कोउफानकिधोंमीचहुकीमानुसोति ॥सुयोधनदुसासनदुर्मुख दुसहगनदेखोदोगदारूपीयेदूनिहूतेदूनिहोति ॥जेठज्वालझाल हैकीजीहजमराजकीसीजहारहलाहलकेभीमकीगदाकीजोति ॥२०॥दोहा॥ ॥ऐसीगदाप्रहारतें भयोतोरसुतनास ॥भीम नतोसुततैंमर्यो रक्षककृष्णप्रकास ॥२१॥ ॥कबित्त॥ ॥ चामीकरकोससस्त्रवस्त्रनकेकोसओररत्ननकेकोसएकएकतेन चीनेहैं ॥देसदेससंभवतुरंगरंगकेजेपतीहैविहंगसंगप्रेरकअधी नेहैं ॥ओरहूंअनेकराजवेभवसराष्ट्रजेतेकाजधृतराष्ट्रकनेशत्रु नतेंछीनेहैं ॥ महाबलीअर्जुनकोअग्रजविपणकोरगदाकोप्र- हारएकदेसभारीलीनेहैं ॥२१॥ त्रिभुवीकोइंद्रजेसेत्रिपुरकूंरुद्र तैसेमधुकोउपेंद्रनीकेमूलहीमिटायकें ॥ नागकूंखगेंद्रजेसे गज- कोम्रगेंद्रतेसेकुंभरामचंद्रजुतरावनपचायकें ॥मेघकूंफणींद्र

महाकाली दैत्येंद्रकूं ज्यूं हूं हूं कौंकपींद्रत्योंहि पौरसदवायके ॥ कौरवेंद्र धायके उठाय के महान गदा प्रथानंद ढाढो यो नरेंद्र विजे पायके ॥ २२ ॥ अरनी द्रुपदजाइ कोप भीमको सु आग जजत युधिष्ठिर सभार स्यांगली नेहै ॥ होता है किरीटी धनुस स्त्र बोज्या सब्द स्वाहा साकल्य हैबी र आज्य वीररस भीने हैं ॥ सुयोधन यज्ञपसु कुरुदेस अग्निकुंड पूरणाहुति में गदा ही तें अंग छीने हैं ॥ धारी प्रथा कूब कीसु ऐसे जग्य कारी पुत्र केते भुवचारी सुरलोकचारी कीने हैं ॥ २३ ॥ अग्नीध अभिमन है वा सुतनय उदगाथा कपि की ध्वजाको जहां यूपकरि राख्यो है ॥ धृष्टद्युम्न चतुरानन अध्वर्यु सातकी है गाथा है सिखंडी वैरलेन अभिलाख्यो है ॥ आहुती वदी के बीच कर्न द्रोन भीसम औ रजयद्रथ से होमे त्रिलोक जस भाख्यो है ॥ जज्ञ रूप देह धरे होता के समीप बैठा सेना सोमवल्ली घोटि विजै सुधा चाख्यो है ॥ २४ ॥ गदाभंग होयके परे कूं धर्मराज कहै वातें सत्रुताई की उठाई छानिछानी तें ॥ माता पिता भीष्म द्रोन कृष्ण विदुरादिक नैनी के समझायो तामें एक हू न मानी तें ॥ मेरी ही अनीत आज्ञा सबपे रहैगी वनी कोन ऐसो मोहि को मिटावे ऐसी जानी तें ॥ कुरुराजधानी कूं न सोच तसुयोधन में केती राजधानी हाय कीनी धूरधानी तें ॥ २५ ॥ ॥

दोहा ॥ ॥ दुरयोधनके सिबर सब करि आज्ञा आधीन ॥ उत्तरे रथतें विजय हरि सीघ्र भयो रथ क्षीन ॥ २६ ॥ प्रथम उतार्‍यो पार्थ कूं पुनि हरि उतरे आप ॥ भयो भस्म रथ अस्त्रतें भीसम द्रोन प्रताप ॥ २७ ॥ ॥ छंद पधरी ॥ ॥ गो सिबर बीच उठि धर्मराज ॥ सुत द्रोन आय सुत तो रकाज ॥ लखि भूपदसा चित विकल छिप्र ॥ किय सत्रु हनन संकल्प विप्र ॥ कृतवर्मा मातुलजुत्त जाय ॥ त्रिहु छोरे रथ निग्रोध पाय ॥ कछु करे सयन जो लगे नैन ॥ श्रम समर मिटे तन न होय चैन ॥ यक आय घूक तहां निसा-

चार॥ सबकाकनकौंकीनौसंहार ॥ गुरगन्यौताहिअरिनासका
ज॥ मातुलप्रतिबाल्योविप्रराज॥ पितुबयरअौरनृपबयरदोय॥
सिरधरेमरनमैंभारसोय॥ निद्रानलगतआवतनिसास॥ तु-
मचलहुकरहुनिससत्रुनास॥२८॥ ॥कृष्ण०॥ ॥ दो-
हा॥ ॥करिवोजुक्तनविप्रकूं हाथसस्त्रगहिजुद्ध॥ जो
जुधकरिवोहोयतोउ स्वामीढिगअविरुद्ध॥२९॥ विनस्वा-
मीजोकियचये सावधानअरिपाय॥ करहु प्रातजुधहोयहै
हमदोऊतोरसहाय॥३०॥ तूंहिजनृपरिनकटिपर्यौ नि-
द्रागतिअरिदंद॥ तोहिअधर्मतैंनाघटै करिवोसत्रुनिकंद॥
॥३१॥ ॥अश्वत्था०॥ ॥भीष्मद्रोनअरुकर्ननृप छलिक
रिमारेचार॥ तेअधर्मतैंनाडरें वरजतकोनप्रकार॥३२॥
॥ ॥संजय०॥ ॥पांचपांडुस्कतसातकी कृष्णगयेलेदूर
॥देवीपूजाव्याजकरी जानिद्रोनस्कतक्रूर॥३३॥ सत्रुहतन
द्रोणीचल्यौ निसनिसीथसुनिभूप॥ तिहिप्रतिरोधनहरिध
र्यो विस्वविराटस्वरूप॥३४॥ धरेरूपवैराटहरि खरेस्क-
डेरनबीच॥ तिनपैंकरेप्रहारसो डरैंकदालखिमीच॥३५॥
द्रोनीकेआयुधसकल भयेविराटतनलीन॥ कर्यौहोमनिज
मासकौ रुद्रनिमतक्वैदीन॥३६॥ दियोखड्गहरिमिटगयो
वहेविराटस्वरूप॥ हत्योजायपितुकौहतक पसूबधज्यूं भूप
॥३७॥ पांचद्रौपदीकेसुवन नानाआयुधधारि॥ भिरेसुमा
रेखड्गतैं विप्रबकारिबकारि॥३८॥ द्रोपदपुत्रदुहित्रसब मा
रेसैन्यसहेत॥ बचेसुक्रनवर्माहते अरुमातुलकरिचेत॥३९॥
॥ ॥कवित्त॥ ॥ मातुलसिखापनकुद्रोनीनाहिकीनो-
कानकीनोसल्यवाक्यपूर्वपिताकेउचारेको॥ उर्णपनोपिता-
कोरुभीष्मकोसुयोधनकोकीनोसोदिखानोनीकेदृढअोरबारे

को ॥ जाकोदेखिकिरीटीहूविकलभयोहैवीरताकोयोप्रहारेहै वि
राटरूपधारेको ॥ जमकीजमातजैसीजिमाईजटीससैन्यद्रोन
कौंतीसराकीनोहाथमारेको ॥ ४० ॥ सारदूतकहैभोजवंसअव
तंसदेखिपितापितासत्रुकेमिटानहारछेटाको ॥ द्रोनीकेप्रहारतें
नसोमकसुनैगेबचेलावाज्यूनबच्योसुन्योवाजतेऊपेटाको ॥ नि
सावीचजाकोतेजप्रलैभानकेसमानउबाहैविकोसषड्गहाटक
कलपेटाको ॥ मारतचपेटामेदाचहैवंसद्रोपदिकोरवेटाकरैघेटा
ढाडोबेटावमनेटाको ॥ ४१ ॥ मातुलकीकानकूनमानीमन मा
न्योकीयोकरउरनेत्रबीचवीररसछायोहै ॥ ताहीछिनजोतिअ
स्वअायुधसंभारिबैठोसांभकौरिझायसांभरूपदरसायोहै ॥ वा
हीनिसाबीचनासकीनोचतुरंगनीकोधन्यकपीकूरवजाकेबीच-
वीरजायोहै ॥ द्रोनअापकारकेविषेस्योकुलद्रोपदकोद्रोनीउपका
रकेविजोगकूंमिटायोहै ॥ ४२ ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥ पांचालास्तु
गताःस्वर्गेद्रोणेनबाहुशालिना ॥ अवशेषाहतेराज्ञी द्रौणिना-
योजितापुनः ॥ ४३ ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ रुक्योमनपापसेन
द्रोपदीबिलापमेनमातुलकीसीरबसुनैघोरनर्कतापमें ॥ सत्रुमा
रिसातसेससुनायेसुयोधनकोदिखायोसवायोफेरबापमेंरुआ
पमें ॥ ऐसीरीससांपमेनप्रलैकेप्रतापमेनजैसीरीसद्रोनीकीवास
त्रुकेमिलापमें ॥ आधिरातिसोयेथेमिटायदियेपिछिलीमेंआ-
योचुपचापमेंत्यूंगयोचुपचापमें ॥ ४४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ बाल
वृद्धकहत्रियनविन सबहिनडारेमारि ॥ रह्योनअष्टादससह
सबिच कोइउठेपुकार ॥ ४५ ॥ ॥ सवैया ॥ ॥ संज
यबोलतभूपअचक्षुतेंहोयसुतोसबदेवअधीनो ॥ कोनको-
कोनकोसोचकरेसबछत्रिनकोगनजुद्धमेंछीनो ॥ द्रोनसेद्रोनी
सेहोतेदसेकनौंहोननतोसुतकोबलहीनो ॥ बोयकेलूनिगोषेत

पितास्यूंहिपूत निसामेसलाभलकीनी ॥ ४६ ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ पितुकेमरकोसोक नाहिनअलोकसोकस्वामीहूंम रैतेंस्वामिधर्मइकतारीपें ॥ भारद्वाजवंसअवतंसबसद्रोपदको छेदकेंचढाईध्वजाजुधकथासारीपें ॥ जनोहोतोऐसोजनोजोब नपृथानरवोवंतिरोपुत्रदेखिकेपुकारिकहूंनारीपें ॥ गांधारीकहत कुंपीमेरोसतपुत्रधारीवारिचारिडारूकूरयएकपुत्रवारीपें ॥ ४७ ॥ ॥ संजय० ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ द्रोणीमुखरिपुअहसु नि गयेसुयोधनपान ॥ विप्रसस्त्रपरित्यागकरि गोव्यासाश्र मथान ॥ ४८ ॥ हरिलैआए पांडवनसिवर नससमयप्रभात ॥ द्रु पदाकरतविलापजुत हायपुत्रहाभ्रात ॥ ४९ ॥ सबनिसिबीती वातसुनि विजयप्रतज्ञाकीन ॥ लादेहूंशिरसत्रुको मतिरोवे अतिदीन ॥ ५० ॥ वाकेसिरधरपांवतुम सूतककरियोस्नान ॥ फिरबंधुनकूंसुतनकूं देहूंजलांजुलिदान ॥ ५१ ॥ ॥ छंदपधरी ॥ ॥ यूंकहिरुकियोरथजुक्तगोन ॥ प्रतव्यासाश्र- मनरगतिसुपोन ॥ स्यंदनलिखिद्रोनीविगतसस्त्र ॥ उतप्रेर्योन रपरब्रह्मअस्त्र ॥ लखिअस्त्रबंसपांडवनिकंद ॥ गर्भकीकरीर- क्षागोविंद ॥ प्रतिरोधकरनसोइअस्त्रपाथ ॥ प्रेर्योसुभिरेदो उएकसाथ ॥ ५२ ॥ ॥ व्या० ॥ ॥ पार्थविधिअस्त्रआक र्षिपुत्र ॥ अथचाकिहोयजगप्रलययत्र ॥ प्रेर्योयहद्रोनी जुतप्रमाद ॥ आकर्षणयाकूंनाहींयाद ॥ लखिउभयअस्त्र जगप्रलयकार ॥ सुनिव्यासवचनकीनेसंहार ॥ सुतद्रोनप करिरथपेंबिठाय ॥ जुधिष्ठिरअग्रलेकियोजाय ॥ ५३ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ कृष्णभीमदोनूंकहत आततारइनहिविप्र ॥ करतदयादेखतकहा हतहुदुष्टकूंक्षिप्र ॥ ५४ ॥ कह्योजुधि ष्ठिरद्रोपदी यहहमतेंनहिहोय ॥ द्विजवधममसुतनामि-

लै फहेकूपीकारोय ॥ ५५ ॥ चूडामणिजुतहरिसखा विज
यदेहुछुटकाइ ॥ विनासस्थयहविप्रवध निगमकहतविधि
न्याय ॥ ५६ ॥ कह्योजुधिष्ठिरत्यूंकियो शिखाछेदिभुवडा
री ॥ आपैंपगधरीनरकहत करहुस्नानअबनारी ॥ ५७ ॥
॥ ॥ इतिधृतराष्ट्रसंजयसंवाद ॥ ॥ वैशंपायन०
॥ ॥ जुद्धभूमिविचनृपतजब आयोत्रियनसमेत ॥ गां
धारीप्रतिकहतमिल कृष्णव्यासजुतहेत ॥ ५८ ॥ तूंजानत
काकहुहिंहम नहींजुधिष्ठिरदोस ॥ कस्योवंसकुरुकोकद
न एकसुयोधनरोस ॥ ५९ ॥ अबतोहैंतवपुत्रये भूलिनदेऊ
सराप ॥ परतजुधिष्ठिरपांवतव हृदयलगावहुआप ॥ ६० ॥
पायपरतकरनरवनपर परीमातुकीदृष्ट ॥ चखबधपटअध
छिद्रतें भयेकरजदसभ्रष्ट ॥ ६१ ॥ ॥ गांधारी ॥ ॥ श्री
कृष्णप्रति ॥ ॥ कठिनजंघममपुत्रकी छलहिडराईतोरि
॥ ईश्वरतादरसातफिर स्यालसिंघपरछोरि ॥ ६२ ॥ जाकेपद
तररहतथे छत्रधारिनकेसीस ॥ पलचारीपदतेंमलत ताकोसी
सअनीस ॥ ६३ ॥ ॥ जुधिष्ठिरप्रति ॥ ॥ कबित्त ॥ ॥ दे
सनमेंजीवकामिटानीसइरंध्रिनकीचूरिगरबापुरेनिकारहैक्यूं
टोटेकूं ॥ गंधीरंगरेजयेविचारेकांपैंक हैंदुखसुन्योग्रामग्राममैं
संग्रामकामखोटेकूं ॥ वारवारदीनतापुकारीत्रियाऊंडबीचगां
धारीकहतमरेदेखिछोटेमोटेकूं ॥ जुधिष्ठिरएतीभर्तवासिनकी
पुत्रवधूकरनेछुवेगीनाहींफेरकजरोटेकूं ॥ ६४ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥
धनुषअकतश्रमपाथको दोउहातकहिदेत ॥ त्यूंकुरुक्षेत्रबतात
है इतेनृपनकोहेतु ॥ प्रथअंधतेरोपिता चखबंधनममटेक ॥ ति
नअंधनकेलकुटिवा भीमनराखीएक ॥ ६५ ॥ हुतीप्रतज्ञाभी
मके सतसुतदियेमिटाय ॥ एकसुताममसोउहती अर्जुनकु

मतिअधाय ॥ ६६ ॥ ॥ अर्जुन ॥ ॥ प्रथमहरनकिय-द्रोपदी दुतियहत्योसुतमोर ॥ तातैंभगनीपतिहतन कियोसं कलपघोर ॥ ६७ ॥ ॥ गांधारी ॥ ॥ पतिसिरधारेगोदमें लखिसुतमच्छकुमार ॥ रक्तलिसमुखकंचनकूं पौंछति कहतपुकारि ॥ ६८ ॥ क्यूंत्यागीअपराधका किनजेहूंकछुबोलि ॥ मैंकांताप्राणेसतूं आंतरंगतिकिखोल ॥ ६९ ॥ ॥ युधिष्ठि० ॥ ॥ मातमेंराखीछिमा कुलहिबचावनकाज ॥ दुरजोधनकलिरूपतें अधमभयोमेंआज ॥ ७० ॥ ॥ धृतरा० ॥ ॥ अबमेरेसुतपांचए तिनमेंअतिबलभीय ॥ भीममिलावकूमोरतें ह्वैसीतलममजीय ॥ ७१ ॥ मिलतवृकोदरबरजिहरि पुतराधातुबनाय ॥ मिलबायोचूरनकियो नृपहिपर्योमुरछाय ॥ ७२ ॥ यहभीमअतिदुखतहौं मारेसतसुतसोहि ॥ क्षुभितनीचमें कुमतिकरि तिनाहितमार्योतोहि ॥ ७३ ॥ ॥ संजय ॥ ॥ अबनृपमारेभायके मिलेकितवसुतआय ॥ अयमयहरिपुतरार्ख्यो भीमहिलियोबचाय ॥ ७४ ॥ ॥ धृतराष्ट्र ॥ ॥ कृपाकरीसमदुखितपें ईस्वरसुमतिअगाध ॥ राख्योछलकरिभीमकों टार्योमोहिअपराध ॥ ७५ ॥ कियोसबनकोदाहक्रम धर्मपुत्रजुतभ्रात ॥ प्रथाकह्योअबकर्नकूं देहुजलांजलितात ॥ ७६ ॥ क्षेत्रजअग्रजपांडुसुत तेरोबंधवसोय ॥ मातवचनसुनि विवसव्है गिर्योजुधिष्ठिररोय ॥ ७७ ॥ प्रथमसोकभूल्योसबे सोकनयोसुनिसुद्ध ॥ पहलेमोकूंकहततो भूलिनकरतोजुद्ध ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ छंदत्रोटक ॥ ॥ लखिकैनृपवंसविनासक-नयो ॥ जलअंजुलिदेतविहालभयो ॥ हरिव्यासदुहूंसमझायकह्यो ॥ सुनिज्ञानहृदेनहिनेकगह्यो ॥ समझायनझायथहैहमपें ॥ मिलित्यायेसबैतिहिभीसमपें ॥ नृपबोलतभीसमतेंबति

यां ॥ निरवेदतेजातफटीछतियां ॥ तुमदेमुखग्राससुबोधदिये ॥
तीनपैंहमनीचप्रहारकिये ॥ जिनद्रोनसिखायदियेनरकूं ॥ अब
सेवनअस्त्ररखेघरकू ॥ तिनकूंरनमेंहममारिलियो ॥ जबमानतहूं-
धिकमोरजियो ॥ जिनस्वादकछुनलियेजगके ॥ सबबालसरेमतमें
ठगके ॥ जिनकीअबलाविधवाघरते ॥ तिनकूंननिहारिसकूंडरतें ॥
विनजानिरवीसुतभ्रातहन्यों ॥ सबतेनिजसत्रुविसेसगिन्यों ॥
सबहीकुलकोहमनासकियों ॥ यन्नवातनतेंअकुलातहियो ॥ कि
हिरीतपितामहराजकरूं ॥ यहपापतेपारकदाउतरूं ॥ इतनीकह
पायनिबीचिगिर्यो ॥ उठवायकेभीसमअंकभर्यो ॥ सरसेजपैबो
धपरैसुतको ॥ मुख्यथापिवेदांतहिकेमतकूं ॥ सबआपकीआगि
तेंआपजरे ॥ किहिरीततुंपुत्रविलापकरे ॥ कुनमारतकोनमरें
कबहू ॥ सुधरूपअखंडलख्योसबहू ॥ करताहममानतमूढ
किते ॥ जगबीचबंधेनरजानिजिते ॥ करताभुकताप्रकृतिकहि
ये ॥ निजजानिअलेपसदारहिये ॥ पतिअंगअलिंगतहेप्रमदा
॥ तिनतेंदुहितादोइभावजुदा ॥ गतिभावहिबंधरुमुक्तिगिनों
॥ सबपापरुपुन्यउभेसुपनों ॥ लिंगथूलरुकारनदेहित्रिहू ॥
भ्रमरूपवनीनहिंसत्यकहूं ॥ तनज्यूंवतेकर्मनिसत्यबने ॥ अस-
नामृगतोरनेकोपगिने ॥ सुनिभीसमचैनअज्ञानगयो ॥ मनु
भानुउदेतमनासभयो ॥ ७९ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ दिवसपि
चोतरसेजसर राखेभीसमप्रान ॥ माघशुक्लपक्षअष्टमी सु
रपुरकियोप्रयान ॥ ८० ॥ दाहकर्मकरिभीष्मको नृपतगयो-
पुरनाग ॥ सिंहासनबैठोसदय भईप्रजाबडभाग ॥ ८१ ॥ ॥
इतिश्रीपांडवयशेंदुचंद्रिकायांपंचदशमयूखः समाप्तः ॥ १५ ॥
॥ श्रीगोपालकृष्णार्पणमस्तु ॥
श्रीरस्तु.

श्रीगणेशायनमः ॥ ॥ सोरठा ॥ ॥ धृतराष्ट्रआदेस धरमपुत्रसिरपर धस्यो ॥ जथासुयोधनलेस कबहुआंगीकृत कस्यौ ॥ १ ॥ स्नानदानगजगाथमहि भोजनसबनसुहाय ॥ प्रथमकहैधृतराष्ट्रजब पीछेनृपतसहाय ॥ २ ॥ जोपदार्थहोवे निजर करिधृतराष्ट्रविभाग ॥ विदुरयुयुत्सआदिदे सबकूं देतस्कभाग ॥ ३ ॥ कैदजुधिष्ठिरको कियो देधृतराष्ट्रसुछोरि ॥ केदकियोधृतराष्ट्रको छोरीसकेनहिऔर ॥ ४ ॥ ॥ युधिष्ठिर० ॥ ॥ समरनपूर्वविरोधकरो करैपितातेंद्वेष ॥ सोमेरोअतिसत्रुहै बल्लभतदपिविसेस ॥ ५ ॥ भयोपरिक्षतकोजनम सबकुलकौस्करवदान ॥ देकौदिनधनद्विजनकों कस्यौभूपसनमान ॥ ६ ॥ कीनीविदुरप्रधानता नृपति पंडुकीवेर ॥ सोइयुयुत्सुनेकरी कृपायुधिष्ठिरहेरि ॥ ७ ॥

॥ ॥ छंदनाराच ॥ ॥ वितीतरात्रीतीनजामभूपमंजनंकरे ॥ पितांबरंस्कधारिफेरिदेवसेवविस्तरे ॥ जुहावअग्निहोत्रकूंरुगायविप्रपूजिके ॥ बुलायकेअमात्यवृंदलाभरवर्चबुझिके ॥ पितारुमातकूंप्रणामधारिकेसभाकरे ॥ प्रतापदेरिवसत्रुआयतापतेंजरैडरै ॥ सदेसकेविदेसकेकठीअमात्यआयके ॥ जथास्थितंसुमानदानजेचलंतपायके ॥ निहारिअस्त्रसालकूंरसोइथानआवना ॥ सहस्रअष्टऔअशीरिषीनकूंजिमावना ॥ सबंधुफेरजीमिभूपभूपवृंदसंजुतं ॥ करैविचारसास्त्रकोआरोगिपानअमृतं ॥ तृतीयजामपायकेलषंतसैन्यहाजरी ॥ करंतसस्त्रअस्त्रएकएकतेबराबरी ॥ प्रदोषसंधिसाधिकेकरंतरात्रिकोसभा ॥ लखातगाननृत्यतेंसुरेंद्रलोककीप्रभा ॥ करंतमंत्रद्वैघरीकियेसभाविसर्जनं ॥ प्रकासमंत्रहोतना विनासपल्लुतर्जनं ॥ वितीतडेढजामरात्रिक्लेद्वितीयभोजनं

॥समस्तअनर्थदेसके बचावको प्रयोजनं॥ यतेककाजनित्यहैंनि मित्तकाजऔरजे॥ अनेकदानहोमजापहोतसांझभोरजे॥ महारक्षैधनाढ्यपैंपुकारदीनकीभये॥ निबेरनीरषीरहोतराजद्वारपैंगये॥८॥ ॥दोहा॥ ॥अंधरेकुष्टीपांगरेजेकोउ बिनु आधार॥ तिनकूंल्यावनसातसत शिवकाफरतप्रचार॥९॥ ॥जिततितकीनोंधर्मसुत वापीकूपतडाग॥ तथाप्रजाराजा तथा बहुदेवालयबाग॥१०॥ ॥कबित्त॥ ॥सत्रुकोउ श्रापि पिच्छोश्रापिबेमेंव्रतभंगदीसतजुधिष्टिरमेंग्रथनमेंकंकता॥ कैदलोककुलकीत्यूंवेदकीमृजादहीमेंस्वैरगतीमारूत मेंचातिकमेंरंकता॥ इतिग्रंथपूर्णतामेंसंचरलिखैयालिखे-चोरिइतहासनमेंहोरीमेंनिसंकता॥ चंद्रमामेकाहकालराहूतेससंकताल्यूंदुनियामेंवंकताक्षेपूत्यूमेंकलंकता॥११॥ दोहा॥ ॥करयोराजयहरीतनृप अस्वमेधकियेतीन॥ अवभृथ भोमरचनतिय कौउछवहोतनवीन॥१२॥ पांचभ्रातश्रीकृष्णजुत भोजनकरतप्रभात॥ प्रथाद्रौपदीउभयदिग चलीपूर्वकीबात॥१३॥ विपतिसमयकोभावसब अपनीमतिअनुरूप॥ कहतस्तुतीकरिकृष्णकी सुनतयुधिष्टिरभूप॥१४॥ ॥कबित्त॥ ॥अवभृथस्नानअस्वमेधभयेकुंताकहेजानतीमेरोकवैहोयहैं॥ गुरजनपुरकीआमात्यअमरावनकीत्रियमिलिऐहैमेरीकृपादीठजोयहैं॥ तिनकीकरूंगीसतकारकहाभांतिभांतिवस्त्रसुगंधदासीलियेंतोलतोयहैं॥ कृष्णकेप्रतापअबैतोहिआवआदरमेंबीततदिवसनिसासोवेकवसोयहैं॥१५॥ द्रौपदीकहतमेरोवांछितसदैवहतोकदानाभांतिनकेव्यंजनबनाउंगी॥ छहुरसभक्षभोज्यलेह्यचोस्यपाकपानरिषीनृपपंक्तिजुतनृपकूंजिमाउंगी॥ करिहैंप्रसंसामेरीसुनिकेश्रवनताहि

विप्रनकीआपिषातेअतिहिअघाऊंगी ॥ कृष्णकेप्रसादअबम हानसोदहलवीचसाचोंनित्यनेमअवकासकवपाऊंगी ॥१५॥ भीमसेनकहेमेरेहतीअभिलाषाऐसीगांधारीकेपूतकदागदानें महारिहुं ॥ औरहूअनेकताकेहोयहैसहायनृपमसकासमानतें उजुदेजुदेमारिहुं ॥ सबैभूमिराजकुरुवंसिनकोंछत्रताहिजुधि ष्ठिरछिमासीलताकेसिरधारिहुं ॥ युद्धसिंधुग्राहभीरजुक्तसोत्त र्यौंमेनीकेकृष्णकेप्रतापताकोंकाजसुपुकारिहुं ॥१६॥ अर्जु नकहतमोकूंरहतीबडीसीचाहिभूपनकेपुत्रदेसदेसनतेंआय हैं ॥ अस्त्रसस्त्रधनुकोप्रतापमोपैदेषिहैतेआपकोपराक्रमसोह मकोदिखायहैं ॥ धनुविद्याचारभांतिसीखिहैहमारेपासऐसो दिनव्हैहैकबेसज्जनकूंभायहैं ॥ तिन्हेशिक्षादेतेमोकूंनित्यकूंस मयनाहिकृष्णकोकहायफरेक्यूंनसिद्धिपायहैं ॥१७॥ नकुल कहेविचारआपदाकिबारमेरोजाकेद्वारएकअस्वधन्यछत्रीजातसो ॥ दोयकानचारपावएकपुछऐसोहयमेरेहोयअहाभाग्यमानीब डीबातसो ॥ जाकेअपलछनसुलछनविचार्योकरोंषानपानसेवा कोविधानसांझप्रातसो ॥ कृष्णकीकृपाप्रसंगलाषूहैतरंगजुदेअंग रंगचीन्हनहीआयूंकूंबिनातसों ॥१८॥ कहेसहदेवअभिप्रायसबै आपदाकोजानतोमैंधन्यजाकूंविप्रनकोसंगहै ॥ अष्टहीनिदानओ उपायषटवेत्तावेद्यराशिओनक्षत्रग्रहज्योतिषकेअंगहै ॥ चारवेद षटशास्त्रकाव्यकोसव्याकरनसाहित्यसंगीतध्वनीलछनारुव्यं गहैं ॥ कृष्णकेप्रसादऐसीविद्याजुतब्रह्मवृंदआवतअनेकरहेनि साथोंसरंगहै ॥१९॥ ॥छंदपधरी॥ ॥जुधिष्ठिरकहत जदुकुलउद्योत ॥ हरिस्तुतिकहातुमसद्रसहोत ॥ महिभईभार पीडायमान ॥ अवतारलियोयदुवंसआन ॥ पूतनासकटअरुत्र णव्रत ॥ केसीखरबकअजगरकुकृत ॥वछासुरप्रलंबासुरसं

घारि ॥ मघवाविधिकालियमानमारि ॥ कंसदंतवक्रअगजरक
रूर ॥ दलिकालजवनकियभारदूर ॥ नर्कासुरमागधआदिनी
च ॥ वार्कीअष्टादसदिवसवीच ॥ सबभूमिभारकीनोसंघार
॥ पुनिसेस्वसोइकरहोप्रहार ॥ कृष्णममविघ्नटारेकृपाल ॥
गिनतेनपारपाऊंगुपाल ॥ भीमकोंदियोविषसत्रुभाव ॥ वि
ष्णुकोकरततुमाविनबचाव ॥ वन्हिकेसदनसबजरतवार ॥
कोविदुररूपउपदेसकार ॥ माह्निनृपनजीतिमागधमदंध ॥ सब
पासलियोकरजरासंध ॥ भीष्मतेकुरुयदुतवप्रभाव ॥ तिनवि
गरसवनकूंदियोताव ॥ अजुतगजप्राणसोईनृपअत्रास ॥ न
रहरिप्रतापकियभीमनास ॥ द्रौपदीसभाविचवस्त्रएक ॥ ऐं
चतहिथक्योछलकरिअनेक ॥ दुरवासाआयोआपदेन ॥ ल
षिकुसमयमेरोधर्मलेन ॥ लवकृपाप्रसन्नकेंदेअसीस ॥ प्रेर
कतेंकीनीउलटरीस ॥ प्रथमदियकर्नमनकोपप्रेरि ॥ गनिभी
ष्मद्वेषजिनसस्त्रगेरि ॥ भटकर्नद्रोनभीसमअभीत ॥ एकठे
लरतह्लोतेअजीत ॥ भीष्मकोपतनरनअसंभाव ॥ आपविन
कठिनवनतोउपाव ॥ वैष्णवसुअस्त्रभगदत्तबकारि ॥ मोरव्यो
सुआपऊेल्योमुरारि ॥ अर्जुनबचायजयद्रथअसंत ॥ उनर
थिनबीचमार्‌योअनंत ॥ ताकोंसिरताकेपितुसकास ॥ अंजुल
गतिकरिकियउभयनास ॥ वासवीशक्तिअर्जुनबचाय ॥ किय
मोघहिडुंबासुतमराय ॥ द्रोनकोकोनकरतोनिपात ॥ गुरुजा
ननअर्जुनकरतघात ॥ आपकरिबाह्लोतछलअनायास ॥ द्रुप
दसुतहाथकीनोविनास ॥ द्रोनीनारायनअस्त्रडारि ॥ ममसे
न्यजीततोसबनमारि ॥ आपसेंह्लोयरक्षकउदार ॥ विस्मयन
नासपावेविकार ॥ अर्जुनमोह्निमारनमरनधारि ॥ उनसमयकु
ह्लनलीनेउचारि ॥ बध्योजबकरनकोसरपवान ॥ पटकिरथ-

सरवाकेरखेप्रान ॥ भीमकूंगदाछलकहिसुभाय ॥ सुयोधनमा
रिकीनोसहाय ॥ निसकियोद्रोनसुतकर्मनीच ॥ पांचहिकोले
गयोविपनबीच ॥ सुबलजातहिनीतिसुनाय ॥ विषममसन्आ
पतेलियेबचाय ॥ भीमतेमिलनजबपिताभाखि ॥ लोहमयकि-
योतनलियोराखि ॥ ब्रह्मास्त्रतेजतेंगर्भबाल ॥ करचक्रपेरिराख्यो
कपाल ॥ पूर्णताजिज्ञनिरविघ्नपाय ॥ श्रीकृष्णआयहोतांसहाय
॥ दिनप्रतिजिहपूजतअसुरदेव ॥ सोईकरतआपममअनुजसेव ॥
दाससुखरासदीननदयाल ॥ करुनानिधानअघहरकृपाल ॥ री
झतेदेतसुरस्वर्गलोक ॥ आपतोपीजतोहुविष्णुओक ॥ ऐसोतजि
स्वामीचहतआनि ॥ सोहूपदरूपचोपदसमान ॥ भुगतिदुखमि
लेअघराजभोग ॥ जेकहारावरीस्तुतीजोग ॥ बहुनिंद्यकर्महमजु
तविकार ॥ कीर्तिलेकियेजगपवित्रकारि ॥ निजदोसकृष्णकी-
स्तुतिनिहोरि ॥ बंधुनतेंबोलतनृपबहोरि ॥ २० ॥ ॥ कवित्त ॥
॥ ॥ दादोकानीनपितागोलकहमकुंडजहें पांचपती एकत्रिया
एहूविपरीतहे ॥ पितामहबंधुविप्रमारेतुछलोभलागिमृ-
त्युलोकराजकाजअतिसेअनीतहे ॥ हमकोनपंक्तिदेछत्रीऐ
सेकर्मकारीतिनकोसकृजससुन्योमिटेनर्कभीतहे ॥ भयेराज
भागीदुखभागीतेकास्तुतिकरोंकहेंनृपकृष्णकीकृपालताकी
प्रीतहें ॥ २१ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ करीस्तुतीनृपधर्मकी करैपाठजो
कोय ॥ सबभारथकेपादको फलपावेनरसोय ॥ २२ ॥ ॥ श्री
कृष्ण० ॥ ॥ कवित्त ॥ ॥ दानकोनमानजाकोंमाननसया-
नहकोवंसकोनमानजाकूंदेखतथकातहूं ॥ दारापुत्रभ्रातमादिमे
रेकरिराखेकहातकोउपकारकरोंमनमेंसकातहूं ॥ जीवमात्रमेरो
रूपजानिसदापूजतहेंताकेपापहोयक्यूंजोहोयतोधकातहूं ॥
कृष्णचंद्रकहेतोसोंहोयजोअनन्यभक्तमेरोनेमताकेहाथवेचे

तेधिकातहूं ॥२३॥ ॥दोहा॥ ॥सीखमागिद्वारावती गये कृष्णनिजगेह ॥ दूरिनिकटिहरिरहततोउ नृपधनबढनसनेह ॥२४॥ कछुकभीमदुरवचनतें कछुकविदुरसुनिज्ञान ॥ भो धृतराष्ट्रविरागमय चाह्योविपिनप्रयान ॥२५॥ मांग्योनृपसुत धर्मतें आतुरव्है आदेस ॥ कहतजुधिष्ठिरदीनव्है विस्मयजुत्तविसेस ॥२६॥ सीखलेहितेंआपतें आपसीखकिहिपास ॥ लैंत पिताज्यूंकरतहीं हामकोपरमनिरास ॥२७॥ सुनिलपट्योगांधारिगर मूर्छितजथानरेस ॥ तबहीपितुकोधर्मसुत जान्यों दुरवतविसेस ॥२८॥ ॥व्यास०॥ ॥चौथेआश्रमतपकरैं सबैविपनसप्रीत ॥ हठनकरहुस्कतजानदे यहराजनकीरीत ॥२९॥ धर्मपितामहसीखसुनि तथाअस्तुकहिबैन ॥ कुलजुतपहुंचावेचल्यो दस्तअंशदोउनैंन ॥३०॥ त्रतीयमजलतेंसीखले भूपचल्योनिजगेह ॥ प्रथासंगगुरजनगह्यों तजिपुत्रनकोनेह ॥३१॥ ॥जुधि०॥ ॥तेरेसुखहितवंसको कस्योद्विजनजुतपात ॥ मातछांडिसुतराजश्री कहिकारनबनजात ॥३२॥ ॥ ॥प्रथा०॥ ॥गांधारीधृतराष्ट्रदोउ सासूससुरसमान ॥ यनकीसेवायनहितें करिहूंअर्धतपध्यान ॥३३॥ नृपतत्रियाजुतविदुरजुत संजयपृथासमेत ॥ तपहितविपननिवासकिय व्यासाश्रमजुतहेत ॥३४॥ त्रतियवर्षसुतधर्मतिन आयोदरसनलैन ॥ व्यासकृपादेखीसबन मरीसैन्यनिजनैन ॥३५॥ निकरिविदुरकीदेहतें धर्मराजकोअंस ॥ लीनजुधिष्ठिरमैंभयो सबदेखतारिखतंस ॥३६॥ गयोजुधिष्ठिरदेहपुनी एकवर्षउपरांत ॥ दागलग्योवनताहितें भयोमातुपितुअंत ॥३७॥ दीआज्ञाधृतराष्ट्रने संजयबद्रिनिकेत ॥ गयोबहुरितपकरनकूं आयुरहीयहहेत ॥३८॥ मिलेकृष्णतेंबहुतदिन भयेपार्थजिय

मरजादल॥५

जानिमीत॥पुर

॥छंदललित॥ ॥अखि

पहो॥निगमगानतेंपारतो

बुधिविरंचसेभूलिजातहै॥प्रबल

सदातेजआपतें॥रहतकालकूंभीतितापे

नदासतें॥अनुगमेजियोयाहुलासतें॥अवनद

जिये॥विरहनासहुगैललीजिये॥मिलिरपोसदासेज

कछुनमैंगिन्योलाभहानहू॥विषमतापरीजत्रजत्रही॥सु

ताकरीतत्रतत्रही॥चरनदासकूंयूंनछरिये॥कलिकलंकमेंनाहि

बोरये॥जदुनकोयहांनासहोयहै॥रहतजाप्रियाबालरोयहै॥न

यनदेखिकैंयाअभद्रकूं॥कहहुकाकहूंकोरचंद्रकूं॥विपतिऔरतो

सीसडारिये॥चरनसंगतेंनाहिटारिये॥४२॥ ॥दोहा॥ ॥सु

निविनतीयहपाथकी कृष्णकहीसमझाय॥पांचभ्रातगिरतुहिन

पैंदेहगारियोजाय॥४३॥भयोतुह्मारोजक्तविच कुलविनासअपवा

द॥यहसांतिअपवादकी करहुनऔरविषाद॥४४॥तूंतोमेरोरूपहै

मिलहैमोतेंआय॥लेगेफिरअवतारकछु ऐसोइकारनपाय॥४५

॥ छंदपधरी ॥सुनिचल्योपाथजदुतियलिवाय॥पथवीचलुटेर

मिलेआय॥उद्यमनकिरीटीफुस्योरंच॥व्हैगयेसस्त्रअस्त्रहिप्रपं

च॥लेगयेजदुनकीत्रियालटि॥परिपंथिबाणनसकेछूटि॥सुर